ओ३म्

स्त्री गीत संग्रह

भजन नं० ॥ १ ॥

दीजो प्रभुदान अपनी हमें भक्ती का ।

हम आये शरण तुम्हारी, तुम रक्षा करो हमारी,

होय सब का कल्याण ॥१॥

मत करो नाथ अब देरी, हो नष्ट अविद्या मेरी,

मिटे सारा अज्ञान ॥ २ ॥

भारत की दशा सुधारो, दुनिया के दुःख को टारो,

होय आनन्द महान ॥३॥

कहै वासुदेव कर जोरी, इक बिन्ती सुनियो मोरी,

न होने पावे हीन ॥४॥

भजन नं० ॥ २ ॥

रंग भीना म्हारा बनड़ा कैसारी हुशियार ।

गुरुकुल से पढ़ के आया, वेदोंकी पोथी चार ॥ १ ॥
ये पूनो कैसा चन्दा है, जग मग जोत अपार ॥२ ॥
शोभादे खड़ा अगाड़ी, दादा के दरबार ॥ ३ ॥
सुख भोगे पराई जाई, आयू देवे करतार ॥ ४ ॥
फैलावे धर्म्म जगत में, करदेगा देश सुधार ॥ ५ ॥
इस बनडेपर करें निछावर, भर कर मुतियन काथार ६
माई तेरा दूध सुफल हो, जनमा य राज कुमार ॥७ ॥
ये अपना धर्म निबाहवे, यश गावे संसार ॥ ८ ॥
मीठी वेदों की बाणी, मुख से बोले हरबार ॥९॥
यह ब्रह्मचारी कहलावे, सुख देना देख अपार ॥ १० ॥
शुभ काज करेगा सारे, वेदों के अनुसार ॥ ११ ॥
सुखपावेंगे नर नारी, सुन कर इस का प्रचार ॥ १२ ॥
म्हारे भी भागबड़े हैं, रोशन होगा परचार ॥ १३ ॥
हों ऐसी माता सब का, मिट जावेसब अंधकार ॥ १४ ॥
कह शुकरम पाल सुहावे, गलमें फूलों का हार ॥ १५॥

भजन नं० ॥ ३ ॥

बना बैठा था दादो जी के द्वार कागज में सुरत लगाईजी
बने दादी हंसर पूछे बात, कहां से चिट्ठी आई जी
बने चिट्ठी की पीलो कोर, धोरे पै कालीस्याही जी
बने सारी रही मंडलाय, यूं पूछे तेरी माई जी
दादी दूर कुन्दन पुर देश, राजा की रुक्मण बाई जी
बाई ने लगन लिखा आप ने हाथ, पांडे से पहुंचवाई जी
बाई ने सुण के बने की बात, भारी खुशी मनाई जी
सुनके बुढ़िया तो दादी दीखे, बात फूली न समाई जी
बने पांडे को तारूं गी साल खाने ने दूध मलाई जी
सारे कुनबेने हुआ आनन्द, जा घर में पड़ी बधाई जी
बने हाथी सजाओ दो चार, हाथी पै गेरो अंबारी जी
बने घोड़े सजाबो दस पांच देवें बाट सिपाही जी

भजन नं० ॥ ४ ॥

प्यारी नैनों लागे है सूरत बनड़े की, सूरत बनड़े की, मूरत बनड़ेकी, प्यारी नैनों लागे हैं सूरत बनड़े की।

रत्न जड़ाऊ, गल कंठासाजे क्या शोभा वरनूं, पखी हे गजरे की ॥ १ ॥

अंग बनड़े के अतलस का जामा, सोहणी नैनों लागे तेरी हो माला गले की ॥ २ ॥

मृग समान तेरी मोटी २ आंखें. जिन पर रेख धरी है कजरे की ॥ ३ ॥

गोल कपोल बोलमिसरी से क्या शोभा वरनूं सखी हे मुखड़े की ॥ ४ ॥

चाचारे ताऊरे संग चढ़ चाले जाढूं के, नगरीरे समुरे की ॥ ५ ॥

गीत नं० ॥ ५ ॥

सुन्दर रूप सुहावे सखी बनड़ा ।
जब म्हारा बनड़ा सीम पै आवे ।
बाजों की घोर सुनावे सखी बनड़ा ॥१ ॥
जबम्हारा बनड़ा गोरवेरी आवे ।
कपड़ों की चमक दिखावे सखी बनड़ा ॥२॥
जब म्हारा बनड़ा बागों मे आवे ।
सिरपर मुकट बंधावे सखी बनड़ा ॥ ३ ॥
जब म्हारा बनड़ा आरते पै आवे ।
अपनी से बलकरावे सखी बनड़ा ॥ ४ ॥

जब म्हारा बनड़ा फेरों पै आवे।
कन्या से बचनभरावे सखी बनड़ा ॥ ८ ॥

गीत नं० ॥ ६ ॥

देश दक्खन से स्वामी आये वेदकी पोथी लाये,
हेकोई वेद सुनो ।
आ बागों मे झंडे गाड़े, लाल तम्बू तन बाये ।
रो कोई वेद सुनो ।
खबर हुई म्हारे मांतू पहुंचे चरणों सीस निवायेरी ।
सीस निवाये भाग संवारा ऋषी के दरशन पाये ।
भ्रम मिटाए सांझ समय घर आये ।
घर २ कामन बूझन लागी कथा २ धर्म बताए री
कोई वेद सुनो ॥ १ ॥
लड़ना भिड़ना सब छुटवाया संध्या करण सिखाए,
भद्दे २ राग छटाए, सुन्दर गीत बताए ॥ २ ॥
सेड, मसानी सब छुटवाए, देवी ननंद बताये ॥३॥
पढ़न चारों वेद बताये झूठे पुराण छुटाए ॥ ४॥
पत्थर पूजा सब छुटवाई, पति पूजा बतलाई ॥५॥

पोप पंखंड़ी सब छुट जाये ब्राह्मण पूज्य बताए ॥६॥
जुग २ जीवो दयानन्दजी सोते आन जगाये ॥ ७ ॥

गीत ॥ ७ ॥

स्वामी आए हेये सुनो उतरे हरयल बाग ।
पोथी चाहिये वेदकी बागों जलसा हो रहा शोरही टामक की घोर ॥ १ ॥

नीचे बिछरही चांदनी ऊपर सुर्ख बनात, पोथी चाहिये वेद की ॥ २ ॥

कौनसा घरको संभालदे कौनसा गुरुकुल जाय, पोथी चाहिये वेदकी ॥ ३ ॥

नत्थू घरको संभालदे लछमन गुरुकुल जाय, पोथी चाहिये वेदकी ॥ ४ ॥

पोथी हम्हारे आई देश में घर २ वेद प्रचार पोथी चहिये वेदकी ॥ ५ ॥

पोथी आई म्हारे गोरवे गोरे गयों की सी भीड़ पोथी चाहिये वेद की ॥ ६ ॥

गायों ने जाये बछड़े सारस केसी जोट पोथी चाहिचे वेद की ॥ ७ ॥

गले जनऊ रेशमी सिरपर चोटी लहराय,
पोथी चाहिये वेद की ॥ ७ ॥

जो कोई दुख देवे हे गायको उनकी दोऊ पहिचान
पोथी चहिये वेद की ॥ ८ ॥

कछवे कैसी है खोपरी सिर कटवांमूछ, पोथी चाहिये बेद की ॥ ९ ॥

गीत नं० ८

स्याही गई सफैदी आई सुमिरणकर ईश्वर का।
बुढ़िया अब तो हुवा पुराना चर्खा पांच पकड़िया, हालन लागी, मन्दा लेत लचर का ॥ १ ॥

छोटे २ तार पड़े हैं, खूंटे लागे ढलका ॥ २॥

हिलगई गदड़ी डिगगया, मंझा साल से कीला सरका ॥३ ॥

घिसगई माल उलझ गई, जंदनी बहगया घर चमरक का ॥ ४ ॥

न लीन सरके घिरनी न उठती, हथली का बेल न मड़का ॥ ५ ॥

कतना था सो कात चुकी, अब देगा काम ईंधनका ॥६॥

जगदीश्वर से ध्यान लगाले, तज अभिमान पिहरका ॥७॥
गंदी डोकड़ी मैं क्यों भटके, आश्रय लेले समद्र का ॥८॥
सेड़ मसानी छोड़ दिवानी, सुमिरण करले हरका ॥९॥
दिया लिया तेरे संग चलेगा गड़ारहे धन घरका ॥१०॥
सुखचाहे तो कहा मानजं वस्ती राम विप्रका ॥११॥

गीत नं० ९

बुढ़िया बावलोरी संध्याकरने में ना लागे।
चली पुजने, गुड़ गांवे को गाड़ी, भाडे करके राह में लूट लई चोरों ने घर लीना मर भरके ॥१॥

बालक नन्हे मांगे मिठाई, उल्टी उनको डाटे, सय्यद क्या फूपा लागे उसपर भेली बांटे ॥२॥

आपी लीपे आपी पोते आपी काढे होई, भीता पे से बेटे मांगो अक्ल रांड की खोई ॥३॥

संड मुसंडों की सेवा में घरबार सब खोदीना सारी उमर बृथा हो खोई, सर पे पाप धर लीना ॥४॥

मात सीतला को तू तजदे सुमरण करले हरका।
क्यों धन बृथा खोवे दिवानी नाशकरे है घरका ॥५॥

बस्तीराम तुझको समझावे बैठ सबर कर घर में।
छोड़ मनकी को तज दे सुरती धरले हर में ॥ ६ ॥

गीत नं० १०

ये मानुष देह दहेली री तू साची मान सहेली।
कौड़ो २ माया जोड़ी जोड़ भरी इकथैली ॥ १ ॥
चलती वार बही रह जागी संग चले ना धेली ॥२॥
मेरी २ कर उमर गंवादी सौ २ बिपता झेली ॥ ३ ॥
गडे कर तावीज बंधाये बन नीचों की चेली ॥ ४ ॥
एक दिन जंगल डेरे होंगे, छुटजां बाग हवेली ॥ ५ ॥
कुटम कबीला सब रहजागा आखिर जाय अकेली ॥६॥
सांझ सवेरे संध्या करले पती पूजा से पहली ॥ ७ ॥
चलने का कर फिकर सवेरा आने वाली वहली ॥८॥

गीत नं० ११

एक दिन काल सभी को खावे मत गरबे अलबेली ॥१॥
माल खजाना गड़ा रहेगा, संग ना जावे धेली ॥ २ ॥
पशु पची सब यहीं रहेंगे रहजा खड़ी हवेली ॥ ३ ॥
विषयों में सब उमर गवांई काया पड़गई पेली ॥ ४ ॥
फिर पूजती संडे मुसंडे बन स्यानों की चेली ॥ ५ ॥

पापों में सब घर खो दीना माया यूंही धकेली ॥ ६ ॥
सच्चा सुखतैं कुछ ना पाया ठाली विपता झेली ॥७॥
सेड़ मसानी फिरी पूजती भर भर सैनक पेली ॥ ८॥
कल्याण सुमर ले जगदीश्वर को मानुष देह दुहेली ९॥

गीत नं० १२

मैं लुटगई सैर बजार सखी री बनस्यानों के चेली ॥१॥
भूखी मरी बरत मैं राखे काया पड़गई पेली ॥ २ ॥
तीरथ पैजा माथा रगड़या बन बन फिरी अकेली ॥३॥
दई देवता सारे पूजें बांटी गुड़ की भेली ॥ ४ ॥
करवाई चौथ होई को वर्ती रहकर विपता झेली ॥५॥
गया जाय के पिण्ड भराए खर्च करी भर थेली । ६ ॥
मुर्दों के करवाए कनागत भर भर थाली पेली ॥ ७ ॥
सभी ठौर में धक्के खाए नाहक विपता झेली ॥८॥
कल्याणसिंह ने लाई ठिकाने खर्च लगी न धेली ॥९॥

गीत नं० १३

मैं समझाऊं हे मेरी लाडो शिक्षा सुनले मेरी ।
सासू के घर जा कर उठिये सोकर बहुत रुवेरी ॥ १ ॥
कर असनान पीसकर पहिले निमटो फजर अंधेरी ॥२॥

सास श्वसुर की सेवाकीजे रहिये पति की चेरी ॥ ३ ॥
रल मिल के रहना कुनवे में जिस में आबरू तेरी ॥ ४ ॥
जो कुछ बने दान सब करिये दुनिया में यश लेरी ॥ ५ ॥
घर में रहकर करिये धन्दे तजकर हेरा फेरी ॥ ६ ॥
कल्याण जगत् में सुख पावोगी कट जाय दुखकी वेड़ी ॥ ७ ॥

गीत नम्बर १४

सुन मेरी बात पति मैं समझाऊं

झूठे देवों की पूजा करने घर से बाहर कभी न जाऊं ॥ १ ॥

सास श्वसुर की सेवा करूंगी, इनका हुक्म सभी मैं बरजाऊं ॥ २ ॥

ज्येठ देवर को उत्तर ना दूं. सनमुख उनके कभी ना आंऊं ॥ ३ ॥

धी ननदी का मान करूंगी, कर २ वैर कभी न झिड़काऊं ॥ ४ ॥

घरके धन्दे सभी मैं करूगी दिल में टाल कभी ना मैं ल्याऊं ॥ ५ ॥

हुकम आपके सभी मैं बजाऊ माता पै पूर कभी न चढ़ाऊं ॥ ६ ॥

थक कर आओ जब जंगजल से, नित २ पैर तुम्हारे मैं दबाऊं ॥ ७ ॥

कल्याण सिंह की मानो शिक्षा सब सुख होय तुझे मैं बतलाऊं ॥ ८ ॥

भजन नं० १५

उत्तर बहू का सास को ।

मै तेरी दासी रहूंगी सास हरवारी बाप सत पुरुष बीरारी ब्रह्मचारी ॥ १ ॥

बाप घर जन्म लिया हुई स्यानी सुसरे घर ब्याही आई पियाने मैं थारी ॥ २ ॥

घरके धन्दे सारे मैं करूंगी हिसाब विद्या में रहूंगी हुशियारी ॥ ३ ॥

बाप की बड़ाई मेरी सासकी लड़ाई दोनों कुल एक से मैं मन मैं विचारी ॥ ४ ॥

जेठ देवर ने उत्तर नादूं, ननंदी ने राखूंगी मानसे थारी ॥ ५ ॥

पोपों जलों को मैंना मानूं, गुरुकुलों म जिमाऊं ब्रह्मचारी ॥ ६ ॥

सांग तमाशे कुछ ना देखूं वेदों की कथा में सुनूंगी सारी ॥ ७ ॥

पति अपने की आज्ञा पालूं तन मन धन से जाऊं-गी वारी ॥ ८ ॥

गीत नं० १६

पति को उत्तर

तेरी अब क्यों अक्कल गई बुढ़ापे पन में ।
दई धाम का झूंठा झगड़ा समझ देखले मन में ॥१॥
करूं तुम्हारी सेवा निशदिन कष्ट सहूंगी तनमें ॥ २॥
फिर २ नाहक भूमगवाऊं क्या लूंगी जा बनमें ॥ ३॥
जगदीश्वरका भजन करूंगी परसन हो जा छिनमें ॥४॥
कल्याणसिंह की शिक्षा सुनले क्यों डोले विषयन में ५॥

गीत नं० १७

मेरे सुसरे की आर्य्य समाज दुनिया सुन सुधरी ।
आये दक्खन से दयानन्द, बनकी राहलई ॥ १ ॥

आगे खड़ी पुकारे भोली, गाय नैनों झड़ लायरही ॥२॥
मेरा दूध पिवें नर नारी घी से खा खिचड़ी ॥ ३ ॥
मेरे पूत कमावें नाज महंगे भाकी रुई ॥ ४ ॥
मेरी दही खावे संसार घले परभात रई ॥ ५ ॥
मेरा सबके शिरपै अहसान, फिर भी मेरे गलपे छरी॥६॥
स्वामी सुनकांपे दयानन्द, दिल में दया आय गई ॥७।
तू तो मत रोवे भोली गाय, सदा दुःख किसीपर नहीं ॥८।
स्वामी नगर २ में जाय, गऊ शाला खाल दई ॥ ६ ॥
म्हारे पंडित करें उपदेश, न्यार पचावें छतरी ॥ १० ॥
म्हारे बनिये धन की खान, हंस २ दें नकदी ॥११॥
देवें रोक रुपये चार, जिनघर शुभकी घड़ी ॥ १२ ।

गीत नं० १८

आर्य्यों के धर्म पै हेकी बेबे चलाकरो सोने की नथ घड़ वा वो तोते मैं ओ३म् जड़ाओ जल से मैं पहनके हे के बेबे आया करो ॥ १ ॥

आर्य्यों ने कहो उठजागो, और शुभ कर्मों में लागो पोपो ने कहदो के पड़े २ सोया करो ॥ २ ॥

आर्य्योंने कहो करो संध्या, छूटे दुःखों काफंदा, पोपों ने कह दो हेके बटड़ी धोया करो ॥ ३ ॥

आर्य्यों ने कहो करो हवन, होजा दुःखोंका खोवन पोपों ने कहदो हेके सुलफा पीया करो ॥ ४ ॥

आर्य्यों ने कह तुम पढ़लो, पढ़२ घोड़ों पै चढ़लो, पोपों ने कह दो हेके कोथली ढ़ोया करो ॥ ५ ॥

आर्य्यों ने हल घड़वादो,गेहूं का बीज मंगादो, पोपों ने कहदो, हेके तुलमा बोया करो ॥ ६ ॥

आर्य्यों ने कहो करो शान्ती, मनकी हो एकान्ती पोपों ने कह दो हेके झगड़े झोया करो । ७॥

आर्य्यों ने कहो करो चंदा, विद्याका करो प्रबन्धा पोपों ने कहदो हेके धन स्वांगों में खोया करो ॥ ८ ॥

गीत नं० ॥ १६ ॥

वो कहां गये कृष्ण मुरारी गहरे दुःखड़े, में डार वो प्रातः काल उठ आते, हमें दाना घास खिलाते, बछड़ो को फेर चुग ते, पीछे काढे थे धार ॥ १ ॥

फिर जंगल में लेजाते, हमे हरी २ घास चराते, पल्लेसे मक्खी उड़ाते, विपता सब देते टार ॥ २ ॥

जमुना का नीर पिलाते, अरु छायामें बैठाते, वह अपना प्रेम दिखाते, कर २ गहरा प्यार ॥ ३ ॥

अब मारें मांसाहारी, खपती संतान हमारी, पड़ रही है विपता भारी, भोगें है दुःख अपार ॥ ४ ॥

जो होते कृष्ण मुरारी, क्यों दुर्गति होती हमारी, हम फिरतीं मारी २ कोई सुनता नहीं पुकार ॥५॥

हम तुम को दूधपिलावें, दधि मक्खन रोज खिलावें, मरकर चमड़ा देजावें तन अपने से तार ॥६॥

गौ माता मतना रोवे, क्यों आंसू से मुह धोवे, जो कृपा ईश्वर की होवे देवेंगे सब दुःख टार ॥७॥

कहे बस्तीराम समझाई, गौ की करो सहाई, दुनियां में यश लो भाई, इनका करके उपकार। ८॥

गीत नं० २०

गुरुकुल जलसा दिखा पिया गुण ना भूलूंगी तेरा, वहां आवे दुनियां सारी, दें दरस बाल ब्रह्मचारी, सुन जी ललचाया मोरा ॥ १ ॥

सब कहें धर्म नहीं थोड़ा, है नार पुरुष का जोड़ा, सुनजी० । २ ।

वहां ध्वजा धर्म की फरके, सुन पोपों का जी धड़के सुनजी० ॥ ३ ॥

हुये दयानन्द संन्यासी, जिन जीत लई थी काशी सुनजी० ॥ ४ ।

मुझे सारी बात बतागया घर बस्तीराम समझा गया सुन जी उलझाया मेरा ॥ ५ ॥

गीत नं० २१

सो स्वामी म्हारे आये थे दक्खन देश से, ल्याये थे पोथी वेद की विषपीवा ॥ १ ॥

सो स्वामी म्हारे दोनों समय की संध्या, करा करो कह गये विषपीवा ॥ २ ॥

सो स्वामी म्हारे लगाए बाग बगीचा, अमर फल देगये विषपीवा ॥ ३ ॥

सो स्वामी म्हारे देगये ज्ञान गिंदौडा, आप जहर खागये विषपीवा ॥ ४ ॥

सो स्वामी म्हारे धी ननदी का आदर कराकरो कह गये विषपीवा ॥ ५ ॥

सो स्वामी म्हारे गौ ब्राह्मण की सेवा, करा करो कह गये विषपीवा ॥ ६ ॥

सो स्वामी म्हारे विधवों का ब्याह किया करो कह गये विषपीवा ॥ ७ ॥

सो स्वामी म्हारे कायम समाज किया करो बतागए विषपीवा ॥ ८ ॥

सो स्वामी म्हारे वेदों की पोथी पढ़ा करो कह गये विष पीवा ॥ ९ ॥

गीत नं० २२

सब आन कान मर्याद तोड़ दई पोपो ने ।
घर मात पिता की सेवा छुटाकर ।
कालर में दस ईंट जोड़ दईं पोपों ने ॥ १ ॥
देवी पर बलिदान बतावें ।
उन मुर्गों की नार तोड़ दई पोपों ने ॥ २ ॥
करवा चौथकी कहानी सुनावें ।
इक पोपणी सांड छोड़दई पोपों ने ॥ ३ ॥
संध्या का इन करना छोड़ा ।
उन घंटो की टांट फोड़ दई पोपों ने ॥ ४ ॥
विद्या का इम पढ़ना छोड़ा ।
अपनी क़िस्मत आप फोड़ लई पोपों ने ॥ ५ ॥

गीत नं० ॥ २३ ॥

तू चारों वेद मगाले गरुड़, न उलटी फेर ।
वेदों बिन नाय सरेगा, होगया जग में अंधेर ॥ १ ॥
तेरे सालग राम तोड़ूं, तू ठाकर इन को गेर ॥२ ॥
तू कितना ही समझाले, एक न मानू तेर ॥ ३ ॥
ये पोप तो गीदड़, होंगे, स्वामी जी होंगे शेर ॥४ ॥
अबना पाखंड चलेगा पड़ गया विद्या का फेर ॥ ५ ॥

गीत नं० २४

मैं कहलई सौ २ बार तिलकू ना माने ।
गुरुकुल के नाम पतंगे से लागें, टूटैं रुपैये न चार ॥१॥
दान पुण्य में देवे न कौड़ी, गुडगांवे में कई हजार ॥२॥
वेदों की पोथी हाथ न छूवें, गरुड़ पढन को त्यार ॥३॥
मुसलमानों से मीठो बोलें, आर्यों से तकरार ॥ ४ ॥
सुनें नमस्ते दिलमें जलते, सलाम से करें प्यार ॥५॥
सन्ध्या करते शिर सा टूटे, वाणी का गरम बाजार ॥६॥
वस्तीराम ये जब मानेंगे, हो बैठेंगे ख्वार ॥ ७ ॥

गीत नं २५

सखी गावोरी मंगलाचार ललवाने जन्म लिया ।
बहुत दिनों से आस लगी थी अबके देखें थे बाट ॥१॥

करी आज प्रभूने कृपा होगया कुलमें उजियार ॥
खुशी हुई है सब कुनबे में ॥
फुले अङ्ग में नहीं समाते दिया है लाल करतार ॥

गीत नं० २६

सत्यधर्म फलाय दिया आर्योंने ।
पहिले तो करते थे पत्थर की पूजा,
ईश्वर की पूजा करादई आर्योंने सत्य०
पहिले तो माने थे ईंटों को माता,
जननी बतादई आर्योंने सत्यधर्म०
पहिले तो माने थे पानी से मुक्ती,
ज्ञान से मुक्ती बतादई आर्योंने सत्य०
पहिले तो रखते थे विधवों को दुखिया,
दूजा व्याह करादिया आर्योंने सत्यधर्म०
पहिले तो करते थे बचपन में शादी,
जवानी में शादी बतायदई आर्योंने सत्य०
पहिले तो रहती थीं कन्यायें मूरख,
विद्या का पढना बतायदिया आर्योंने सत्य०
पहिले तो माने थे नदियों को तीरथ,
माता पिता गुरुतीर्थ बतादिये आर्योंने सत्य०

तुम्हें ठगते हैं मूर्ख पुजारीरे ॥ ३ ॥
पीरों फकीरों की करती हैं सेवा अपने पतिकी तो
सेवा बिसारीरे ॥ ४ ॥
देवी को पूजो, पर्वत पर झूजो वृथालुटती है
दौलत तुम्हारीरे ॥ ५ ॥
कल्याणसिंह की मानो नसीहत, पढविद्या वो
हालत सुधारी रे ॥६॥

गीत नं० २९

कैसा उलटा तुम्हारा है नारी धरम ।
पढती पढ़ाती न लिखतीं लिखातीं
क्या मूर्ख ही रहना है नारी धरम ॥ १ ॥
सीना पिरोना कसीदा न सीखो,
क्या चरखा ही चलानाहै नारी धरम ॥२॥
गलियों में चलती हो हंसती हंसाती,
क्या हंसना हंसानाहीहै नारी धरम ॥३॥
मन्डे मुसन्डों की करती हो सेवा,
हलुआ खिलाती हो गरमा गरम ॥४॥
कूड़ी पैखाने की बातें बनाना,
खोई अक्ल आवे न शरम ॥ ५ ॥
मेलों में जाती मुख को उघाड़ी,
खो बैठी हो सारा तुम अपना भरम् ॥ ६ ॥

गीत नं० २७

दोहा—विधवा दुःखिया रोवती, बहै नयनसे नीर ।
दया करो परमात्मा, इसकी हरलो पीर ॥
रोवे पती बिन नार उमर कैसे कटे ।
बाले पन में ब्याह रचाया बिपता डारी भारी ।
ये दुःखड़ा मैं कैसे सहूंगी जीना हुआ दुशवार ॥
गजब है पाधे जी ने कैसा लग्न बताया ।
समझोना कुछ मेरे दुःख को तेरा बुरा करे कर्तार
बिना पती के मैं तड़फूं हूं नैनो से जल जारी ।
जल बिन जैसे मीन तडफती तैसे पुरुष बिन नार ॥
कल्याणसिंह कहे मतना रोवे धीरज धरले प्यारी ।
स्वामीजीने दुःख मिटाया कर गया री जगत उद्धार॥

गीत नं० २८

बिन विद्या के नारी अनारीरे ।
सन्ड मुसन्डोंने धोखेमें गेरी कैसी होगई है बुद्धि
तुम्हारी ॥१॥
औषध दवाई तुम करोना किसीकी निज
सन्डों की रहे झाड़ा झाड़ीरे ॥ २ ॥
व मीरां की कबरों को पजों,

कभी दुष्टों के बहकाने में आया न करेंगी ॥
विद्या अनन्त सुख की सदा देनेहारी है ।
वञ्चित हो उससे मूर्ख कहाया न करेंगी ॥
जब समय संध्या का हो हररोज़ सुबहशाम ।
निज मन को कभी उससे हटाया न करेंगी ॥
सेवक तेरे दर की हैं हम सब मेरे स्वामी ।
तज तुमको मदद और की चाहा न करेंगी ॥

भजन ८

ध्यान भजन में लगाओरी, बहिनो पिया की पियारी ।
जगत् चराचर जिसकी रचना, उसको शीश नवाओरी । ब०
चेतन ब्रह्म जो स्वामी जग का, उसके ही गुण गाओरी । ब०
पति की सेवा तज के प्यारी, जड़ में क्यों मन लाओरी । ब०
पर उपकार में तन मन दीजो, इस कर मुक्ति पाओरी । ब०
पति की आज्ञा शिर पर धारो, सतवन्ती पद पाओरी । ब०
विद्या पढ़ो औरों को पढ़ाओ, यह उपकार कमाओरी । ब०
सास ननँद से कड़वी न बोलो, जो हित अपना चाहोरी । ब०
दया रखो देवर आदि पर, निश्चय स्नेह बढ़ाओरी । ब०
सारे सुख की जड़ मृदुबाणी, यही जुबां पर लाओरी । ब०
श्यामवती की विनय सुनो तुम, प्रभुकी शरणमें आओरी । ब०

दादरा ६

प्रभु बिन कोई नहीं आधार ॥ प्रभु० ॥
खान पान वस्त्र और धन का, सब कुछ देनेहार ॥ प्रभु० ॥

सांझ भई अब छोड़ दो धन्धे, प्रभु चरणन शिर नावें ।
ये बिरियां प्रभु नाम जपन की, काहे को वृथा गँवावें ॥
प्रभु स्तुति और प्रार्थना करके, शांतानन्द फल पावें ।
तन मन्दिर में बासा कर के, भजन अखण्ड ही गावें ॥
प्रभु की भक्ति ऐसी निर्मल, छल कपट मिट जावें ।
ईश्वर प्रेम से मुक्ति हो प्यारी, निशिबासर प्रभु ध्यावें ॥

भजन ६

परम आनन्द बिधायक शुभदायक
ऐ ईश्वर प्रेम स्वरूप जै जगदीश हरे ॥

मुनि गण मानस रंजन भवभंजन, ऐ ईश्वर शान्ति स्वरूप, वैदिक धर्म प्रकाशक भ्रमनाशक, ऐ ईश्वर सत्यस्वरूप ॥ जै० ॥ धार्मिक मानुष वर बिश्वास बिवर्धक मलमर्दक, ऐ ईश्वर शुद्ध स्वरूप ॥ जै० ॥ आत्माचार सुशिक्षक जनरक्षक, ऐ ईश्वर दयास्वरूप ॥ जै० ॥ दैत्य दलन रत शर्मद मुक्तिप्रद, ऐ ईश्वर ज्ञानस्वरूप ॥ जै० ॥ समदर्शी गूढ़ाशय जगदाश्रय, ऐ ईश्वर सौम्यस्वरूप ॥ जै० ॥परितापक परितोषक प्रियपोषक, ऐ ईश्वर पितृस्वरूप ॥ जै० ॥ निर्बल के बलदायक परम सहायक ऐ ईश्वर वीर्यस्वरूप ॥ जै० ॥

गजल ७

मन हम बुरे कामों में लगाया न करेंगी ।
फिर कर के पाप दुःख उठाया न करेंगी ॥
अनमोल वक्त को कभी गँवाया न करेंगी ।

उदय हुआ ओंकार का भानू, आओ दर्शन पाओरी ॥ य०
पान करो इस अमृत फल को, उत्तम पदवी पाओरी ॥ य०
प्रभु की भक्ति बिना नहीं मुक्ति, दृढ़ विश्वास जमाओरी ॥ य०
मानुष जन्म अमूल्य वस्तु है, वृथा न इस को गँवाओरी ॥ य०
करलो नाम ईश का सुमिरन, अन्त को न पछताओरी ॥ य०
धन्यवाद जो सब को पाले, मत उस को बिसराओरी ॥ य०
छोटी बड़ी सब मिलकर खुशी से, यश ईश्वर के गओरी ॥ य०

प्रभाती ३

तुम भारत नारी जागोरी, तुम० ।

विद्या का प्रकाश हुआ, अब अन्धकार को त्यागोरी ॥ तु०
जगदीश्वर का ध्यान धरो तुम, आलस दूर भगाओरी ॥ तु०
प्यारी बहिनो ! जो सुख चाहो, सत्य के मारग आओरी ॥ तु०

प्रभाती ४

भोर भयो पक्षीगण बोले, उठ अब प्रभु गुण गाओरी ।
लखि प्रभात प्रकृति की शोभा, बार बार हर्षाओरी ॥
प्रभु का नाम सुमिर निज मन में, सरल स्वभाव उपजाओरी ।
हो कृतज्ञ प्रेम में उन के, नैनन नीर बहाओरी ॥
ब्रह्मरूप सागर में मन को, बारम्बार डुबाओरी ।
निर्मल शीतल लहरें ले ले, आत्म-ताप बुझाओरी ॥

भजन ५

चलो चलो पियारी प्रभु गुण गावें ।
जो प्रभु सर्व पाप का हर्त्ता, वाही को जाके ध्यावें ॥

❀ ओ३म् ❀

स्त्रीज्ञानमाला

❀ प्रथम भाग ❀

——:-०:❀:०-:——

भजन १

शरण पड़ी हूँ मैं तेरी दयामय ! शरण ।

जगत् सुखों में फँसकर स्वामी तुझ से लिया चितफेरी ।
पाप ताप ने दग्ध किया मन, दुर्मति ने लिया घेरी ॥ दया०
बही जात हूँ भवसागर में, पकड़ लेवो भुज मेरी ॥ दया०
अनेक कुकर्म गिनो मत मेरे, क्षमा दृष्टि देवो फेरी ॥ दया०
सत्संग ज्ञान महा सुख अपना, करो प्रकाश एक बेरी ॥ दया०
पाप मलीन हृदय में मेरे, ज्योति प्रकाशे तेरी ॥ दया०
प्रेम तरंग उठे मन अन्दर, नाथ विनय सुनो मेरी ॥ दया०

भजन २

शरण प्रभु की आओरी, यही समय है प्यारी ।

मक्र फ़रेब और झूंठ को त्यागो, सत्य में चित्त लगाओरी ।

चांद सूरज और जंगल बन का, सब का है करतार ॥ प्रभु० ॥
पृथ्वी में जो रचना दीखे, है प्रभु सिरजनहार ॥ प्रभु० ॥
कहीं नदी हैं कहीं हैं नाले, कैसे सुन्दर पहाड़ ॥ प्रभु० ॥
प्राणों का दाता प्राणों का हरता, जावें पिता बलिहार ॥ प्रभु० ॥

गजल १०

जगत् की जननी जगत् की माता, नमस्ते पहुँचे तुम्हें हमारा ।
जगत् के आधार विश्वकर्त्ता, नमस्ते पहुँचे० ॥
तमाम दुःखों के दूर करता, तमाम पापों के आप हरता ।
तमाम खुशियों के तुम हो दाता, नमस्ते पहुँचे० ॥
जगत् के करतार तुम हो स्वामी, सुखों के भण्डार तुम हो स्वामी ।
हर एक के रक्षक तुम्हीं हितैषी, नमस्ते पहुँचे० ॥
तुम्हीं ने कृपा से हम को अपनी, अता करी है मनुष्य योनी ।
तुम्हीं ने दानिश व अक़्ल बख़्शी, नमस्ते पहुँचे० ॥
हमारी खातिर ज़िमीं बनाई, हमारी खातिर बनाई अग्नि ।
हमारी खातिर बनाया सूरज, नमस्ते पहुँचे० ॥
हमारे कारण बनाया वायु, हमारे कारण बनाई खुशबू ।
हमारे कारण बनाया जल को, नमस्ते पहुँचे० ॥
हमारे कारण बनाई माता, पिता दिया परवरिश का करता ।
बराये मुक्ति है वेद उतारा, नमस्ते पहुँचे० ॥
हमारे चलने को पांव बख़्शे, दिये पकड़ने को हाथ तुमने ।
बनाई आंखें कि देखें हर शय, नमस्ते पहुँचे० ॥
ज़बान चखने को तुमने दी है, दिये हैं सुनने को कान प्रभु ने ।

तुम्हीं ने दी है वाक्य शक्ति, नमस्ते पहुँचे० ॥
हज़ारों व्यञ्जन स्वादिष्ट मीठ, हज़ारों भोजन खट्टे मीठे।
हमारे कारण बनाये तुमने, नमस्ते पहुँचे० ॥
प्रभु जो तुम से पिता को छोड़े, जो तुम से रक्षक से नाता तोड़े।
कहीं ठिकाना लगे न उसका, नमस्ते पहुँचे० ॥

भजन ११

धर्म पतिव्रत अपना स्त्री जो जग बीच निभाती है।
रहे सदा आज्ञा में वह सतवन्ती नारि कहाती है ॥
चाहे बुरा गुणहीन पती हो उसको शीश नवाती है।
निर्धन रोगी क्रोधी से वह मन में नहीं दुख पाती है ॥
यज्ञ धर्म व्रत नियम समझ सेवा में चित्त लगाती है।
मन वाणी काया से प्रेमपद में वह खुशी मनाती है ॥
अपने पतिका ध्यान और का स्वप्न में भी नहीं लाती है।
निस्सन्देह छूटे वह दुख से शर्मा सुख को पाती है ॥

भजन १२

एक पतिव्रत धर्म निबाहलो, जो चाहो सुख से रहना।
कीजो नित्य पती की सेवा, दोनों लोकन में सुख देवा।
सब से उत्तम है यह मेवा, बड़ी रुचि से खाय लो ॥
नहीं पड़े तुम्हें कुछ देना ॥ जो० ॥
सास ससुर और ननँद जिठानी, चाहे भाभी हो चाहे देवरानी।
उन से कटु न बोलो बानी, सब से प्रीति बढ़ाय लो ॥
जो कहें करो वहही कहना ॥ जो० ॥

झूठे सब शृंगार छोड़िये, राग ईर्षा मन से तोड़िये।
विद्या से एक नाता जोड़िये, सब शृंगार बनाय लो॥
है सब से उत्तम गहना॥ जो०॥
रहो पति की आज्ञाकारी, मिले तुम्हें सुख सम्पति सारी।
जिस से होवे गति तुम्हारी, मन चाहा फल पाय लो॥
कहे शर्म्मा कुछ शक है ना॥ जो०॥

भजन १३

तिरिया तुम यह गुण धारलो मन चाहा फल पाओगी।
बाल उमर में विद्या पढ़ना, घर में नहीं किसी से लड़ना।
यथायोग्य प्रिय भाषण करना, कडुवे वचन सम्हारलो॥
सब दुखों से छुट जाओगी॥ मन०॥
घर के कामों में चतुराई, तन और वस्त्र की करो सफ़ाई।
सब त्रिया सुनों कान लगाई, गर्भाधान सुधार लो॥
अति उत्तम सुत जाओगी॥ मन०॥
धर्म कमाई से धन जोड़ो, बुरे कर्म से मुखड़ा मोड़ो।
करना फ़जूलखर्ची छोड़ो, घर का खर्च बिचार लो॥
नहीं मूर्ख कहलाओगी॥ मन०॥
धीरजता धारो हे नारी, ज्यूं द्रौपदी सीता ने धारी।
तेजसिंह कहे सुनो हमारी, भारत नाव उभार लो॥
जग में यश फैलाओगी॥ मन०॥

भजन १४

त्रिया पतीव्रत को धारलो, सुख भोग स्वर्ग जाओगी।

प्रकृति पूजा छोड़ो जाके, पति की सेवा करो बनाके।
ईश्वर से लो ध्यान लगाके, यह नियम चित्त में धारलो॥
मन इच्छा फल पाओगी॥ सुख०॥
खोटे काम छोड़ सब दीजो, सत्य धर्म हृदय धरलीजो।
कडुवे वचन शांत करलीजो, ऐसे मन को मारलो॥
तब सीता कहलाओगी॥ सुख०॥
सासु ससुर की टहल में रहना, कभी दुःख नहीं इनको देना।
जो कुछ कहें सोही सह लेना, अपना जन्म सुधारलो॥
सब दुखों से छुट जाओगी॥ सुख०॥
पति की आज्ञा में नित रहना, कभी न उत्तर उनको देना।
गंगासहाय कह मानो कहना, भवसागर तरजाओगी।सु०॥

भजन १५

सीता की ओर निहारलो, जो थी सतवन्ती नारी।
गई साथ पतिके वह बनको, लातमार सुख सम्पति धनको।
कष्ट दिया अति अपने तनको, नहीं मन में घबड़ाई॥
सब छोड़े महल अटारी॥ जो०॥
रहती थी वह रंगमहल में, रहें टहलनी उसकी टहल में।
नंगे पैरों गई पति की गैल में, ऐसा व्रत तुम धारलो॥
जो धारा जनकदुलारी॥ जो०॥
हुई कांति दुगनी मुखकी, नहीं परवाह करी कुछ दुखकी।
सभी लालसा अपने सुख की, पति के ऊपर वारदी॥
रही सदा वह आज्ञाकारी॥ जो०॥

पति सेवा में हित चित दीजो, कभी भंग आज्ञा नहीं कीजो ।
मेरा कहा मान अब लीजो, यही जीवन का सारलो ॥
कहे बहिनों खड़ा मुरारी ॥ जो० ॥

भजन १६

नारियों के धर्म बहिनों सुनोरी सुनाओ ।

मात पिता भ्राता से बहिनों, एक हद तक सुख पाओ । बेहद सुख हो पति के कारण, सेवा में उसकी तुम तन मन लाओ ॥ नारियों० ॥ सासु आदि जितनी बड़ी घर में सब की दासी कहाओ । बिन आज्ञा कहीं पग नहीं दीजो, मन माना सुख बहिनों तुम पाओ ॥ नारियों० ॥ दया रक्खो देवर आदिक पर, और सन्तान पढ़ाओ । आमद देख खर्च को करना, चादर देख कर पग फैलाओ ॥ नारियों० ॥ पीछे सोना पहले उठना, कटु नहीं बचन कहाओ । नित प्रति चीज़ों को परतालो, घर का हिसाब सारा लिखो और लिखाओ ॥ नारियों० ॥ सोच सांच कर समय समय पर, सारी वस्तु मँगाओ । पैसा वृथा कभी न खर्चो, जो तुम घर का प्रबन्ध बनाओ ॥ नारियों० ॥ खाली रहना बहुत बुरा है, कुछ न कुछ किये जाओ । थोड़ा २ बहुत होत है, चिड़िया के घोंसले पर नज़र घुमाओ ॥ नारियों० ॥ मिट्टी पत्थर को मत पूजो, क्यों भ्रम में तुम जाओ । पाठक एक ईश है स्वामी, उस की शरण में बहिनों तुम आओ ॥ नारियों० ॥

दादरा १७

पति अपने में राखो ध्यान, बढ़ कर धर्म नहीं ।
तन भी दीजौ मन भी दीजौ, अर्पण कीजौ प्राण ॥ ब० ॥
ऋषि मुनि गावें वेद बतावें, सुख हों बे परिमाण ॥ ब० ॥
सम्पति पाओ दुख बिसराओ, पाओ पद निर्वाण ॥ ब० ॥
सन्ध्या करलो ओ३म् सुमिरलो, होम करो नितदान॥ ब० ॥
पति अपने की आज्ञा पालो, यही नियम व्रत ध्यान ॥ ब० ॥
जो पति की आज्ञा नहीं मानै, मिले नरक स्थान ॥ ब० ॥
जो पति की सेवा नहीं करती, पावै दुःख महान ॥ ब० ॥
एक ही धर्म पती की सेवा, करै यही कल्याण ॥ ब० ॥
वेदों ने पूज्य पति बतलाया, मत पूजो पाषाण ॥ ब० ॥
सुख सम्पति चाहो जो बहिना, मेरा कहा लो मान ॥ ब० ॥

भजन १८

बहिनोरी करलो सच्चा श्रृंगार ।
जिस श्रृंगार से प्रभु मिल जावै, सब का प्राण अधार ।
जिस भूषण में होवे न दूषण, करलो उसी से प्यार ॥ ब० ॥
सच्चा भूषण वह है विद्या, लूटै न चोर चकार ।
ना वह टूटै ना वह घिसती, जिस का लगै न भार ॥ ब० ॥
पति के प्रेम की माला पहनो, सेवा समझ लो हार ।
धर्म का चर्चा चूड़ी समझो, आरसी तत्त्वबिचार ॥ ब० ॥
पति आज्ञा को नथ एक समझो, भक्ति को कंगन जान ।
ब्याह से प्रथम हँसली सो हँसली, शील को हँसली मान ॥ ब० ॥

दया धर्म दो झुमके बनालो, टीका परउपकार।
लौंग बुलाक़ है घरकी सेवा, गहना यह क़ीमतदार ॥ ब० ॥
होय बिछोवो ना सन्ध्या का, यह बिछुवा दरकार।
विद्या धर्म में कीर्त्ति होवै, झांझन की झनकार ॥ ब० ॥
बेंदी बन्दना कर स्वामी की, ज्ञान का सुरमा डार।
मुकुन्द कहे सब सुख से रहोगी, मान करै संसार ॥ ब० ॥

दादरा १९

पहनो पहनोरी सुहागिन ज्ञान गजरा।
दया धर्म की ओढ़ो चुँदरिया, शील का नेत्रो में डालो कजरा।
लाज करो तुम परपुरुषों से, अपने पति को देखो मुखड़ा ॥
सासु ससुर की सेवा कीजो, अपने पति से न कीजो झगड़ा।
कहे अनाथ बिन विद्यारी बहिनो, सहती हो तुम अति दुखड़ा ॥

भजन २०

मेरी पियारी बहिनो सोई तौ बड़ीही गहरी नींद में।
पति की तौ सेवा करना, बालकों को शिक्षा देना। तुमने तौ भुलाया गहरी नींद में ॥ मेरी० ॥ अच्छी २ विद्या पढ़ना, धर्म का तौ संग्रह करना। साराही गँवाया गहरी नींद में ॥ मेरी० ॥ ईश एक सच्चा तुमने, सारी रचना की है जिसने। उसको भी भुलाया गहरी नींद में ॥ मेरी० ॥ देवता हज़ारों माने, क़बर भूत मुल्ला स्याने। तुमने स्वप्न देखा गहरी नींद में ॥ मेरी० ॥ क्या बतावे पाठक आगे, अग्निहोत्र आदि त्यागे। धर्म तौ बिसारा गहरी नींद में ॥ मेरी० ॥

दादरा २१

बहनो करना बिचार कैसी दशा है तुम्हारी ।
माता भी पियारी, भैयाजी भी प्यारे, भाभी को देती हो ताने हज़ार ॥ ब० ॥ अड़ौसिन भी पियारी, पड़ौसिन भी पियारी, दुश्मन है सासु का सब परिवार ॥ ब० ॥ लड़ती तौ सासु व नन्दों से तुम हो, गुस्सा उतारो हो बच्चों को मार ॥ बहिना० ॥ जाने पहिचाने से घूँघट करो घर, मेले में जाती हो मुँह को उघार ॥ ब० ॥ छुप २ सामग्री तुम बेचो हो घर की, दो आने में देती आने हो चार ॥ ब० ॥ ईश्वर की भक्ति न सन्ध्या न तर्पण । पाठक हा पूजो हो जाकर मदार ॥ बहिना० ॥

दादरा २२

गिरी हुई है दशा यह सुधारोरी, गिरी० ।
पहिली थीं बिदुषी वेदों की ज्ञाता, तुमने तो पढ़ना बिसारोरी । रोगों में वैद्यों को वे थीं बुलातीं, तुमने तो स्याना पुकारोरी ॥ वह तो बिवाहों में सुन्दर गीत गातीं, तुमने तो सीठने प्रचारोरी । वे तो हवन से पवन सुधारें थीं, धूनी से तुम तो बिगारोरी । आग लगाओ घर सब कुछ लुटाओ, तुम तो उतारे उतारोरी । नज़र हुई जान मिर्चें जलाओ, टुटके करो हो हज़ारोंरी । ज्ञानी बनो शिक्षा देओ सुन्दर, पाठक हित है तुम्हारोरी ॥

दादरा २३

हाय कैसा यह काम भूली हो अपना पतिव्रत । अपने

पती को दो सौ २ गाली, स्याने दिवानों को झुक कर सलाम ॥ अपने ससुर जी की बनती न रोटी, पीरों फ़क़ीरों को बर्फ़ी बादाम ॥ अड़ोसन पड़ोसन से हिलमिल के रहतीं, सासु से लड़ने में समझा है नाम ॥ हाय० ॥ सच्चे देवों की तो सार न जानी, भूतों प्रेतों को मानो तमाम ॥ हाय० ॥ अच्छी कथाओं से सौ कोस भागो, मेले तमाशों में चार २ मुक़ाम ॥ हाय० ॥ पाठक कहे देव पति जो तुम्हारा, उनके चरण धोओ सुबह और शाम ॥ हाय० ॥

भजन २४

उस पति से चित्त हटाय के, तुम क्यों धक्के खाती हो ।

पतिव्रत नियम हृदय नहीं धरतीं, पतिकी सेवा कभी न करतीं । अधर्म को तुम धर्म समझतीं, देखो नज़र उठाय के । अब जितनी तुम जाती हो ॥ तुम० ॥

अपने कर्म करो अब प्यारी, जो ईश्वर ने कीने जारी । जिस से मुक्ति होय तुम्हारी, उस अमृत को खाय के । तुम क्यों नहीं सुख पाती हो ॥ तुम० ॥

प्रथम पति स्नान कराओ, उत्तम भोजन उन्हें जिमाओ । हुक्म करें सो वही बजाओ, जो उनसे ही ध्यान लगाय के । तुम क्यों मन भटकाती हो ॥ तुम० ॥

जो सतवन्ती होना चाहो, तो अब पति से हेत लगाओ । गंगासहाय कहे जब सुख पाओ, ख़िदमत करो बनाय के । जो त्रिया कहलाती हो ॥ तुम० ॥

भजन २५

तुम अपना धर्म विचारलो, क्यों फिरती मारी मारी ।
तीर्थ देवता और न दूजा, केवल करो पतिकी पूजा ।
जगन्नाथ को जाना सूझा, कहीं पहुँची हरद्वार लों ।
क्या यहां ईश नहीं प्यारी ॥ क्यों० ॥
पति के संग फिरे जब फेरे, क्या बहनी थे क़रार तेरे ।
आज्ञा में रहूं स्वामी तेरे, याद रहे दिन चारलों ।
अब भूल गई हो सारी ॥ क्यों० ॥
स्याने पण्डे तुम्हें बहुतेरे, गृहवाले ठग मिले घनेरे ।
तुम उनके नहीं जाओ नेरे, अपनी दशा निहारलो ।
कहां तुमने बुद्धि बिसारी ॥ क्यों० ॥
आप पढ़ो सन्तानपढ़ाओ, वृद्धों की सेवा चित लाओ ।
कह पाठक भ्रम से छुटजाओ, घर के काम सँवारलो ॥
यह मानो सीख हमारी ॥ क्यों० ॥

(कन्याओं को शिक्षा)

भजन २६

सँभल २ पग धरियोरी बहना, देश बिगाने जाना होगा । सासु बिगानी नन्द बिगानी, ससुरा कन्त बिगाना होगा ॥ सँभल० ॥ ना बाबुल ना बीर लाड़ला, किसको रोय सुनाना होगा ॥ सँभल० ॥ एक जान पर दुःख हज़ारों, सो अब रोय बहाना होगा ॥ सँ० ॥ सौ २ मार और झिड़की खाकर, फिर

भी शीश नवाना होगा ॥ सँ० ॥ वहां पर कोई न देगा सहारा, स्त्रीधर्म निबाहना होगा ॥ सँभल० ॥

भजन २७

मैं समझाऊं ए मेरी लाडो, सासु के घर जाना होगा ।
प्रातःकाल उठ प्रभु भजन कर, सबका शीश नवाना होगा ॥
सासु ससुरकी निशिदिन सेवा, सबका हुक्म बजाना होगा ।
ननँद जिठानी से प्रीति रखना, पतिही पूज्य मानना होगा ॥
देवर जेठ को उत्तर न दीजौ, सबका बोल निबाहना होगा ।
घर के कामों में चतुराई, भोजन अच्छे बनाना होगा ।
एक ईश्वर की भक्ति करना, पति मेंही प्रेम बढ़ाना होगा ॥
सब कामों से खाली होकर, तन मन विद्या में लाना होगा ।
दान मकुन्द विद्या में देना, एक सच्चा धर्म कमाना होगा ॥

भजन २८

कन्याओं प्यारी, सुन लो बात हमारी ।
पढ़ना लिखना विद्या सीखो, करो काम हितकारी ।
कतर ब्योंत कपड़ों का जानो, काम कसीदेकारी ॥ क० ॥
चटनी और अचार मुरब्बा, खाने की सब तैयारी ।
ऐसे स्वाद बनाओ व्यंजन, शोभा होय तुम्हारी ॥ क० ॥
लाज शरम मन में राखो तुम, होओ सबकी प्यारी ।
प्रभु भक्ति करो सब मिलकर, होवे बात सुखारी ॥ क० ॥
धर्मवान गुणवान की लज्जा, राखैं श्री ओंकारी ।
बेढंगी और अति फूहर की, होगी थू थू ख्वारी ॥ क० ॥

भजन २९

भूल मत जैयो लाड़ली मेरी ।
पति अपने की सेवा कीजो, सासु ससुर की रहियो चेरी ।
हां के साथ काम सब करियो, आलस से कीजो ना देरी ॥
सब को सोते छोड़ लाड़ली, उठियो सब से खूब सबेरी ।
आज्ञाकारी पति की रहियो, इसही से गति होगी तेरी ॥
ननँद जिठानी से मत लड़ना, बस में रहियो सासु केरी ।
मकुन्द कहे धर्म तुम सँभालो, विद्या पढ़ के सुयश लेरी ॥

दादरा ३०

आज घर शान्ति भई, सखी गाओ मंगलाचार ।
स्वस्तिवाचन और शांति पाठ सब सुनकर लोग प्रसन्न हुये सब ।
धन धन है कर्तार ॥ आज घर० ॥
हम सबको प्रभु शरण में लेओ, सारेही सुख हमको देओ ॥
दुःख के मोचनहार ॥ आज घर० ॥
सुखदे हमको यह जग सारा, दुख होवे हम सब से न्यारा ।
तीनों ताप प्रभु टार ॥ आज घर० ॥
सूर्य चन्द्र और यह तारे, फूल वनस्पति जो हैं सारे ।
दें सुख सर्व प्रकार ॥ आज घर० ॥
अभयं मित्रादभयममित्रात, अभयं ज्ञातादभयं परोक्षात् ।
होवे अभय संसार ॥ आज घर० ॥
द्यौः शान्तिः अन्तरिक्षं शान्तिः, वायुः शान्तिः पृथ्वी शान्तिः ।
शान्ति जल की फुवार ॥ आज घर० ॥

* ओ३म् *

* भजन-प्रकाश *

प्रथम-भाग

जिसमें

ठा० नत्थासिंह, चौधरी तेजसिंह और पं० राम-
चन्द्र मिश्र प्रभृति, प्रसिद्ध प्रसिद्ध गायकों और
कवियों के भजनों का पं० रामचन्द्र शर्मा ने
संग्रह किया ।

जिसको

महा० रामदीन आर्यबुकसेलर शफ़ाख़ाना रोड
आगराने पं० रामचन्द्रमिश्र जैत ज़ि० मथुरा
निवासी से शुद्ध कराकर छपवा के
प्रकाशित किया ।

द्वितीयावृत्ति] १९१३ [मूल्य प्र०पु० =)

Printed by B.R. Sharma at the Arya Bhasker Press Agra

सूची पत्र ।

** स्त्रीशिक्षा की अपूर्व पुस्तकें **

महाभारतसार	२)	भारतकी वीर विदुषी	
सचित्र महाभारत	३)	स्त्रियां दोनों भाग	॥=)॥
स्त्रीसुबोधिनी पांच भाग	१।)	सच्ची देवियां	।=)
सीतावनवास	॥)	वीरमातायें	॥≡)
पार्व्वती और यशोदा	।=)	गृहप्रबन्धशास्त्र	॥)
सीताचरित्र सजिल्द	१।)	नारीधर्मविचार २ भाग	१॥)
शान्ता	॥)	नारायणीशिक्षा	१।)
लक्ष्मी	।)	संगीतरत्नप्रकाश पांच भाग	
दो कन्याओंकी बात चीत	)॥	भजन	॥≡)
शिशुपालन	)॥	सदाचार	-)
सीताचरित्र ५भाग इकट्ठे	१॥।=)	नीति से स्त्रीधर्म	≡)
विवाहआदर्श हिन्दीभाषा	।)	स्मृति से स्त्रीधर्म	≡)
महारानी मन्दालसा का		संध्यादर्पण	-)॥
जीवनचरित्र	-)॥	संसारफल	)॥
मनुष्यजीवन	॥=)	भुवनकुमारी का जीवनच०	।)
दृष्टान्तसागर	१)	सीताजीका जीवनचरित्र	॥।)
स्त्रीहितोपदेश	।~)	बालबोधनी पांचों भाग	१।=)

पता—रामदीन आर्य्य बुकसेलर शफ़ाख़ाना रोड आगरा

॥ ओ३म् ॥

भजन–प्रकाश

आलम में किस का डर है जिस पर नज़र हो तेरी
बेशक वो बेख़तर है जिस दम मदर हो तेरी
दुश्मन न कोई उसका होवे तू दोस्त जिसका
दुनिया ही याद होवे हो जब मदद हो तेरी–१
दर्दो अलम यहां के ऐबो गुनाह जहां के
कोई न पास आवे जिसको पनाह हो तेरी–२
राई से कोह करदे ख़ाली को दम में भर दे
थोड़े से तू बहुत दे पै जब रजा हो तेरी–३
नामत जहां से फ़ाज़िल उसको खुशी हो हासिल
जिस दिल में बन्दगी यह या रब जमा हो तेरी–४
जिस दिल में नूर तेरा रोशन हो वह ग़नी है
हम सर न कोई उसके लेकिन निगाह हो तेरी–४
तुझ से उम्मेद बाबू रखता है दिल में हरदम
अब तो नज़र रहम की मुझ पर ज़रा हो तेरी–६

॥ राग गौरी नं० २ ॥

बूड़त मोहि उबारो दयानिधि बूड़त मोहि उबारो ॥टेक॥
नदिया अमित अपार भँवर बहु अगम बहै जलधारे

मुख पसार मोहि भक्षन चहत प्रभु प्रबल ग्राह दशचारी ॥
गुणविहीन झांझर भई नैया टूट गयो पतवारो
अहंकार मद पीकर केवट भयो विषम मतवारौ ॥ २ ॥
समय पाय छिप गयौ दिवाकर छाय रहो अंधियारौ
तापर घन घुमड कर बरसत झौंकत असह बियारौ ॥३॥
खाकी ये कितहू नहीं सूझत तुम बिन और सहारो
त्राहि त्राहि अब बेगि लेउ सुध अपनी ओर निहारौ ॥४॥

॥ ग़ज़ल क़व्वाली नं० ३ ॥

ईश्वर ! सज़ा किये की हम अपनी पा चुके हैं
दुक्खों को सहते २ अब तंग आ चुके हैं
ताक़त अधिक सहन की हम में नहीं रही है
सदमे पै सदमे लाखों दिल पर उठा चुके हैं ॥१॥
नित पाप कर्म करके दिल से तुम्हें भुलाके
मल से मलीन मन को निश्चय बना चुके हैं ॥ २ ॥
गुमराह हो गये हैं खुदग़र्जियों में फंस कर
शिक्षा तुम्हारी सारी दिल से भुला चुके हैं ॥ ३ ॥
तज करके एक तुम को पूजीं हज़ारों चीज़ें
हर शै के आगे अपनी गर्दन झुका चुके हैं ॥ ४ ॥
जब से विमुख पिताजी हम आप से हुये हैं
सदहा मुसीबतों में खुद को फँसा चुके हैं ॥ ५ ॥

अज्ञानता के कारण विद्या विवेक खोकर
हिन्दू गुलाम काफ़िर हबशी कहा चुके हैं ॥ ६ ॥
घर में फ़िसाद कर कर आपस में रोज़ लड़कर
सुख सम्पती को घर से बिलकुल नसा चुके हैं ॥ ७ ॥
तारीख़दां हैं वाक़िफ़ आपस की फूट से ही
तेग़े मुहम्मदी को हम खूं चटा चुके हैं ॥ ८ ॥
लाखो हमारे भाई जो वीरवर हक़ीक़त
तेग़े सितम से अपनी गर्दन कटा चुके हैं ॥ ९ ॥
ग़र्ज़ कि छोड़ तेरा जगदीश्वर सहारा
आफ़त सब तरह की शिर अपने ला चुके हैं ॥ १० ॥
बिन आप की मदद के उठना नहीं है मुमकिन
ऐसी जगह पै अपने को हम गिरा चुके हैं ॥ ११ ॥
कर दो क्षमा दयामय अपराध अब हमारे
जो कुछ किया था सालिग फल उसका पा चुके हैं ॥१२॥

—o—

॥ ख्याल नं० ४ ॥

ऐ खुदग़र्ज़ी तेरा बुरा हो कहां से आई तू हत्यारी
तैने हमारे भारतवर्ष की सुख सम्पति लूटी सारी
अपनी २ खुदग़र्ज़ी में कोई न सुनता है म्हारी
दीन दुखी हम दुखिया रोते अश्क नैन से है जारी

बड़े २ आये हकीम नुसख़ा बड़े २ दे गये कारी
ज़रा न सेहत हुई हमें तू ऐसी असेहत बीमारी

॥ दोहा १ ॥

खुदग़र्ज़ी ने देश में जब से किया वास ।
तब ही से इस देश का हो गया सत्यानाश ॥

॥ ग़ज़ल क़व्वाली नं० ५ ॥

अग्नीं मतान्तरों की ह्यां पर जो जल रही थी ।
वैदिक धर्म से उसकी कुदरत बदल रही थी॥
जाबिर हुकूमतों की ताक़त के मेटने को ।
एक कम्पनी ग़रब से मशरिक़ को चल रही थी ॥ १ ॥
भारत में हर तरफ़ था छाया हुआ अंधेरा ।
धीमी सी एक बत्ती मथुरा में जल रही थी ॥ २ ॥
माता कौशल्या जी गुजरात में थीं जन्मीं ।
मोक्ष आत्मा एक उनकी गोदी में पल रही थी ॥ ३ ॥
यहां जिस विधी से गौतम पतञ्जली पले थे ।
वह आत्मा भी उसी ही सांचे में ढल रही थी ॥ ४ ॥
हिमालय की गुफ़ा में और नर्वदा के तट पर ।
कर योग उसके चित की वृत्ति सम्हल रही थी ॥ ५ ॥
दुनिया के मोह मद की जो थीं चट्टानें भारी ।
क़दमों के उस के नीचे वो सब फ़िसल रहीं थीं ॥६ ॥

वैराग्य देख उसका हसरत से आह भरके ।
दुनिया की वासनाऐं कर अपने मल रही थीं ॥ ७ ॥
वेदों का भाष्य यहां पर जो कर गये महीधर ।
लखि उसको ऋषि दृगों से जलधारा चल रही थीं ॥ ८ ॥
शिक्षा से उस ऋषि के क़ौमें खड़ीं हुईं वो ।
सदियों से जो यहां पर घुटनों से चल रही थीं ॥ ९ ।
विद्या के बल से उस ने मुर्दा वह अज़दहा की ।
जो हिन्दुओं को चुन २ साबित निगल रही थीं ॥ १० ॥
गो ज़ोर पर यहां थे अद्वैत वाममारग ।
पर उस की युक्तियों से जड़ उन की गल रही थीं ॥ ११
विद्या के बल से उस ने शंकायें सारी मेटीं ।
जो तालिबाने हक़ के मन में मचल रहीं थीं ॥ १२ ॥
पुरुषार्थ से उसी के वो पुरफ़िज़ा हवायें ।
चलने लगीं यहां जो सत्युग में चल रहीं थीं ॥ १३ ॥
दुर्गाप्रसाद तू भी है खुशनसीब कोई ।
जो आर्य्यों की सेवा कुछ तुझ को मिल रही थी ॥ १४ ॥

भजन थियेटर नं० ९

टेक- ब्रह्मचारी दयानन्द आये-स्वामी धन धन ध
जग में कहाये । पढ़कर पुराण सुनकर कुरान अंजील छा

सब असत जान पा वेद ज्ञान सत माने , भूले भारतवासी जागो लुट गये लाल गौहर । उठ वैदिक मशाल और जल्द जाल सब कुछ अपना ले सम्भाल, चोरों को घर से दे निकाल जो अन्धाधुन्ध मचाये ॥ १–ब्रह्मचारी० ॥

कर दिये अनंद जब धर्म डंड दे सब घमंड और अंड बंड तोड़े पाखण्ड के बन्धन, ईसाई हिन्दू व मुसलमां रह गये शशदर के शशदर, वो धर्मयुद्ध का शूरवीर हिम्मत थी जिस की बेनज़ीर गो थे लकीर के सब फ़क़ीर–पर आख़िर पल्टा खाये ॥ २–ब्रह्मचारी० ॥

वह सुन सफ़ात नहीं दे निजात सब खुराफ़ात और झूठीं बात हुईं मात बिन ईश्वर के मत पूजो क्या संग असवद क्या जल पत्थर जिन्हें अविद्या रूप रोग पाषाण को लगवाते हैं भोग वो हंसी करें विद्वान् लोग क्या टुन२ टाल बजाये ब्रह्मचारी० ॥ ३ ॥

अब यज्ञ हवन और हरी भजन की लगी लगन जो हुए मगन अपना तन मन कर सब अर्पण आर्यगण उपदेश धम का देते हैं फिर नगर २, उपदेशों की अमृत वर्षा दीनों की होती है रक्षा सत् विद्या और सत् की शिक्षा–गुरुकुल स्थान खुलाये । ब्रह्मचारी दया० ॥ ४ ॥

जो जग रचता सो है डरता, झूंठ को तजता सत पर

मरता हिम्मत करता वो, जगत् बिगाड़े कुछ ना बिगड़े रक्षक उन का खुद ईश्वर, उसी ऋषि की लक्षमण हिम्मत इस्तक़लाल की जो थी आदत तकलीफ़ें देती थीं ख़लक़त फ़तह सच है पाये । ब्रह्मचारी० ॥ ५ ॥

गज़ल नं० ७

हाय ! भारतवर्ष तेरे वो सपूत अब कहां गये ।
पितु की आज्ञा मान जो चौदह(१४)बरस वनमें रहे ॥
कहां गईं सीता सी देवी पति के संग बहु दुख सहे ।
हाय अब तो भरत भाई से भी जग में ना रहे ॥

ग़ज़ल—हुए श्री रामचन्द्र राजा शेर नर हो तो ऐसा हो ।
किया पितु का वचन पालन पुत्र गर हो तो ऐसा हो ॥
गये वह छोड़ राज और धन उठाकर रुख़ वो सिमते वन ।
किया मैला न कुछ भी मन जो साबिर हो तो ऐसा हो ॥१॥
गये हमराह लक्षमण भी सहे सदमे सभी बन के ।
निभाया भ्रातृ भावों को बिरादर हो तो ऐसा हो ॥ २॥
गई हमराह सीता भी छुड़ाया जिनको रावण से * ।

---

* जब रामचन्द्र जी सीता जी से आज्ञा मांगने वन को जानेके लिये गये थे तब सीताजी ने कहा आपके साथ मैं भी चलूंगी, तब रामजी मीठी २ वाणी से समझाते हैं मगर सीता की हालत गुसाईं तुलसीदासजी कहते हैं कि क्या हालत थी ।

जो पत्नी हो तो ऐसी हो जो प्रीतम हो तो ऐसा हो
न पहचानी गले-माला न देखी जो नज़र भर के।
जो भाभी हो तो ऐसी हो जो देवर हो तो ऐसा हो ॥४॥
भरत ने राज नहीं लीना दिया जो उस की माता ने।
दिया वापिस जो राम आये बिरादर हो तो ऐसा हो ॥५॥
हुकूमत राम ने जबकी धर्म से कर प्रजा पालन।
गया फिर राज पालीना मुक़द्दर हो तो ऐसा हो ॥ ६ ॥
फ़तह लङ्का जब उसने की तो मारा शूरवीरों को।
लिया सिर काट रावण का बहादुर हो तो ऐसा हो ॥७॥
मुक़द्दम कर्म अफ़ज़ल थे जो ये बातें हुईं हासिल।
भयंकर राह सब काटी दिलावर हो तो ऐसा हो ॥ ८ ॥

भजन नं० ८

दोहा—पहलें थीं इस देशमें सीता सम पतिनार।
जिन प्रीतम के संग में भोगे कष्ट अपार॥

॥ चौपाई ॥

सुनकर वचन मनोहरप्रियके। लोचन नलिन भरे जल सिय के॥

फिर उत्तर देती हैं।

॥ चौपाई ॥

जिय विन देह नदी विन वारी। तैसे हीं नाथ पुरुष विन नारी॥

टेक-पतीव्रत धर्मको री पालन किया सती सीता ।
दीनी आज्ञा रामचन्द्र को बन की महतारी ने ।
उसी समय पति संग चली, नहीं तजा धर्म नारी ने ॥१॥
देर न करी चली पति के संग, सीता पतिव्रता नारी ।
चौदह वर्ष पती संग नंगे पांवों फिरी बिचारी ॥२॥
वन में मिला दुष्ट एक रावण उसने उसे चुराया ।
विपिन वास के बीच नार सीता को त्रास दिखाया ॥३॥
पतीव्रता थी नार सयानी पतीव्रत धर्म न छोड़ा ।
मरना तक मंजूर किया नहीं धर्म से मुखड़ा मोड़ा ॥४॥
आज पतीव्रत धर्म का बहिनों रहा न तुम को ख़याल ।
रामचन्द्र कहैं चलो हमेशा सीता की सी चाल ॥५॥

॥ भजन नं० ९ ॥

टेक-भाई धर्म की नैया बचा लेनारे डूबी जाती किनारे लगा देनारे ।

मिल आपस में सब भाई बनो एक दूजे की सब ही सहाई बनो । पुरुषार्थ का बीड़ा उठा लेनारे ॥१॥ डूबी०॥ यह धर्म की नाव हमारी है-पड़ी घोर भँवर मंझधारी है। कोई ऐसी तजवीज़ बना लेनारे ॥२॥ डूबी०॥ हाय ! पापों से नैया ये भारी हुई, इसी कारण से भारी लाचारी हुई । कर्म धर्म के चप्पे लगादेना रे ॥ ३ ॥ डूबी० ॥ इस नैया से

जिन की जुदाई हुई- ग़ोते खा २ के जिनको सौदाई हुई ।
तिनको कर गहके साथ मिलालेना रे ॥४॥ डूबी० ॥ स्वामी
आये विरोधन के टारन को-संसार की दशा सुधारन को ।
तुम क़दम न पीछे हटा लेना रे ॥ ५ ॥ डूबी० ॥

॥ ग़ज़ल क़व्वाली नं० १० ॥

छोड़ो न तुम धर्म को चाहे जान तन से निकले
सच्चा सखुन हो लेकिन शीरी दहन से निकले-१
जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी कुल धर्म्म के सहारे
सूरज व चांद तारे सारे फ़लक से निकले-२
अग्नि का धर्म्म दाहक जब तक है उस में क़ायम
नहिं गैर की ये ताक़त हो पास उस के निकले-३
फिर अग्नि का धर्म्म जब उस में नहीं है रहता
चींटी भी उस के ऊपर बेख़ौफ़ होके निकलें-४
सुत तात मात बन्धु नहीं साथ कोई जाता
स्त्री भी रोती दर तक बाहर क़दम न निकले-५
मरने के बाद भी है एक धर्म्म साथ जाता
पस ध्यान दिल से हरगिज़ इस का कभी न निकले-६
ब्रह्मा से जैमिनी तक जितने हुए हैं फ़ाज़िल
उपदेश धर्म्म ही के उन के दहन से निकले-७
दशरथ के राम लछमन एक धर्म्म ही की ख़ातिर

भजन नं० १४

टेक–रक्षा कीजियो जी मित्रो गिरे हुए भारत की।

जो कीया पाया तुमने हो जाओ हुशियार।
तन मन धन को अर्पण कर के देश का करो सुधार ॥ १ ॥
सत्पुरुषों से यही प्रार्थना सुनिये दे कर ध्यान।
तन मन धन से सब मिल कर के करो धर्म सनमान ॥ २ ॥
जब से तुमने धर्म छोड़ कर अधर्म लिया धार।
तभी से मित्रो आर्य्यावर्त्त की हो रही मिट्टी ख़्वार ॥ ४ ॥
रक्षा करो वीर्य्य और बल की मत करो रंडीबाजी।
बुरे कर्म का दंड मिलेगा पंडित हो या काजी ॥४॥
रंडीबाजी मदिराबाजी छोड़ो सुल्फ़ेबाजी।
बुरे कर्म से मुखड़ा मोड़ो बन कर मित्र समाजी।५।
रामचन्द्र की यही प्रार्थना गहो धर्म के रस्ते।
नर से नर नारी से नारी मिल कर करो नमस्ते।

कवित्त नं० १५

कवित्त–एक रोज़ अरे मित्र आप की ये हिन्दू क़ौम भारत के बीच बिलकुल मुर्दा कहाती थी ॥ २ ॥ क्योंकि हिन्दू क़ौम में ये तीन बातें ज़िन्दों की हाज़मा हिफ़ाज़त और तमीज़ नहीं पातीं थीं ॥ २ ॥ इस लिये इसमें ये तीन बातें नहीं मिलीं तभी तो यह हिन्दू क़ौम मुर्दा नज़र आती थी ॥ ३ ॥ कहे

अब तक जो मांस मदिरा आदी के खाने वाले ॥ ६॥
हम को तो चाहिये है इक आत्मिक इमारत ।
हम क्या करेंगे बन कर आली मकान वाले ॥ ७ ॥
जितने हैं दृष्टिगोचर होंगे फ़िदा फ़ना सब ।
अदना सी शान वाले आली निशान वाले ॥ ८ ॥
अतएव मित्र दृष्टी से देखो कुल जहां को ।
हिन्दू हों या मुसलमां गोरे हों या हों काले ॥ ९ ॥
दुनिया है चन्दरोज़ा मत होवे ऐसा ग़ाफ़िल
उठ बहुत सो लिया तू जो करना हो सो करले ॥ १० ॥

ग़ज़ल नं० १३

कर जाओ काम दोस्तो भारत की शां रहै ।
दुनिया में तुम रहो न रहो यह निशां रहै ॥
तूफ़ां हैरान तीर है लहरें हैं जोश पर ।
उठ बैठो जिस में किश्ती बचे बादबां रहै ॥ १ ॥
तुम नस्ल के हफ़ीज़ बनो कुछ तो कर दिखाओ ।
ता नाम लेवा कोई तो ऐ महरबां रहै ॥ २ ॥
कैसा ज़माना आया कि तख़्ता पलट गया ।
अब वह न गुल न बाग़ न वो बाग़बां रहे ॥ ३ ॥
अब ग़ौर करने सोचने का वक्त है कहां ।
खूं भर दो अपना जिस में कि ये नीमजां रहै ॥४॥

क्या कुछ गया किसीके साथ, हा! पर ध्यान क्यों न धरता है १
उतरी बालकपन की भंग, टूटा तरुणाई का तंग।
चढ़ने लगा जरा*का रङ्ग, तो भी नेक नहीं डरता है ॥२॥
होगा अन्त काल का योग, तन से छूटेगा संयोग।
आकर पूंछेंगे पुर लोग, अब क्यों अभिमानी मरता है ॥३४
अब भी वैर विरोध बिसार, कर ले औरों का उपकार।
प्यारे शंकरको उरधार, क्यों नहीं भवसागर तरता है ॥३

गज़ल क़व्वाली नं० १२

उस को जो देखना हो योगी हो ध्यान वाले।
आनन्द हम जो चाहें हों ब्रह्मज्ञान वाले ॥१॥
क्या शोक है फिर इस का गर हम नहीं रहेंगे।
जब रह सके न यहां पर आली निशान वाले ॥२॥
वह रोज़ हो खुशी का तक़लीद में उमर के
वेदों के मौतक़िद हों यह सब कुरान वाले ॥३॥
वेदों की फिर हक़ीक़त मालूम हो उन्हें कुछ।
वेदार्थ करना सीखें इंगलिश ज़बान वाले ॥४॥
हों ओ३म् के उपासक अमरीका और यूरुप।
जापान चीन वाले हिन्दोस्थान वाले ॥ ५ ॥
इन देशों को सुधारें अब चल के आर्य्य लीडर।

* जरा—यानी बुढ़ापा—

पृथ्वी का राज तज कर जंगल को घर से निकले-८
गोविन्दसिंह के बच्चे दीवार में चुने जब
अलफ़ाज़ आख़िरी ये छोड़ूं न धर्म्म निकले-९
इसलाम के मुक़ाबिल सिर धर्म्म पै कटाया
सद आफ़रीं हक़ीक़त बिरला ही तुमसा निकले-१०
दयानन्द जी ने देखा है धर्म्म बिस्ले मुर्दा
दे जान उस को अपनी थे धर्म्मवीर निकले-११
जिसने ज़मीं और ज़र हित मारे हक़ीक़ी भाई
रोता था वक़्त रहलत चश्मों से अश्क निकले-१२
जिसने था कुल ज़मीं पर गाड़ा निशान शाही
दोनों थे हाथ ख़ाली अर्थी पै जब वह निकले-१३
जितने हैं जड़ व चेतन पाबन्द कुल धर्म के
इन्सां कहाने वाले मुनकिर धरम से निकले-१४
राधाशरण धरम की महिमा मैं क्या सुनाऊं
अक़ले सलीम का तो क़ासिर ही इस से निकले-१५
रहना है थोड़ा यहां, कुछ सोच तो दिल में करो।
घमण्ड इतना मत करो, मौत से कुछ तो डरो॥

भजन नं० ११

टेक-तेरे झूठे हैं सब ठाठ इन पर क्यों घमण्ड करता है।
भिक्षुक और मेदिनीनाथ, जाते देखे रीते हाथ।

तजा सह मुदा नहीं तो संतान तक क्यों इन से छीन छीन विदेश भेजी जातीं थीं ॥ ४ ॥

भजन नं० १६

फेर ज़िन्दा किया रे मित्रो इस मुर्दे भारत को—
आज हाज़मा और हिफ़ाज़त ये दोनों दें दिखलाई ।
तभी तो इन से बच कर निकलें मुसलमान ईसाई ॥ १ ॥
जिन वेदों को कहते थे सब क़िस्से और कहानी ।
आज उन्हीं वेदों की आज्ञा है सब के मनमानी ॥ २ ॥
जिस आपस के बैर भाव से मिटा था तख़्त और ताज ।
आज उस के अंकुर को तोड़ कर क़ायम किये समाज ॥ ३ ॥
सब ने सब का छोड़ दिया था करना पर-उपकार ।
आज उस के एवज़ में मित्रो खुदग़र्ज़ी पर छार ॥ ४ ॥
धन्य धन्य श्रीस्वामी जी की मुर्दों को बख़्शी है जान ।
प्राण नहीं थे इसलिये हम को देगये अपने प्राण ॥ ५ ॥
उन के पीछे सच्ची ज़िन्दगी का सबूत है भाई ।
क़दम न पीछे हटा मित्र चाहे छुरी पेट पर आई ॥ ६ ॥
मसीह ने मुर्दे जिन्दे किये झूठ गप्प है भाई ।
ऋषी दयानन्द के जिन्दे यह प्रत्यक्ष दें दिखलाई ॥ ७ ॥
अब नहीं रहे हैं दुश्मन तुम्हारे देखो आंख उठाई ।
यह तो सफ़रमैना की पल्टन करती चले सफ़ाई ॥ ८ ॥

तेजसिंह यह था काम उस का सोचो मित्र अख़ीर ।
डेढ़ अरब के मुकाबले पै अड़ा अकेला बीर ॥९॥

भजन नं० १७

सांची मान सहेली परसों प्रीतम लेवे आवेगो–टेक–
मात पिता भाई भौजाई सब से राज सनेह सगाई ।
दो दिन हिलमिल काट वहां है फिर को तोहिं पठावेगो १
अब को छैता नाहिं टरेगो– जानो पिय के संग पड़ेगो ।
हम सब को तेरे बिछुरन को दारुण शोक सतावेगो ॥२
चलवे की तैयारी करले–तोशा बांध गैल का धर ले ।
हालों हाल बिदाकी बिरियां–को पकवान बनावेगो । ३
पुर बाहरलों पीहर वारे– रोवत संग चलेंगे सारे ।
'शंकर' आगे आगे तेरो डोला मचकत जावेगी ॥ ४ ॥

भजन नं० २४

(हकीकत राय के भजन ठा० तेजसिंह जी के)

—बनाये हुए—

दोहा ।

इतना सुनकर रोपड़ी–छाती लिया लगाय ।
ज़ार ज़ार रोती हुई–रही सुत को समझाय ॥

भजन नं० १८

रही माता समझाय मानो जी कुमर हमारे ॥

बेटा बदकिसमत मेरी–तेरी देखी जंज़ीर और बेड़ी
क़तल करवाय दियो जाय–लेकर के तेग़ दुधारे ॥ १ ॥
इक सूरत बरी की बताई हो जावे ये जिससे रिहाई।
बेटा सुनले कान लगाई जो अहले इस्लाम हो जाय।
हरगिज़ न जाओगे मारे ॥ २ ॥
जो क़तल किया जावे तू फिर मुझ को कहां पावे तू।
और इस्लाम जो हो जावे तू कभी तो सूरत मिल जाय॥
हाय नैनों के तारे ॥ ३ ॥
यों बोले हक़ीक़त बाणी मेरी माता करे नादानी।
ये नाता है झूंठा जिस्मानी जिस्म ले फिर मिल जाय।
फिर धर्म को क्यों ही बिसारें ॥ ४ ॥

दादरा नं १९

टेक–कैसे छोडूं धर्म्म मोहि प्यारा—

येही धर्म हरिश्चन्द्र ने न छोड़ा–जाय नीच के घर में किया था गुज़ारा–१–येही धर्म्म रामचन्द्र ने न छोड़ा–तज राज पाट वो वन को सिधारा–२–येही धर्म्म मोरध्वज ने न छोड़ा इकलौते सुत के धरा शीश आरा–३–कहते तेजसिंह ऐसे हक़ीक़त फिर कैसे जावे ये मुझ से विसारा–४

भजन नं० २०

टेक– मारो बेशक मेरे तलवार–करो धड़ से अलग सिर मेरा
नहीं कभी धर्म को छोडूं–नहीं धर्म से मुखड़ा मोड़ूं

नहीं अधर्म से नाता जोड़ूं–अभी दीजे धड़ से ये गर्दन उतार–१
जब अन्त समय वो आता–संग चलें न सुत पितु माता
एक धर्म साथ में जाता–इसे मैं कैसे डारूं बिसारा–२
सब मरघट तक जाते हैं–नहीं आगे काम आते हैं
खुद आप आग लाते हैं–जिस्म को करदें जला के छार–३
ये जीव अमर नहीं मरता–इसलिये नहीं मैं डरता
यद तेजसिंह यों भरता–हकीक़त कहते न करिये अपार–४

भजन नं० २१

दोहा–बस अब ज्यादा मत कहो, मतना हो दिलगीर ।
छोड़ सको तो छोड़ दो, नहीं अब करो अखीर ॥ १ ॥
भजन–क़तल करवाय दो जी मुझ को मरना है मंजूर (टेक)
भूमण्डल का राज्य मिले और मिले किला सोने का
तो भी अपना धर्म छोड़ कर–नहीं तुर्क होने का–१
धर्म छोड़ कर बहिश्त पाऊं–पाऊं ग़िलमां हूर
इस जीने पे लानत भेजूं–डालूं सब पर धूर–२
ये सारे सुख धर्म के पीछे–सब कुछ ये सामान
इसका पाकर भी तैयार हैं वो भूमी शमशान–३
तेजसिंह यों कहैं हकीक़त धर्म नहीं खोने का
इस अपयश की वही को निज कुल में नहिं बोने का–४

भजन नं० २२

पती को पूज लो री है वह असली देव तुम्हारा ॥
बाल अवस्था मात पिता ने पालन किया तुम्हारा ।
तरुण अवस्था में पति मालक असली देव तुम्हारा ॥
पाणिग्रहण किया जब तुम ने कीनी कड़ा प्रतिज्ञा ।
उसी नियम पर चलना चहिये मानो पति की आज्ञा ॥
सब से बड़ा देव पति जानो इस से बड़ा न कोई ।
उत्तम से उत्तम फल इस का धर्म्म पती प्रति होई ।
पातिव्रत को जीते जी तुम कभी न छोड़ो प्यारी ।
सत्य धर्म्म पर चलो हमेशा पती की आज्ञाकारी ॥
असली धर्म्म भजन द्वारा से दिया तुम्हें समझाई ।
अर्थ धर्म्म के कारण करते रामचन्द्र कविताई ॥

भजन नं० २३

ध्यान धर देखना जी नहिं औलाद मिले पूजन से—टेक ॥
कब्र ताज़िये जिन्द फरिश्ते कितने हू पूजो प्यारी ।
बकरा मुर्गा पेंटा काट के बनी फिरो हत्यारी ॥ १ ॥
चाहे पूजो काली माई या पूजो चामुंडा ।
चाहे स्यानन को बुलवाकर बांधो गले में गण्डा ॥ २ ॥
पूजो मीयां और भवानी आक ढाक जंजाला ।
दिन और रात न्हवालो पत्थर तो न मिलें नंदलाला ॥३॥

बुला बुला के घर में जोगिया जाहरपीर मनालो ।
चाहे पोप जी को बुलवाकर दुर्गा-पाठ करालो ॥ ४ ॥
दुबक छिपक कर सास सुसर से कितना माल लुटादो ।
स्याने दिवाने लुच्चे गुण्डेन पूरी भात खिला दो ॥५॥
रामचन्द्र की आज्ञा मानो यही वेद की शिक्षा
अशुभकर्म तज पतीव्रत धारो सुफल होय जब कुक्षा । ॥ ६ ॥

गज़ल नं० २४

करे क्यों न याद तू उसको जहां जिस ने बनाया है ।
बिदूनह बांस बल्ली के अरश तम्बू तनाया है ॥
न थी धरती न था अम्बर न कोई जीवधारी था ।
उसी ने शक्ति अपनी से इसे निर्म्मित कराया है ॥ १ ॥
किये रोशन सितारे चांद सूरज चश्म तेरे भी ।
कि इन से देखले तू क्या अनौखा रंग रंगाया है ॥२॥
न तू मेरा न मैं तेरा असल तो मामला है यह ।
हुआ मदमस्त माया में उसे बिलकुल भुलाया है ॥३॥
न तुझको याद उस दिन की कि क्या २ क़ौल कीये थे ।
तभी तो रामचन्दर तू अजब उल्लू कहाया है ॥४॥

भजन नं० २५

मन अब सायं सन्ध्या करोरे—टेक ॥
सूर्य्य अस्त भयो भोर कमल बीच खग बोलत तरु पर रे ।

धेनु आई गृह धूल उड़त है तिमिर छायो घर २ रे ॥ १
दीपक बारो शुद्ध सनेह सों, चकवी चली है उधर रे ।
प्राणायाम कर गायत्री जप ओ३म् नाम चित धररे ॥ २ ॥
हवन यज्ञ कर स्वाहा २ हो ध्वनि जिधर तिधर रे ।
दिन तेरा सब झगड़ों में बीता पाठक प्रभू को सुमर रे ॥३॥

दादरा नं० २६

जगाय रहे हैं जागो कौन नींद सोये ।
कोई चोरी जालसाजी कोई करता रंडीबाजी ।
कोई जूए का दुन्द मचाय रहे हैं ॥ १ ॥
कोई पीता शराब कोई कलिया कबाब,
कोई चर्सों की चिलमें उड़ाय रहे हैं ॥ २ ॥
कोई प्रतिमा पुजावें पंडे पुजारी कहलावें,
कोई मुफ़्ती ये माल उड़ाय रहे हैं ॥ ३ ॥
कोई तीर्थ धामों जाते कोई गिरजे काबे धाते,
कोई ऊंची ऊंची बांगे सुनाय रहे हैं ॥ ४ ॥
तुम से कहते घीसाराम जिन भाटीपुर है ग्राम,
कर जोड़ जोड़ मानो समझाय रहे हैं ॥ ५ ॥

ग़ज़ल नं० २७

जो ऋषि दयानंद आगये, हमें सत्यमार्ग दिखा गये ।
१—जो पड़ा था नींद में देश भर गफ़लत हमारी देख कर ।

सुस्ती की चादर फेंक कर, हम सब को आन जगा गये ।

२—पृथक पृथक थे मत जहां, किया वेदमत सब फातहां ।
कर सकता हूं मैं नहीं बयां, आपस का द्वेष मिटागये ॥

३—गड़बड़ थी वेदों के भाष्य में, जाने थे जिनको हास्यमय ।
बतलाके ब्रह्म उपास्य में, मिथ्यार्थ वे बता गये ॥

४—वर्णाश्रमों का जो धर्म्म था, वेदानुकूल कर्म्म था ।
सच्छास्त्रों का जो मर्म्म था, सत्यार्थ कर के दिखा गये ॥

५—करना सन्ध्या हवन, चारो वेदों का जो अध्ययन ।
आर्याभिविनय का पठन, सेवा जो अतिथि बता गये ॥

६—सारे करो मिल एकता, आपस की छोड़ो द्वेषता ।
समाज यही अब टेरता, स्वामी जो हुक्म सुना गये ॥

७—अन्य की हो उन्नति अपनी न समझो अवनती ।
सतही में दो सम्मती, दुष्कर्म्म को हटा गये ।।

८—योनी मनुष्य की वार बार, मिलती नहीं सुन्ना यार ।
नेकी करो फिर उतरो पार, यही ऋषि हमें बता गये ।

९—यदि मोक्ष की इच्छा करो, प्राणों को अपने वश करो ।
यम आदि अङ्ग पालन करो, जो पतञ्जली बता गये ।।

१०—झगड़ा किसी से मत करो, मृत्यू से हर समय डरो ।
नृसिंह आत्मिक बल भरो, जो यह ऋषि करके दिखा गये।।

ग़ज़ल क़व्वाली नं०२८

वैदिक धर्म्म है सच्चा जो चाहे आज़मा ले ॥
जितनी हैं सत्य विद्या प्रचलित इस जहां में
सब का है वेद मख़ज़न आली ही जो निकाले ॥ १ ॥
युक्ती दलायलों से साबित यह हो चुका है
नेचर ही के मुताबिक़ मिलते हैं कुल मसले ॥ २ ॥
सच्ची तो बात यह है इस्लाम है तो यह है
करते हैं झूठे दावे बाईबिल कुरान वाले ॥ ३ ॥
कुदरत का जो नियम है सब के लिये वह सम है
इसके अटल नियम में इकसां हैं गोरे काले ॥ ४ ॥
कल्याणरूपवाणी वेदों में जो बखानी
सुख पायेगा वह सज्जन जो इस की आज्ञा पाले ॥५॥
भारत-निवासियों का पहले यही धरम था
पहले थे वह बहतर इन्सां शऊर वाले ॥६॥
वैदिक धरम के बल से स्वामी थे भूमंडल के
दिया छोड़ उसको जब से खुदी में हुए मतवाले ॥७॥
वेदों से हट गये हैं भ्रम में भटक रहे हैं
चलते हैं उलटे रस्ते लोगों ने जो निकाले ॥८॥
दुराचार बढ़ रहे हैं आपस में लड़ रहे हैं
एक का है एक दुश्मन भारतको को सम्हाले ॥९॥

खुदग़र्ज़ पण्डितों ने अन्धेर कर दिया था
वेदों को लोप कर के खुश थे पुराण वाले ॥ १० ॥
ईश्वर ने की जो दया ऋषि एक यहां पठाया
वेदों का खड्ग लेकर तोड़े कुफ़र के ताले ॥११॥
पूरण था ब्रह्मचारी योगी परोपकारी
महऋषि दयानंद स्वामी जिन जाल खोल डाले ॥१२॥
वेदों का भाष्य कर के युक्ती प्रमाण धर के
सत को सुझा दिया है ऋषियों के देह वाले ॥१३॥
हुआ सत का बोल बाला और झूंठ का मुंह काला
बल्देव जिस को शक है बेशक वो अब मिटाले ॥१४॥

ग़ज़ल नं० २९

करो परचार दुनिया में ओम् का नाम ले ले कर
बजा दो वेद का डंका ओ३म् का नाम ले ले कर ॥१॥
तुम्हें है आर्यो लाज़िम बनों वेदानुयायी सब
दिखाओ अमली जीवन को धर्म्म पर जान दे दे कर ॥२॥
करोड़ों बाल और बेवा बिलखते फिर रहे जग में
अनाथों की करो रक्षा इन्हें सामान दे दे कर ॥३॥
तुम्हारा फ़र्ज़ है प्यारो पढ़ें सब देश की नारी
बढ़ाओ उन की शोभा को उन्हें सन्मान दे दे कर ॥४॥

उठाओ शुद्धि का बीड़ा करो अब धर्म की रक्षा
मिलाओ बिछुड़े भाइयों को उन्हें तुम ज्ञान देदेकर ॥५॥
सुधारो वर्ण और आश्रम गई जो टूट मर्य्यादा
बनाओ फिर से द्विज उन को उन्हें विज्ञान देदे कर ॥६॥
करो सब जीवों की रक्षा अहिंसा धर्म्म को धारो
बचाओ जान औरों का यह अपने प्राण दे दे कर ॥७॥
हुये सम धर्म्म की खातिर गये कुरबान हो कितने
उन्हों की हिष्ट्री देखो ज़रा तुम ध्यान दे दे कर ॥८॥
भरत और राम से भ्राता कहां हैं कृष्ण से योगी
पिता भीषम से बलधारी लड़े मैदान देदे कर ॥ ९ ॥
कहां बलि कर्ण मोरध्वज कहां हरिश्चन्द्र से दानी
गये कर नाम जो अपना सच्चा दान देदे कर ॥१०॥
गुरु गोविन्द के बच्चे हक़ीक़तराय से बालक
हुए परलोक के वासी धर्म्म पर जान देदे कर ॥११॥
श्री स्वामी दयानन्द और मुसाफ़िर वीर ने प्यारो
किया उद्धार भारत का स्वयम् बलिदान देदे कर ॥१२॥
तुम्हारा भी तभी वसदेव जी जीवन सफल होगा
कथा जब उन्हीं ऋषियों को सुनोगे कान देदे कर ॥१३॥

कव्वाली नं० ३०

ऐ मांस खाने वालो क्यों ज़ुल्म ढारहे हो
क्यों बेकसों पर नाहक़ छुरियां चला रहे हो ॥१॥

सोचो तो दिल में अपने ख़ालिक़ वही है उन का
जिस को कि आप ख़ालिक़ सब का बता रहे हो ।।२।।
क्या हक़ ये आप का है बतलाईये ज़रा तो
मख़लूक़ क्यों ख़ालिक़ के तुम क्यों मिटा रहे हो ।।३।।
ख़लक़त के जो नफ़े की ख़ातिर बनाये हैवां
तुम काट २ उनकी हड्डी चबा रहे हो ।।४।।
लेते हो दूध और घी मक्खन मलाई इन से
तेग़े सितम गलों पै उनके घुमा रहे हो ।।५।।
बेदम तड़प रहे हैं इस बेकली से बेकस
खंजर ले तुम गलों पै जिन के घुमा रहे हो ।।६।।
जिन की कमाई खा खा पालो हो जिस शिकम को ।
तुम उस शिकम को उन को क़बरें बना रहे हो ।। ७ ।।
हड्डी वो मांस खा कर ख़ूने सितम बहा कर ।
क्यों दूध घी का चश्मा शीरीं सुखा रहे हो ।। ८ ।।
मोहसिनकुशी नहीं गर तो क्या है यह बतादो ।
अहिंसा करें जो तुम पर उन को सता रहे हो ।। ९ ।।
बेदर्दो बेरहम क्यों इतने हुए हो भाई ।
जो ख़ून बेगुनाहों का यों बहा रहे हो ।। १० ।।
इस बात का ही हम को भारी तअज्जुब है ।
क्यों इल्मों अक़्ल वाले इंसां कहा रहे हो ।। ११ ।।

आखिर नहीं मिलेगा सुख तुम को भी कदाचित् ।
अब दूसरों के दिल को नाहक़ दुखा रहे हो ।। १२ ।।

कव्वाली नं० ३१

प्रचार हो रहे हैं दुनिया में वेद मत के ।
बक़रार हो चले हैं स्वामी के वाक् मत के ॥
हिन्दू मुसलमां जैनी हरएक सभाएँ कर के ।
तजते कुरीति अब हैं नियम हैं एक उस के॥
वैदिक धरम के माफ़िक बुद्धी में जो कि आवे ।
पलटे हैं अर्थ सब ने निज धर्म ग्रंथ मत के ॥
गुरुकुल हैं जा बजा पर हम को नज़र जो आते ।
ब्रह्मचारी आश्रम को देखेंगे फेर डट के ॥
होवेंगीं नारी विदुषी विद्या को पढ़के यारो ।
रक्षक धरम की होंगी सेवा में अपने पति के ।।
बचपन का ब्याह तज के मदिरा वो मांस छोड़ा ।
बल बुद्धि आयू बढ़ के होवेंगे शांत चित के ॥
बिछुड़े मिलेंगे भाई आपस में प्रेम कर के ।
बाबू ये मातृभाषा मेटेंगे झगड़े नित के ॥

भजन नं० ३२

(शुद्धि के विषय में)

शैर- वेद के अनुयायियों भारत सपूतो सज्जनो ।
है निवेदन आप की सेवा में दिल दे कर सुनो ॥
आप के कितने ही भाई आप से जो जुदा हुए ।
उन को सीने से लगाओ जो कि तुम पर फ़िदा हुए ।
क़हर के अय्याम में जो कुछ हुआ सो हो गया ।
रह गया उस को सम्भालो हो गया सो हो गया ॥
ग़ौर से सोचो तो कुछ भी है नहीं उन का क़सूर ।
गरदिशे अय्याम में आता है अक़्लों में फ़ितूर ॥
रह नहीं सक्ती है कुल-मर्याद आपतकाल में ।
फ़र्क़ हो जाता है कुल व्यौहार औ आचार में ॥
अमन की हालत में फिर उस को सुधारा जाता है ।
धर्म्मशास्त्र में भी वह प्रायश्चित पुकारा जाता है ॥
उस के करने में न तुम को जी चुराना चाहिये ।
कर्म्म वैदिक में भी अब दिल को लगाना चाहिये ॥
अब उठो सोने में तुम को कई ज़माने होगये ।
इस नींद ग़फ़लत से जो ये अपने बिगाने होगये ॥

चूहड़े तक बन रहे कृश्चियन लाखों हिन्द में ।
क़हत में हो जाते हैं बेदीन लाखों हिन्द में ॥
तुम पड़े सोते हो लाखों छिन गये लख़्ते जिगर ।
खोल दो आंखें तुम्हारा ख़्याल है मित्रो किधर ॥
बेख़बर तुम्हें देख कर दयानन्द तुम को जगा गये ।
धर्म की वेदी पै खंजर लेखराम भी खा गये ॥
फिर भी इन वाक़ों से सीखा है नहीं तुम ने सबक़ ।
सोते तुम कब तक रहोगे खोल दो मित्रो पलक ॥

टेक—भाइयों के मेल मिलाप से कहो कैसे धर्म्म जाता है ॥
नहीं गया धर्म्म चीनी सफ़ेद खाने से ।
नहीं गया धर्म्म कन्या के मरवाने से ॥
नहीं गया धर्म परनार के बहकाने से ।
व्यभिचार किये और हमल के गिरवाने से ॥

शेर—रंडियों के इश्क़ में रुख़सारों का बोसा लिया ।
लब से लब को मिलाय पानी थूक तक उन का पिया ।
आतिशक भी फूट निकली ख़ून तक गंदा किया ॥
इतने कुकर्म सब किये पर धर्म नहीं अपना दिया ।
लिया मद्य मांस भी खाई, और शफ़ाख़ानों की दवाई ।
दीं झूठी लाखों गवाही, ज़रा धर्म पै चोट न आई ।

लिखे दस्तावेज़ बहु झूठे, लोग बहु लूटे, जात से न छूटे,
हुआ पेट भरा सब पाप से, कैसा अन्धेर खाता है ॥ कहो० १ ॥

नहीं गया धर्म लड़की के बेच खाने से ।
नहीं गया धर्म परधन को लूटलानेसे ॥
चोरी जारी छल फरेब फैलाने से ।
नहीं गया धर्म गौओं के कटवाने से ।

और—पूजते मुर्दे मुसल्मानों के हिन्दू सैकड़ों ।
देते क़बरों पर ज़कातें खाते हिन्दू सैकड़ों ॥
मौलवी मुल्लाओं के घर जाते हिन्दू सैकड़ों ।
बच्चों के मुँह में थुकाते हाय हिन्दू सैकड़ों ॥

पर जो कोई तुम्हारा भाई, किसी क़दर पेच में आई ।
हो गया यवन ईसाई, उसे लेने से धर्म नश जाई ।
यह कैसे ग़ज़ब की बात, सही ना जात, सोचकर भ्रात,
कहो इन्साफ से ॥ गर धर्म से कुछ नाता है ॥ कहो० २ ॥

मैं कहता हूँ कर जोड़ सुनों सब भाई ।
इस मूरखता ने तुम्हारी कुगति करवाई ॥
इस नासमझी ने लाखों तुम्हारे भाई ।
किये तुम से जुदा और दुश्मन दिये बनाई ॥

और-देखिये मिट्टी ख़्वारीया हिन्दुस्तान की ।

सल्तनत इस्लाम में सब को पड़ी थी जान की ॥
था ज़माना क़हर किस को ख़बर थी ईमान की
दम लबों पर था न थी परवाह शौकत शान की ॥

लाखों ही तुम्हारे भाई, लिये जबरन यवन बनाई।
हो गया वक्त दुखदाई, उन्हें अब तो लेउ मिलाई ॥
उन्हें धर्मशास्त्र अनुसार, करो स्वीकार, ये वारंवार।
अर्ज है आप से ॥ यही मारग सुखदाता है ॥ कहो० ३ ॥

जो भाई पतित हो जाय शरण में आवे।
तो बिरादरी उसे शीघ्र शुद्ध करवावे ॥
गर धर्मसभा इस कर्म से हाथ उठावे।
तो सभा पतित हो जाल शास्त्र बतलावे ॥

शेर—आप के भाई पतित गर शुद्ध नहीं किये जायंगे ॥
क़ौम के दुश्मन बनेंगे तुम को खूब सतायंगे।
ग़ौर कर देखलो हम तुम को क्या समझायँगे।
क़ौम की गरदन पै उन के सारे पाप भी आयँगे ॥

इस मूरखता ने तुम्हारी, मुरदार क़ौम कर डारी।
अब हूं तो सोच विचारी, बिगड़ी को लेउ सुधारी ॥
बलदेव कथन पर ध्यान, धरे विद्वान, बड़ा नुक़सान।
हुआ इस पाप से ॥ दिन २ दुख दिखलाता है ॥ कहो० ४ ॥

भजन नं० ३३

टेक–ग़ौर कर देखना जी है नहीं खुदा किसी मसजिदमें।
मुसलमान की मसजिद देखी हिन्दुओं के मन्दिर सारे ॥
मुल्ला देख पुजारी देखे बड़े बड़े तिलकन वारे ॥१॥
मुल्ला जी की लम्बी डाढ़ी पुजारो के लम्बे केश।
इन दोनों का एक अर्थ है जग ठगने का भेष ॥ २ ॥
मुसलमानों की कुर्बानों का घर घर रहे चवैया।
ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्यों के घर पूजें नित्त जखैया ॥ ३ ॥
मार कीक चिल्लाते हाफ़िज़ कहें खुदा सुने मन्दा।
इधर पोप घड़ियाल बजाकर डालें लूट का फन्दा ॥ ४ ॥
होंय ताजिये सालीना में इधर करें जन्माठें।
मुसलमान तारीख़ लगावें पोप बतावें आठें ॥ ५ ॥
बक़रईद मुसलमानों की बकरा काटे जावें।
चैत क्वार में हो नवदुर्गा भैंसे तक कट जावें ॥ ६ ॥
जब कोई काम जरूरी आवे क़स्म खुदा की खावें।
बेईमान बिना स्वार्थ के गङ्गाजली उठावें ॥ ७ ॥
भारत में नित हिन्सा होती सोचो मित्र यह कैसा।
क्षत्रीपन की ओर निहारो क्वार में काटें भैंसा ॥ ८ ॥
मथुरा मक्का और मदीना काशी में फिर आया।
रामचन्द्र कहे साफ़ किया दिल दिल में ईश्वर पाया॥ ९ ॥

भजन नं० ३४

पौदा उसी ऋषी का यार देखो लहर २ लहराया—टेक
इस को तनक न जानो यार है यह कल्पवृक्ष का सार
शाखें फैलेंगी अपरम्पार करेंगी भूमण्डल पर छाया—१
कल्ला फूट चले हैं भाई अब तुम देखो आंख उठाई
करियो इस की ओर लखाई बढ़े दिन दूना रात सवाया—२
पूरन जब बढ़ कर होवेगा देश के सकल दुःख खोवेगा
भारत सुख से जब होवेगा हमारे दिल में यही समाया—३
मेरी अर्ज करो मंज़ूर करके पक्षपात को दूर
सोचो इस को मित्र ज़रूर छन्द यह तेजसिंह ने गाया—४

अर्ज मांड़—भजन नं० ३५

गौ माता करत पुकार प्रभु जी रक्षा कीजे हमार—टेक
दुनिया के धन्धों में अन्धों में फंसकर किया न कुछभी विचार
बाबू जी बन २ के टम २ पर चढ़के भगवतको दिया बिसार-१
शादी व ग़मी लड़के के होने में किये ख़र्च हज़ार
खुशामद बरामद से जाकर लाकर रंडी की देखी बहार-२
जोरू और जोरूके भैया ने आकर पढ़ा कर बनाया गंवार।
जात बिरादर फ़ादर मादर सेवा न कीन्हीं सम्हार ॥३॥
ह्विस्की की चुस्की की खुश्की मिटाने को मुंह में दबाई सिगार
बाईसिकिल को सजा करके टन २ बजाकरके पहुंचे बज़ार ॥४॥

रीजनिंगकी रोटीको लौजिककी लौंजीसे खानेसे हुआबिकार।
ईश्वर, नअल्ला न जीसिस, क्राईस्ट, राधा, न कृष्णमुरार ॥५॥

भजन * नं० ३६

तुम बिन हे ! प्रभु दीनदयाल जगतमें कोई न हितू हमारौ

अस्ताई

जौ लौं है शरीर में शक्ती, तौ लौं करैं कुटुम्बी भक्ती ।
फिर वेई बातें करें विरक्ती, कहि २ कायर कूर धुतारौ ॥१॥
अबलों जन्म जहाज घनेरे, या संसार सिंधु में गेरे ।
ते सब खाइ २ चकफेरे, बूड़े अब लौ पार उतारौ ॥२॥
यह मन कामक्रोध को चेरौ, हैगयौ त्यागि सिखावन मेरौ ।
अरि अरि औगुन गहै अनेरौ, दुर्मति तुमतें करै किनारौ ॥३॥
हा ! हा ! ! नाथ कृतारथ कीजै, अब अपनाइ अंकमें लीजै ।
सब सुख रामचन्द्र को दीजै, करि उरमें निज प्रेम पसारौ ॥४॥

भजन नं० ३७

पतिव्रता धर्म्म जोई धरती सोई धन्य धन्य है नारी (टेक)
आप तरै अरु कुल को तारै, जगमें विमल कीर्ति विस्तारै ।
अपने तन को आरती, बनके प्रीतम की प्यारी ॥१॥

---

* इस प्रकार के काव्य शास्त्रानुकूल नवीन भजनों को हमारे यहां से (श्री चन्द्र सरोवर) मंगाइये मूल्य =) है ।

उसके यश प्रताप के आगे, शशिमलीन रवि सीतल लागे।
सब सुरसिद्ध सदा अनुरागे, पूजें हैं ज्यों भारती,
कहि कहि पवित्र मतवारी ॥२॥
नौऊ निद्धि सिद्धि हू सारी, रहतीं उसकी आज्ञाकारी।
अपनी अपनी वारी, करती उसकी आरती,
सारे मदमान विसारी ॥३॥
रावण से बलवान विचारे, उसकी सहज शक्ति से हारे।
कामी कुमति कुकर्म्मी सारे, दुष्टों को संहारती ॥४॥
सब से ऊंची पदवी पावै, उसकी महिमा कही न जावै।
रामचन्द्र फिर कैसे गावै, जो है पूरण पारती,
करि दूर अधोगति सारी ॥५॥

भजन नं० ३८

कुल बोर कपूत कमाई क्या करते हैं जगमें आके (अस्ताई)
पी पी शराब अरते हैं, उठि उठि गिर गिर परते हैं।
निज जन्म सुफल करते हैं, मुँह में कुत्तों से मुतवाके ॥ १ ॥
वेश्याओं के घर जाते, तन मन धन भेट चढ़ाते।
अनुभूत परम पद पाते हैं, लाते आतिश उपजाके ॥ २ ॥
व्यभिचार अपार मचाते, कुल की मर्य्याद मिटाते।
पुरुषों का मान बढ़ाते हैं, पीछे ताली पिटवाके ॥ ३ ॥
परद्रव्य हरण को चोरी, करते हैं सीना जोरी।
ठगते कर बातें भोरी भोरे भक्तों को भरमाके ॥ ४ ॥

बनते विषयों के चेरे, आत्माभिमान को गेरे ।
सत संगति के नहीं नेरे, आते स्वप्न हु मांहि भुलाके ॥५॥
दिन रात कुकर्म्म कमाई, करते हैं चित्त लगाई ।
नहि सीखें सीख सिखाई, थाके " रामचन्द्र " सिखलाके ॥ ६ ॥

(कवित्त) नं० ३९

पेट चढ़ि पलना पै चढ्यौ बनि ललना औ गोद पै प्रमोद मढ्यौ चढ्यौ तू अनेक वार । पलिका पै चढ्यौ, चढ्यौ पलिकी पै चौक चढ्यौ, चढ्यौ चित्रसारी और नारी पै कियौ विहार ॥ वय चढ्यौ हय चढ्यौ हाथी चढ्यौ ,चढ्यौ रथ गाड़ गर्ब गढ़ पै चढ्यौ हुंकार । चारिक दिन में (चन्द्र) चाहत चिता पै चढ्यौ धर्म्म चरचा पै चढ़ि अबतौ अरे गमार ।

लावनी नं० ४०

(गौमाता की अपील)

मस्तक झुकाय के बिनवति गैया मैया ।
क्यों ! मोहि कसाइन को बेचत हौ भैया ॥ (अस्ताई)
मैंने ऐसौ अपराध कियौ का भैया ।
जासों चलवाऔ मेरे कंठ कुठारौ ॥
सब भांति सदा कीयौ उपकार तुम्हारौ ।
ताकौ यह बदलौ देहु न हृदय विचारौ ॥
अब तुम विन कोहै मेरौ दाता दैया ।
क्यों ! मोहि कसाईन को बेचत हौ भैया ॥ १ ॥

अपने मरिवे कौ सोच न मोको ऐसौ ।
तुम्हरी दुख दशा विचारि होत है तैसौ ॥
निष्कपट भाव में दूध पिलाऊँ जैसौ ।
सो तुम कों फिरि नहिं मिलि है क्यों हू वैसौ ॥
मेरे बिन कोहै तुम्हरे उदर भरैया ।
क्यों ! मोहि कसाईन को बेचत हौ भैया ॥ ३ ॥
जहां नित्य होत जप जोग जप ब्रत दाना ।
रिषि मुनि करते दधि दूधन से स्नाना ॥
तहां बहै रुधिर मेरे की नदी महाना ।
तुम्हरे आलस भयौ भारत बूचड़खाना ॥
सो नेंकन तुम कों सोचन उर अनलैया ।
क्यों ! मोहि कसाईन को बेचत हौ मेरे भैया ॥ ३ ॥
जेते हैं हिन्दू मुसलमान ईसाई ।
काहू सों मेरी नाहिन रंच लड़ाई ॥
काहू कों कबहू देति न जहर मिलाई ।
सब कों समान शुचि दूध पिआवति भाई॥
तृन दाबि दांत तर तुम्हरी लेहु बलैया ।
क्यों ! मोहि कसाईन को बेचत हौ भैया ॥ ४ ॥
निज दूध पिआवै माता है जग सोई ।
यह अटल बात जानें मानें सब कोई ॥

फिर कहौ रावरी बुद्धि कहां है भाई ।
ताकों काटत कटवावत नातौ खोई ॥
हौ तीस कोटि तुम मेरे सुत रखवैया ।
क्यों ! मोहि कसाईन कों बेचत हौ भैया ॥५॥
मैंने अमृत सम दूध जन्म भरि प्यायौ ।
निज पुत्रन हूं सों भली भांति कमवायौ ॥
अब मरनकाल मेरौ समीप है आयौ ।
तृण खाय रहूंगी और करूं नहिं दायो ॥
इतना ही प्रत्युपकार करौ कहि मैया ।
क्यों ! मोहि कसाईन कों बेचत हौ भैया ॥
गौ माता के तन में पुरता रटते हैं ।
तेतीस कोटि देवता नित्य अटते हैं ॥
मेरौ गर काटत वेई सब कटते हैं ।
मेरी उनकी हत्या सों देश पटते हैं ॥
या पाप परत हैं प्लेग अकाल महैया ।
क्यों ? मोहि कसाईन कों बेचत हौ भैया ॥७॥
करि चेत सुनौ मो बिन तुम अति दुख लैहौ ।
तनको कपड़ा नहि नाज पेट भरि खैहौ ॥
मति बनौ कृनारी दोऊ लोक नसैहौ ।
जग पाय अधोगति पाय पीटि मरिजै हौ ॥

डूबेगी तुम्हरी मध्यधार में नैया ।
क्यों ? मोहि कसाईन को बेचत हौ भैया ॥८॥
लघु लालच पर मति मेरौ कंठ कटाओ।
है आर्य्यपुत्र हरि नीच बने मति जाओ ॥
कौन बहकाय सो तुम मोहि बताओ ।
मो बिना जगत में रंचक चैन न पाओ ॥
मेरे समान को है तुम को सुखदैया ।
क्यों ! मोहि कसाईन को को बेचत हौ भैया ॥ ९ ॥
मेरी रक्षा में जब सब वीर अरौगे ।
तब भारत में संपति भरपूर भरौगे ॥
सहवासिनहु के संकट सकल हरौगे ।
कढ़िया दुर्गति सों बहु सुख भोग करौगे ॥
नित " रामचन्द्र " द्रवि है श्री कृष्ण कन्हैया ॥
क्यों ! मोहि कसाईन कों बेचत हौ भैया ॥ १० ॥

(दोहा)

सोवत हौ सुखनींद में सौरि सुरंगीतान
हा ! अनाथ बाहिर पड़े देहिं शीत सों प्रान ॥

(ग़ज़ल नं० ४१)

दया दीनों पै करने से दुखों से छूट जाओगे ।
जहां में कीर्ति होगी नाम दीनानाथ पाऔगे ।।अस्ताई।

अहा! क्या ही है दरदीली दशा इन दीन दुखियों की।
इसे भी देखकर क्या तुम दया दिल में न लाओगे ॥१॥
अरी अम्मा ! अरी अम्मा ! ! पुकारें रात दिन रो, रो।
पटकते सिर विचारों को कहाँ कब तक रुलाओगे ॥२॥
निरे अनजान बच्चे हैं नहीं कुछ बोध है इन को ।
उठा पुचकार कब कर प्यार छाती से लगाओगे ॥ ३ ॥
रहे है दृष्टि भोरी से सहारा तक तुम्हरा ही ।
कृपा का आप बरसा ताप इनके कब बुझाओगे ॥ ४ ॥
हजारों होगए भूखे मुसलमां और ईसाई ।
इन्हें भी त्यागकर अब क्या विधर्म्मी ही बनाओगे ॥५॥
पिता के प्यार के प्यारे दुलारे मात के भारे ।
किसी दिन ये भी थे ये ख्वाब क्या ! तुम दिल में लाओगे॥६॥
विनय ये (चन्द्र) की अब आप कर स्वीकार तन मन से।
इन्हें अपनाइ अपने जान सब संकट मिटाओगे ॥ ७ ॥

भजन न० ४२

हा! नहिं घटिजाओगे आप दास के दारिद दोष दरतें टेक।
तुम सब पुकार सों स्वामी, करुणा निधि अंतरजामी ।
जगदीन बंधु हौ नामी जी, दीनन प्रति पाल करेंतें ॥ १ ॥
भवसिंधु थिरन नहिं पाऊँ, लगि विषम बीचि बिकलाऊँ ।
तुमकों तजि काहि मनाऊँ जी, अब औघट आइ अरेतें ॥३॥

तरुणी तरुणाई जो है, सुत सम्पति देखि विमोहै ।
अवसर अथये नहिं सो है, जैसे तरुवर पात झरैतें ॥ ३ ॥
यह मोह चक्र भारी है, संसृत सत सुखहारी है ।
सारी मति गति मारी है, इसने दै दै नोंन जरैतें ॥ ४ ॥
जग जन्म मृत्यु की बेरी, निरुवारि दयानिधि मेरी ।
सुनि (रामचन्द्र) की टेरी जी टारौ यह व्याधि गरैतें ॥५॥

भजन नं० ४३

श्याम कल्याण

ऐरे मन मूंती अब छोड़ि दगा बाजी (टेक)
पाप किये अबलौं बहुतेरे अबहू तौ समझि अरेपाजी ॥१॥
भूत भजै विसराइ महाप्रभु हैरे कहा तेरी राजी ॥२॥
त्यागि महा महिमा की सामा पामरता तैंने साजी ॥३॥
(रामचन्द्र) तजि छाछि सड़ी कों खा मूरख माखन ताजी ॥४॥

गजल नं० ४४

हाय किश्ती हिन्द की थी ग़र्क़ होने के लिये ।
था अविद्या का भंवर इसके डबोने के लिये ॥१॥
आंधी और तूफ़ान खुदग़र्ज़ी का था छाया हुआ ।
नाखुदा हैरान थे तदबीर करने के लिये ॥२॥
छागया था सबपै आलम बे खुदी बेचारगी ।
हाय सब मजबूर थे बेमौत मरने के लिये ॥३॥
होगई इकबार रहमत फिर जो ईश्वर की इधर ।
आगये स्वामी दयानंद पार करने के लिये ॥४॥

वे सिनावर शेरदिल फिर लेके बल्ली वेद की ।
ले चले किश्ती को यारो पार करने के लिये ॥५॥
ले चलो किश्ती को स्वामी जिसतरह बतलागये ।
खूब है रस्ता ये रंगीं पार करने के लिये ॥६॥

शैर चेतावनी ४५

उठो तो जवानो घर से निकल कर कर ।
करो वेद प्रचार मुल्कों में चल कर ॥
ऋषि तमन्ना कर जल्द पूरी न रहजावो
न रह जावो दस्ते तअस्सुब को मल कर ॥
समाज अब रुकेगा न हर्गिज़ किसी से ।
ये फैलेगा दुनियां में चश्मा उबल कर ॥
करो उन्नति इसकी उद्योग करके ।
संभालेगा भूगोल भारत संभल कर ॥
दयानंद में जो तेज़ी थी दिखलाओ प्रय भाइयो ।
वही तुम भी मित्रो मेरे चाल चल कर ॥

भजन नं ४६

कहने सुनने का काम नहीं अब करके दिखलाओ (टेक)
१–चाहे कोई कौम हो भाई, जैनी इस्लामी ईसाई ।
करो सबके साथ भलाई, धर्म उन्हें वैदिक सिखलावो ॥
२– मुल्कों २ में जावो, जा वैदिक नाद बजाओ ।

सत वैदिक धर्म फैलाओ, आर्य्य तब सच्चे कहलावो ॥
३–जापान रूस विचारा, क्या अरब चीन तातारा ।
टरकी इटली जग सारा, वेदों की शिक्षा दिलवावो ॥
४-रोते हैं अनाथ बिचारे, नित मरें भूख के मारे ।
हाय माता पिता सिधारे, पिता तुम उनके बनजावो ॥
५–नित रुदन करें हैं बेवा, कोई रहा नहीं सुख देवा ।
गई छूट पति की सेवा, धैर्य्य तुम उनको बंधवावावो ॥
६– थी दशा हमारी कैसी, लिखी आर्य्यग्रन्थों ने जैसी ।
वही यत्न करो परदेशी, धुरन्धर बनके दिखलावो ॥
कहती ग्रन्थावलि जैसी-थी दशा हमारी वैसी ऽ.ब यत्न करो परदेशी उसेफिर करके सरसाओ॥

यहां से आगे चौधरी तेजसिंह जी कृत चित्तौर के भजन प्रकाशित किये जाते हैं ।

दोहा—देखो अब चित्तौर पर, चढ़ा अलाउद्दीन ।
यों कह कर के लाऊंगा, पद्मावत को छीन ॥

॥ कवित्त नं० ४७

पहली लड़ाई में ये हारा था इन से और दूसरा हमला किया ये आकर । पहली लड़ाई में गोरा वो बादल ने दिया था इसको यहां से हटा कर ॥ फिर पद्मावत की बिरह में दुबारा लाया फ़ौजें बहुत सी चढ़ा कर । कहै तेजसिंह फिर भी छै महीना तक लड़े क्षत्री तुर्कों को अति वीरता दिखा कर ॥

महारानी पद्मावती

दोहा—हां ! क्षत्री चित्तौड़ में, जो थे कई हज़ार ।
फिर भी उन से कई गुनीं, तुर्कों की तलवार ॥
ज्यों पानी में बुलबुला पा नहीं सक्ता पार ।
लड़े कहां तक क्या करें, आख़िर पाई हार ॥
फिर सब ने ऐसे कहा, क्यों करते हो देर ।
कपड़े पहनो केशरी, हाथ लेउ शमशेर ॥

॥ भजन नं० ४८ ॥

टेक-पहन लो केसरिया बाना, मरने में करो मत देरी ।
केशरिया वस्त्र मंगाओ, मत पल भर की देरी लगाओ ।
अपनी शमशेर उठाओ, है लाज़िम तुम को मर जाना ॥१॥
मंगा केशरिया बाने को, सजे मृत्यु के घर जाने को ।
फल शमशेर का खाने को, सजे सब चित्तौर के राना ॥ २ ॥
क्षत्रियों की लख मरदानी, सब जमा हुईं क्षत्राणी ।
आई पदमावत रानी, सुनो तुम उन का फ़रमाना ॥ ३ ॥
पति हम जो के कहा करेंगीं, तुम लड़ो तो हम भी लड़ेंगीं ।
तुम मरो तो हमभी मरेंगीं, तेजसिंह हो संग स्वर्ग पाना ॥४॥

भजन नं० ४९

दोहा—जब सब क्षत्राणियों ने, ऐसे कहा सुनाय ।
हमको भी अब केशरी, कपड़े देउ मँगाय ॥
टेक—ला दो शमशेर दूसरा, लड़ने को चलेंगीं संग में ।
संग में आप के चल करके, लड़ें शत्रुओं से बल कर के ॥

हरग़िज नहीं आवें हट करके, मान करेंगीं भंग हम।
जो दुश्मन होय तुम्हारा ॥ ला दो० ॥ १ ॥

हरग़िज नहीं धर्म्म हारेंगीं, मान शत्रुओं के मारेंगीं।
बाना वीरता का धारेंगी, चल कर उस रण रंग में ॥
देखो पुरुषार्थ हमारा ॥ ला दो० ॥ २ ॥

भजन नं० ५०

दुश्मन को तलवार हमारी का स्वाद ज़रा चखने दो।
हम सुख दुख में देवें सहारा, यही पतिव्रत धर्म्म हमारा
तो धर्म्म हमें रखने दो ॥ दुश्मन ॥ १ ॥

हम तुम्हारे संग मरेंगो, दुश्मन की खाक करेंगी आगे
हमें बढ़ने दो ॥ दुश्मन ॥ २ ॥ ॥ फिर वही ॥

आख़िर तो हम क्षत्राणी हैं, हिम्मत में हम लासानी
हैं। ऐसी ताक़त जिस्मानी है, चाहे सारे अंग में चले
आरा ॥ ला दो० ॥ ३ ॥

शत्रू हिम्मत देख हमारी, वो भी प्रशंसा करें तुम्हारी
अहो धन्य हैं ऐसी नारी, जो आई इस जंगमें, पद तेजसिंह
उच्चारा ॥ ला दो० ॥ ४ ॥

दोहा—जब सब क्षत्राणियों ने, ऐसे किया बयान
सब क्षत्री कहने लगे, इस में होगी हान ॥

कवित्त । ५१

इतना सुन कर क्षत्रियों ने ऐसे कहा सुनो प्यारी यह तो सब कुछ ठीक जो तुमने उचारी है। परन्तु वो बादशाह नहीं कोई बड़ा बेइन्साफ़ बड़ा अत्याचारी है। जो कहीं पकड़ पावेगा क्षत्राणी एक को भी तो फिर बात सारी बिगड़ जायगी हमारी है। कहैं तेजसिंह जो कही पद्मावती पकड़ी जाय उस की मंशा पूरी हो जो कुछ उसने विचारी है॥

भजन नं० ५२

दोहा-समझ सोच कर बात ये, ठहरी आखिरकार ।
सब चिन करके चिता में, जल कर होजाओ छार ॥

टेक-लगीन देरी देरी देरी, चिता चुनि के करी तैतार

क्षत्राणियों के बच्चे बाले, जो कर कर के प्रीती से पाले।
मुख से यूं शब्द निकाले, मात मेरी मेरी मेरी ॥ चिता० ॥१॥

लीये लिपटाय गले से, कहैं सब अपने अपने से। होगी पुत्र जुदा जलने से, शकल तेरी तेरी तेरी ॥ लगीना ॥२॥

आओ हम तुम संग जलवावें, अपना क्षत्री धर्म बचावें।
हम सबके सब एकजा बनजावें, खाक ढेरी ढेरी ढेरी। लगीना०।३।

पद तेजसिंह ने गाया, सब लड़कों ने ऐसे फ़रमाया।
आज ईश्वर ने हमें बिसराया, नज़र फेरी फेरी फेरी। लगीना०४

दोहा—बच्चे थे रजपूत के, छोटा मुंह बड़ी बात ।
मात वचन सुन तड़फ के, सब बोले एक साथ ॥

कवित्त नं ५३

अग्निमें जलजायं पुत्र क्षत्रियोंके ऐसा कहां धर्म्म मात हम को बतलाइये । जहां कहीं अग्नि में जलें पुत्र क्षत्रियों के ऐसा दे प्रमाण हम भलें को भी जलाइये ॥ इतना सुन क्षत्राणियों ने कहा उच्च स्वर से मेरे पुत्रों कचा अंग कोमल कलाइये । धर्म तो है लड़नेका परन्तु लड़ोगे कैसे बेटा अब तक तुमने शमशेर ना उठाइये ॥

भजन नं० ५४

दोहा—क्या हम क्षत्री नहीं हैं, क्या कायर लिये जान ।
क्या क्षत्राणियों का नहीं दूध किया है पान ॥
धर्म्मगया फिर मिलै नहीं,शरीर चाहै मिलजाय ।
इसलिये धर्म्म न छोड़हीं, चाहै शरीर लुटजाय ॥

टेक-ये अंग अधम दिन चार का, नहीं कभी धर्म हारेंगे ।
वस्त्र केशरी हमें मंगाओ, कटि में तेज तलवार गहाओ,
तेज अश्व पर हमें चढ़ाओ, उस दुश्मन खूंख्वार का,
जा रण में सीस झारेंगे नहीं कभी० ॥१॥

क्षत्राणी माता है हमारी, जिनकी कोखमें यह देह धारी
कैसे रण से हटें पिछारी, ले शमशेर तीक्ष्ण धार का,
गेखुद मरें या मारेंगे॥ नहीं कभी० ॥२॥

क़बूल है हमें धर्म पै मरना, क़बूल नहीं पग पीछे को धरना। लाज़िम है हमको यह करना, जौहर दिखा तलवार का। दुश्मनों को संहारेंगे॥ नहीं कभी ॥३॥

एक दिन तो ज़रूर मरना है, फिर मरने से क्या डरना है, तेजसिंह आखिर लड़ना है, जलकर मरना धिक्कार का जो धर्म है वही धरेंगे॥ नहीं कभी० ॥ ४॥

भजन नं० ५५

टेक—धर्म पर मर जाना कुछ बड़ करके बात नहीं है॥

एक दिन सबको मरना होगा, फिर भी जन्म धरना होगा। है फिर क्या घबड़ाना॥ कुछ बड़॥ १॥

हम क्षत्री के बच्चे कहावें, क्यों मरने से पीठ दिखावें। जगत मारे ताना॥ कुछ बड़० ॥ २॥

ये शरीर फिर मिल जावे, और धर्म न फिर फिर आवे तो होगा पछताना॥ कुछ बड़॥ ३॥

पद तेजसिंह कथ गावे, बदले धर्म के तन जावे॥

भजन नं० ५६

दोहा—जब जब सब लड़के हो गये, लड़न हेत तैयार।
उत में सब क्षत्राणियां, बैठीं चिता मझार॥
इतना सुन क्षत्राणियों ने, सबको सीस नवाय।
बैठ चिता में कह दिया, दीजै अग्नि लगाय॥

एक–चिता में अग्नि लगाई है, तन छोड़ा न छोड़ा धर्म ।
जीते जी चिता में जलतीं, ज्यों लकड़ी बले यूं बलतीं ।
नहीं बैठीं जरा भी हिलतीं, धर्म पर दृढ़ताई है॥ चिता १०
सब तज धर्म का सहारा, सब छोड़ा न धर्म विसारा ।
जीते जी जला जिस्म सारा, ख़ाक की ढेरी बनाई है ॥ चि० २
अब शोला उठे अग्नि का, सब निशान मिट गया तन का ।
चला झोका मंदी पवन का, धुयें की अंधेरी छाई है ।। चि० ३॥
अब जल भुंजके होगई ढेरी, बस फेर करो मत देरी ।
कहै तेजसिंह एक बेरी सबने शमशेर उठाई है ।। चि० ४ ।।
दोहा—अब वीरों ने किले के दीये खोल क्रिवाड़ ।
ऐसे गरजे सिंह सम, ले कर में तलवार ।।

कवित्त ५७

कटि में तलवार शूरवीर ऐसे टूट पड़े मानो कई दिन का भूखा शेर टूटे हिरन पर । कहूं क्या विशेष उन्हों ने भी तलवार करी कट २ के सीस जिन के गिर पड़े धरन पर ।। लेकिन थोड़ी ही देर में ऐसे बिलाय गये जैसे दीपक के साथ पतंग गिरे धरन पर। कहै तेजसिंह पुत्र सहित प्राण दिये आने न दिया दाग़ अपने क्षत्रीत्व वर्ण पर ।।

ख्याल नं० ५८

ले कर में तलवार दुधारा रण को क़दम उठाया है ।
स्वर्गवास की खुशी का जामा कसके अंग समाया है ॥

भीमसिंह रजपूतों से इस प्रकार फिर फरमाया है ।
मेरे शहज़ादो लो स्वर्गका मुशकिल यह दिन आया है ।।
इतना सुन कर एक संग जय जय का शब्द सुनाया है ।
मार मार करते हुए रण में जा मुक़ाबिला पाया है ॥

भजन नं० ५९

टेक–हुई अब मार मार मार, रजपूतों ने तेग़ लई नंगी ।
मिले ऐसे ज्यों जल मिले जल में, था एक२ से बढ़कर बलमें॥
हो रहे दुतर्फा दल में दुधारा के वार वार वार२ ॥ हुई०१॥
चले तेग़ा सरासर ऐसे कटे खेती किसानों की जैसे ।
फिर दोनों तरफ़ से ऐसे, रहे सिर तार तार तार २॥ हुई०२॥
होता है जो होने हारा, नहीं इस में किसी का चारा ।
वीर एक२ ने सौ२ को मारा, हुई फिर भी हार हार हार।हु०३
चली तलवार अत्यन्त भारी, हुई भूमी सुरख रंग सारी ।
हो रही जिस्म से जारी, रक्त की धार धार धार२ ॥ हु० ४॥
कहै तेजसिंह सुनो प्यारो, तजो प्राण न धर्म्म विसारो ।
रजपूतो तुम धर्म सम्हारो, जभी होंगे पार पार पार २ ॥हु०५॥

परम पराक्रमी राणा सांगा जी के मृत्यु प्राप्त होने पर ज्येष्ठ पुत्र रत्नसिंह जी गद्दी पर बैठे परन्तु थोड़े दिन पीछे इन के मारे जाने पर इन के अयोग्य भाई विक्रमादित्य गद्दी पर बैठे । इन्होंने अपने अनुचित बर्त्ताव से अपने सब सरदारों को असन्तुष्ट कर दिया । इस लिये सांगा

जी के भाई पृथ्वीराज के खवासपुत्र वनवीर ने उन को पकड़ कर मार डाला और चित्तौड़ पर अधिकार किया । पश्चात् निष्कण्टक राज्य करने के विचार से राणा सांगा जी के अल्पवयस्क पुत्र उदयसिंह को भी मार डालने का विचार किया परन्तु उदयसिंह की धाय पन्ना को यह ख़बर एक नाई ने दी । उस समय पन्ना क्या करती है उसे चौधरी तेजसिंह कृत भजन ६० में पढ़ो ।

भजन नं० ६०

ख्याल ।

पन्ना ने धरि धीर कलेजा पकड़ के ऐसे फ़रमाया ।
अभी करूंगी यत्न बचाने का तू क्यों है घबड़ाया ।
कितनी गुज़री पुश्त हमारी आज तलक दुख नहीं पाया ।
कैसे छोड़ूं धर्म नमक मैंने संग्रामसिंह जी का खाया ॥
इतना ही कुंवर एक था पन्ना का सोते ही से उस को उठाया
उतार शाही लिबास उदयसिंह का सारा उसको पहनाया ॥
उदयसिंह लेलिया गोद में लेकर के छाती से लगाया ।
अपना कुंवर दिया सुला वहां जहां था काल का चक्कर आया ॥
उदयसिंह को रख टोकरे में उपर से कूड़ा भरवाया ।
किसी सेठ के यहां उसी हज्जाम के हाथों पहुंचाया ॥
दोहा—अब पन्ना ने उदयसिंह, इस विधि दिये निकाल ।
रही मौत को आस कर, बैठ पुत्र की नाल ॥

भजन नं० ६१

टेक—अखीरी देख रही तस्वीर, खड़ी पन्नाकुंवर अपने को॥
कह रही पन्ना कुंवर तुझ पर हूं मैं बलिहारियां।
धर्महित परलोक की तू कर चला तैयारियां॥
कर चला मुझ को सपूती आज इस संसार में॥
करके न्यौछावर चला तू प्राण पर उपकार में
धन्य बेटा भाग तेरे धन्य है वह शुभ घड़ी।
जिस में तैने जन्म लीना कह रही माता खड़ी॥
मन समझा रही थी महतारी, आई इतनेमें मृत्यु दुखारी
कर लेकर के तीक्ष्ण कटारी, महल में आगया बनवीर॥अ० १

भजन नं० ६२

यों कहा बनवीर से पन्ना ने महाराज आइये।
किसलिये इस वक्त में तकलीफ़ इतनी पाइये॥
फिर कहा बनवीर ने पन्ना से यों करके बयां।
ख़ैरसल्ला कुंवर की लेने को आया मैं यहां॥
सुन कर वचन पन्ना को एकदम बेक़रारी आगई।
उधर बच्चे के कलेजे पर कटारी आगई॥
करले करके कई दवाई, नहीं पलभर की देरी लगाई,
दया ज़ालिम को तनक न आई, बीच से दिया कलेजा चीर २

भजन नं० ६३

ज्योंही बच्चे के लगा सीने में खञ्जर कारी है।
एक दम बच्चे ने मारी ज़ोर से किलकारी है॥
वो तो उसको मार पहुंचा अपने महलों जायके।
इधर पन्ना गिर पड़ी ग़श पुत्र अपने का खाय के॥
होश पाते ही रोपड़ी पुरग़म बुलन्द आवाज से।
सुन कर आये और बहुत एक दम बुलन्द आवाज़ से॥
आये सुनकर सब चित्तौड़वाले, नर नारी वृद्ध बाले,
गया कर कौन ग़ज़ब काले, करें सब पन्ना से तक़रीर॥ अ०॥

भजन नं० ६४

कुछ न देकर भेद पन्ना सुबह को वहां आगई।
मगर मातम की घटा सारे शहर में छागई॥
फिर एक दिन ऐसा हुआ लिया राज उदयसिंह पायके।
जिस को पन्ना ने किया था परवरिश दबकाय के॥
धर्महित में पुत्र तक धरो कई पन्ना की तरह।
अपने राजा के बनो हम दर्द पन्ना की तरह॥
अब मेरे सब आर्य्य भाई, करो सब के साथ भलाई।
करी तेजसिंह कविताई, कटै तभी दुखरूपी जंजीर॥अ०४३

——

पुस्तकों का सूची पत्र ।

पतिव्रताधर्म्म	)॥।
श्याम कुमारी	=)
आदर्श महिलाएं सचित्र	॥)
भारतमहिलामण्डल पहला	
दूसरा	॥।)
गृहस्थ चरित्र	।)
गृहिणीकर्त्तव्यदीपिका	।=)
युवारक्षक	।)
गृहशिक्षा	=)
अबलादुःखकथा	=)
चन्द्रकला	।)
लोगों की बीमारी का इलाज	।)
वीरांगना	।)
वीरबालक अभिमन्यु	≡)
रमणीरत्नमाला	।=)
रमणीपञ्चरत्न	।)
जीवनसुधार	॥)
धनका उपयोग	=)
बालहित	-)

गर्भाधानविधि	=)॥
माताका पुत्री को उपदेश	≡)
सतीचरित्र नाटक	।)
बालाबोधिनी पिता का उपदेश पुत्री को	।)॥
गर्भाधानविधि	=)
वीर्य्यरक्षा	=)
सत्यनारायण की प्राचीन कथा	-)॥
पत्रप्रकाश	≡)
मित्रानन्द	-)
धर्मबलिदान	=)
नीतिशिरोमणि	॥-)
आयुर्विचार	=)
यथार्थशान्तिनिरूपण	।)
ग़ज़ल गुलिस्तां	।)
तेजसिंहशतक	।-)॥
शङ्करसरोज	।≡)
कुरीति निवारण	-)॥
नूतनभजनप्रकाश	≡)

अन्धेरनाशक	)।	भजनस्त्री शिक्षाप्रचार	)॥
शान्तिसरोवर	=)	भजनप्रकाश प्रथम भाग	=)
द्वैतप्रकाश	)॥	द्वितीय भाग	=)
ईश्वरसिद्धि	)॥	स्त्री ज्ञानमाला २ भाग	-)॥
चित्रशाला	)।	ज्ञान भजनावली ४भाग	॥)
भारतोपदेश	)॥।	वनिताविनोद	=)
नित्यहवनविधि	)।	अनाथपुकार	)॥
भजनसारसंग्रह	-)॥	स्त्रीभजनभण्डार	।=)
प्रेमधारा	॥=)	आर्य्यगायन	-॥)
सांगीत संग्रह	=)	आर्य्यभजनसंग्रह १ भाग	।-)
अबलाभजनचालीसी	-)	बारहखड़ी २ भाग	)।
ऋषिगायन प्रथम	)।	सजीवन बूंटी	।)
ऋषिगायन दूसरा भाग	-)	स्त्रीज्ञानप्रकाश	=)॥
भजनपचासा दोनों	-)	वेश्या दोषदर्पण बड़ा	≡)
दूसरा भाग	=)	वासुदेवभजनबत्तीसी दोनों भाग	=)॥।
स्त्रीज्ञानगजरा प्र० दू०	=)॥		
मनआनन्द भजनावली	=)	अद्भुतभजनसंग्रह दोनों भाग	=)॥
मुकम्मिल भजनगुलज़ार	=)		
उर्दू	=)	भजनगंजीना	॥=)

आधआने का टिकट भेजनेसे बड़ा सूचीपत्र मंगाकर देखो।

पता रामदीन आर्यबुकसेलर शफ़ाख़ाना रोड

आगरा.

* ओ३म् *

स्त्री-ज्ञान-प्रकाश ।

द्वितीय-भाग

जिसमें

१०१ भजन स्त्रियों के गाने योग्य उत्तमोत्तम चुनिन्दा ग़ज़लें, लावनियां, दादरे, ठुमरियां आदि प्रसिद्ध प्रसिद्ध भजनीकों के सम्मिलित हैं

प्रकाशक

बाबू श्यामलाल वर्म्मा

आर्य्य बुकसेलर बरेली

तृतीयबार २००० | मई १९१५ | मुल्य ≡)

Printed by U. C. Banerji at the Anglo-Oriental Press, Lucknow.

निवेदन ।

प्यारी माताओ तथा बहिनो !

मैं स्त्री-ज्ञान-प्रकाश के द्वितीय भाग को आपकी सेवा में सहर्ष अर्पण करता हूं । इसके प्रथम भाग का समुचित आदर करके आप लोगों ने मेरे उत्साह की वृद्धि की, अतः आशा है कि यह भाग भी आप का आदरभाजन होगा । इस भाग में भजनों का समावेश बहुत विचारपूर्वक किया गया है इसी कारण से इसके तैयार होने में विलम्ब हुआ । यदि आप लोग इस पुस्तक के भजनों द्वारा लाभ उठाकर जीवन सफल करते हुये मेरा उत्साह बढ़ावेंगी तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा और आगे इसी प्रकार की लाभकारी पुस्तकों द्वारा आपके मनोरञ्जन की चेष्टा करूंगा ।

कृपा करके त्रुटियों से सूचित करें ताकि अब की बार शुद्ध करदी जावें । इस पुस्तक का तीसरा व चौथा भाग भी शीघ्र प्रकाशित किया जायगा ।।

श्यामलाल वर्म्मा ।

सूचीपत्र स्त्री ज्ञानप्रकाश।

❋ द्वितीय भाग ❋

अ

२६ अग्निहोत्र तुम नित उठि करना०

५७ अखिरी देख रही तसवीर०

७१ अजब हिकमत से मालिक ने०

८७ अरे रावण तू धमकी दिखावे०

इ

८० इस काल बली से बाज़ी०

२० ईश्वर तुम सर्वाधार हो०

ए

८१ एक दिन सबको खाया है०

ओ

६४ ओंकार भजो अहंकार तजो०

१०१ ओं जय ईश्वर स्वामी०

क

६ क्या कोई गावे क्या सुनावे०
११ कोई क्या गावे संसार में०
२३ कर कृपा ईश निहारियो०
३४ कन्याओ प्यारी सुनलो०
४२ कठिन वर मांगो माई०
४४ क़िला सिंहगढ़ का नाम०
४६ कही क़ासिद से अब राजा ने०
४७ काम सब आलगे जी उस०
६२ क्यों बनी हो गँवारी पढ़ी नहीं०
८१ किसे देख दिल तू हुआ है०
८३ कोई दम का यहां है बसेरा रे०
६० कैसा बिगड़ा है भारत हमारा रे०

च

३६ चेतो भारत की नारी०
८४ चिता में अग्नि लगाई है०

ज

६३ जो धर्म कर्म न जाने सो०

७७ जीना दिन चार का रे०
९१ जन्म सफल करलो०
६६ जपो मुख से ओङ्कार को०
१०० जिस में तेरा नहीं विकाश०

ड

२२ डगमग डोले दीनानाथ०

त

५ तेरा निशां कहां है ऐ बे निशान०
८ तुम हो पिता हमारे०
६ तुही है सनातन तुही है०
१३ तुमको प्रणाम हमारा कि०
१६ तू परिपूरण नाथ जगत् का०
३७ तुम सुनियो भारत की नारी०

द

७ दया करके खुता हो माफ़०
१५ दीनानाथ तुम्हारा सहारा हमें०
३१ दुलारी जनक की जाई०
३८ देखो अबला धरम गई भूल०

५० दुश्मन को तलवार हमारी का०
८४ दम आवे न आवे अजब क्या है०
१० देखो अनाथ यहां०

ध

२४ धनि २ दयानन्द महाराज०
५३ धर्म पर मर जाना कोई०

न

४ नहीं बुद्धि हमारी गावें०
३५ नर पैदा हों ऋषि मुनि०
६३ नसीहत सुनो बेटी०

प

१ परम पिता है परम दयालू०
२ प्रभु अद्भुत खेल रचाया०
१२ परम पिता की प्रीति से०
१७ प्रभु बिन और नहीं सुखदाई०
१८ प्रभु कर दूर हमारी अब बुरी०
१६ प्रभु जी अब मुझे तुम्हारी आस०
२५ पौधा उसी ऋषी का यार०

२८ पतिव्रता नारि सेवा है धर्म तुम्हारा०
२९ पति प्यारे की सेवा क्यों भुलाओ०
४८ पहिन लो केसरी बाना०
५६ पन्ना ने धरि धीर कलेजा०
७४ पीते जइयो जी महाशय प्याला०
७६ प्रभु की भक्ती करने में अरे०
९५ प्रभु से प्रीति लगाओ जी०
९६ प्रभु हूजे दयाल०
९८ पिता तेरा है वही ईश्वर०

फ

६६ फैला दो ब्रह्मज्ञान जगत् में०

ब

६८ बहिनो री करलो सच्चा शृङ्गार०
७० ब्रह्मचारी जगत में आवें०
७८ बड़ा पापी कुटिल है मेरा मन०
८६ बहै नयनों से नीर सुनकर ये०
७५ बहिनो है फ़रियाद०

भ

६६ भय खैहौ तो कैसे धरम रहिहै०
७२ भारतवर्ष से रे अब तो०
८५ भारत में छाय रही काली घटा०
९२ भूला डोले जगत् में प्राणी०

म

३ मेरी पड़ी भँवर में नैया०
३३ मोहिं सुर पुर नर्क समान है०
४० माता के सिखाये पुत्र पूरण०
५६ माता मेरी मुझ को पढ़ना सिखा दे०
६५ मेरा वैदिक फुलवरिया को मन०
५८ मत छोड़ो वैदिक धर्म प्राण तक०
९३ मेरी बहिनो खोलो आंख०

य

५२ ये अङ्ग अधप दिन चार का०
६१ यदि चाहो कल्याण, करो पुत्री०

ळ

२७ लिखा वेदों में विधान०

४६ लादो शमशेर दुधारा०
५१ लगी ना देरी ३ चिता चुन के०

व

२१ विन्ती है मेरी आप से जी०
५८ विना विद्या के संसार में०
७३ वे नर पशू समान जिन में०

श

३० श्रीराम वन को चलने को तैयार०
४३ शिवा मेरे अय शिव जी के०

स

३२ सिया दुःख बन में उठाना होगा०
४१ सिंहगढ़ फ़तेह करो बेटा०
४४ सर्जा ने सारे दर्बार में०
६७ सोचियो अब तक कि आगे०
८८ सुनोरी बहिना बहिना बहिना०

ह

१४ है अपरम्पार प्रभु तुम्हारी०
५५ हुई जब मार ३ राजपूतों०
६० हमें जल्दी बना दो बाला शाला०
७६ है चन्द मिनट का ख्वाब०
९७ हमें धन्यवाद मिला गाना०

ओ३म्

स्त्रीज्ञानप्रकाश ।

—:○:*:○:—

द्वितीय भाग ।

ओ३म् शन्नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा । यत्र देवा अमृत मानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥ यजु० अ० ३२ मं० १० ।

भजन ॥ १ ॥

परम पिता है परम दयालू तमाम दुनिया का है वह नायक । वही है बन्धू दुखों का नाशक हर एक समय है वही सहायक ॥ हैं लोक सारे रचे उसी ने वही है पालन सभों का करता । उसी के अधार सब हैं क़ायम

वही सभों का है कर्ता धर्ता ॥ वह अपने भक्तों की कामनायें हमेशा करता रहे है पूरन । हमेशा आनन्द में है रखता, दुखों को करता है उनके चूरन ॥ तमाम धामों की ठीक हालत सदा से जाने है मूबमू वो । नहीं है पोशीदा उससे कुछ भी सभों से वाक़िफ़ है हूबहू वो ॥ जो उसके सेवक हैं धार्मिक जन जो भक्त उस के हैं सच्चे मन से । वह उस की कृपा से छूट जाते हैं जन्म लेने से और मरण से ॥ वह मोक्ष में हैं सदा विचरते वह चैन आनन्द को हैं पाते । कलेश और दुख किसी तरह के नहीं हैं नज़दीक उनके आते ॥ हमे भी कर्तव्य बस यही है कि उस की भक्ती में मन को लावें । जो उस की कृपा की दृष्टि होवै तो मोक्ष आनन्द हम भी पावें ॥

भजन ॥ २ ॥

प्रभु अद्भुत खेल रचाया । प्रभु० । प्रभु झम झम झम झम झमकत चन्द्र तारे, अ० ॥ तू निराकार और निर्विकार, तू एक सार, सब यह असार, कर नमस्कार सौ बारा। अद्भुत सुन्दर २ महिमा जगमग २ होत अपार, बाजत हैं बाजा सितार, गुण गावैं तेरो तार तार, सब ध्यावैं तुझको बार बार, सबप्रेमी तुझको गाया ॥ प्रभु० १ ॥

सूरज की चमक, बिजली की दमक, पौदों की लहक, फूलों की महक, तारों की झलक व फलक। तुझ जतावें, हमें बतावें, तू मालिक ख़ालिक़ बरतर। गड़गड़ गड़ गड़ बादल गर्जे, छमछम छमछम वर्षा वर्षे, गड़ गड़ाट सुन सुन जिय लर्जे, यह तेरी याद दिलाया ॥ प्रभु० २ ॥

कड़ कड़ात जो गर्मी पड़े है, बादल नहिं कहीं नजर पड़े है, प्रजा हाहाकार करे है। आबो दाना, पानी खाना, मिलता नहिं है शाम सुबह, अब आँधी आई जोर शोर, घिर आई घटा घन घोर घोर, अब बादल वर्षे ठौर ठौर, एक पल में समय बदलाया ॥ प्रभु० ३ ॥

बुलबुल चिहचिह, कोयल कूकू, चिड़िया चिड़चिड़, फ़ाख़ता हूहू करते हैं हर सू हू। जंगल में मंगल करते हैं, पक्षी बोलें वृक्षों पर, हरिया बन का फ़र्श बिछा है, चुन २ के मोती से जड़ा है, वन पर्वत फूलों से लदा है, और फलों से लदाया ॥ प्रभु० ४ ॥

भजन ॥ ३ ॥

मेरी पड़ी भँवर में नैया, नाथ इसे तार दे तार दे तार दे ॥ टेक ॥ नहीं आवें नज़र कि-

नारे, हम इसी से हिम्मत हारे, दुःख दें तीनों ताप हमारे, नाथ इन्हें टारदे ३ ॥ नाथ० १ ॥

मेरे पांचों तो बैरी संग में, नहीं बाहर भीतर इसी अँग में। कर दिया इन्हों ने अति तँग में नाथ इन्हें मारदे ३ ॥ नाथ० २ ॥

यह मानुष का देह दुश्वार है, यह मौक़ा न बारम्बार है, हे ईश्वर तु सर्वाधार है, जीवन का हमैं सार दे सार दे २ ॥ नाथ० ३ ॥

जो तेरे दर पर आवें, वह मन इच्छा फल पावें पद तेजसिंह कथ गावें, हमें तो फल चार दे चार दे २ ॥ नाथ० ४ ॥

भजन ॥ ४ ॥

नहीं बुद्धि हमारी, गावें महिमा तुम्हारी, तुम्हीं सन्तन सुखारी, प्रभु ओ३म् ओ३म् ओ३म् । दया भक्तों पै कीजै, सब दुःख हर

लीजै, निज भक्ति को दीजै, प्रभु ओ३म ओ३म्र ओ३म्र (टेक)

दो०–ऋषी ऋषीश्वर मुनी मुनीश्वर कभी न पावैं पार। उसकी महिमा गाऊँ क्योंकर, मैं मतिमंद गँवार ॥ हारे योगी योगीश्वर, सारे ऋषी ऋषीश्वर, जाने महिमा मुनीश्वर न, ओ३म्र ३ ॥ १ ॥

दो०–थलचर जलचर नभचर आदिक, सारे नर अरु नारि। पंचतत्व से नाथ बनायो यह सारो संसार ॥ तेरी महिमा अपार, कोऊ पावे न पार, चाहे गावे हजार, प्रभु ओ३म्र३॥२॥

दो०–हे जगदीश अजन्म अमृत्यू सर्वेश्वर तुव नाम। दीनदयालु कृपालु दयामय, हे प्रभु पूरणकाम ॥ प्रभु तुम हो कर्त्तार, सारे

जग के आधार, सभी कहते पुकार, प्रभु ओ३म् ३ ॥ ३ ॥

दो०—शिवनारायण के तुमही प्रभु, पार लगावनहार । टूटी नैया बिन केवट के नाथ पड़ी मँझधार ॥ नहीं तुम बिन हमारा, कोई जग में सहारा, तुही जीवन अधारा, प्रभु ओ३म् ३ ॥ ४ ॥

कव्वाली ॥ ९ ॥

तेरा निशां कहां है ऐ बे निशान वाले ।
ढूँढें तुझे कहां हम, ऐ ला मकान वाले ॥१॥
परदों में तू निहां है, आता नहीं नज़र में ।
कैसे पहुँचहो तुझतक, ऐ आसमान वाले ॥२॥
हर गुल में बू है तेरी, हर शै में रंग तेरा ।
तू है मुहीत सब में, ऐ दो जहान वाले ॥३॥

पहिचाने कोई क्योंकर, अक़लो ख़िरद है हैरां।
हैरत में सब पड़े हैं, यहां ज्ञान ध्यान वाले ॥४॥
साधू की यह सदा है, जग रैन का है स्वपना।
हो तू फ़िदा न इस पर, ऐ आन बान वाले ॥५॥

भजन ॥ ६ ॥

क्या कोई गावे, क्या सुनावे, प्रभु महिमा तेरी लखी किसी से न जावेरे। ऋषी ऋषीश्वर मुनी मुनीश्वर, तपी तपीश्वर हजार। लिख लिख के हारे, वह सारे विचारे, न पाया वले तेरा पार ॥ क्या कोई० १ ॥

तेरी वेद है वाणी, कहे ऋषी ज्ञानी, है प्राणी का जिससे उद्धार। जो पढ़े पढ़ावे, अमल करावे, हो भवसागर से पार ॥ क्या कोई० २ ॥

तुहीं सृष्टिकर्त्ता, सकल दुख का हर्त्ता, तू

सन्तन का प्रतिपाल । मुझे काम क्रोध से, खुदी लोभ मोह से, बचाओ हरि तत्काल ॥ क्या कोई० ३ ॥

तुही है भंडारी, मैं हूं तेरा भिखारी, मांगू यही वरदान । मैं तुझको ही ध्याऊं, तेरी महिमा गाऊं, कहे दास खन्ना नादान ॥ क्या कोई० ४ ॥

भजन ॥७॥

दया करके खता हो माफ होवे न देरी ३ । टेक ।

पिता मेरी ख़ता हो मुआफ़ी, हुई मुझ से बहुत गुस्ताखी । हूं अपने करम का शाकी सुनो यह मेरी मेरी मेरी ॥ होवे न० १ ॥

नहीं नरतन का लाभ उठाया, तज धर्म विषय मन भाया । मेरी बुद्धि ने चक्कर खाया, देओ न फेरी फेरी फेरी ॥ होवे न० २ ॥

जिस कारण मनुष्य तन दीन्हा, नहीं धर्म कर्म शुभ कीन्हा। हाय मुझे न अब तक चीन्हा, गई सुध तेरी ३ ॥ होवे न० ३ ॥

होवे अब भी जो तेरी मर्जी, मिले ज्ञान त्यागूं खुदग़र्जी। यही बाबू की सुनलो अर्जी, कहें हम टेरी ३ ॥ होवे न० ४

क़व्वाली ॥८॥

तुम हो पिता हमारे, हो वेद ज्ञान वाले।
जग में भी रम रहे हो, हो बे निशानवाले ॥१॥
छिनछिन तुझेही ध्यावें, ऐ न्यायकारी स्वामिन्।
ज्योती तेरी चमकती, हो चन्द भानु वाले ॥२॥
दुःखों से तू छुड़ादे, हमतो हैं तेरे सेवक।
सिखलादे अपनी भक्ती, आनन्द खान वाले ॥३
पाठक के तुम हो सर्वस, ऐ दीन बन्धु स्वामिन्।
आवागमन छुड़ादे, हो मोक्ष दान वाले ॥४॥

भजन ॥६॥

तुही है सनातन तुही हैं अनूपम ।
तू राजों का अधिराज सरकार उत्तम ॥१॥
छोटा सा कमरा है ब्रह्माण्ड उसका ।
जो तेरा शयन धाम दरबार उत्तम ॥२॥
पवन देवता तेरा पंखा कुली है ।
वर्षा भरे पानी पनिहारि उत्तम ॥३॥
अंगेठी जलाने पै नौकर है अग्नि ।
सूरज का दीपक जगै द्वार उत्तम ॥४॥
फुलवाड़ी का फर्श कोमल से कोमल ।
बना बेल बूटे का गुलजार उत्तम ॥५॥
पुष्पावली है लवण्डर की शीशी ।
ऋतुराज है तेरा मलियार उत्तम ॥६॥
तेरी लाइब्रेरी के पुस्तक मुकद्दस ।
मिले सृष्टि के आदि में चार उत्तम ॥७॥

ऐश्वर्य्य तेरा अपरिमित है इतना ।
करे किस बुद्धि से विस्तार उत्तम ॥८॥
अखण्ड एक रसकी लगी हमको प्यासा ।
अमीरस पिलाकर करो प्यार उत्तम ॥९॥

भजन ॥१०॥

(ध्वनि—धर्म-पथ फैलादो घर २ द्वार)

तुम्हारी गति प्रभु जी अपरम्पार ॥ टेक ॥

सूरज ज्योति दई अति सुन्दर, सृष्टि की मानो है जान ॥ गर्मी प्रकाशी वनस्पति सृजे, औषधि अन्न अहार ॥ तुम्हारी० ॥ रैन अंधेरी में चन्दा चमके, तारे हैं बेपरमान । जगमग जगमग झिम २ झमके, शोभा होत अपार ॥ तुम्हारी० ॥ श्याम घटा में बिजली दमके, पपिहा की पीपीतान । कोयल कूके छम छम बरसे, बाजत बाजा सितार ॥ तुम्हारी० ॥

धर्म के हेतु वेद का दीन्हा, सृष्टि के आदि में ज्ञान । विद्या पढ़ाओ बुद्धि बढ़ाओ, जो है जीवन सार ॥ तुम्हारी० ॥ जीवन के कारण तुम ने दयामय, रची यह सृष्टि महान् । होवे वह पापी गावे न यश जो, बाबू तेरा हरबार ॥ तुम्हारी० ॥

भजन ॥ ११ ॥

कोई क्या गावे संसार में, है अपार महिमा तेरी ॥ टेक ॥ जगके आप बनाने वाले, जन्म मरण में न आने वाले । सबको सुख पहूँचाने वाले, रखने वाले प्यार में, दो काट दुखों की बेड़ी ॥ है अपार० ॥ पेड़ में फल और बीज है फल में, बीज में अंकुर बसे असल में । कैसे सोचें इसे अकल में, आता नहीं विचार में, अति तुच्छ बुद्धि है मेरी ॥ है अपार० २॥ कैसे उदर

में अंग बनाया, नहीं हथौड़ी हाथ लगाया। क्या सुथरा और साफ़ बनाया, किस साँचे एक सार में, क्या गला के धातु गेरी ॥ है० ३ ॥ मुझको इस तानरूप क़िले से, निकाल दो मृत्यु के ज़िले से। हीरासिंह बिन तेरे मिले से, कैसे उतरूं पार मैं, मिलो जल्द करो नहिं देरी ॥ है० ४ ॥

भजन ॥ १२ ॥

परम पिता के प्रीति से यश गाओ सदा। परम पिता के, जग रचता के, प्रीति से गाओ सदा ॥ टेक ॥ हमको इन्सान किया, अशरफ़े जहान किया, पैदा जो सामान किया, सब कुछ हमको दान दिया। है हैरानी, पर यह प्राणी, कर नादानी, कुछ न मानी, रह हक्कानी ॥ छोड़ ऐसी मत कर ओ नादान नर, निस दिन

हर प्रीति से चित धर ॥ गाओ सदा० ॥

दो०—वह दाता कर्तार है, सबका पालन हार। पर हम कुछ नहीं जानते, मूरख निपट गँवार ॥ दिल में विचार करो, पर उपकार करो, ईश्वर से प्यार करो, खन्ने दिल निसार करो। गाओ० ॥

दादरा ॥ १३ ॥

टेक—तुमको प्रणाम हमारा कि प्रभुजी।
तू हमारा जगत का स्वामी, कारण सकल पसारा ॥ कि प्रभु० ॥ १ ॥

जीव जन्तु रचना सब तेरी, तूही जगदाधारा ॥ कि प्रभु० २ ॥

सब में व्यापक अन्तर्यामी, अरु तू सब से न्यारा ॥ कि प्रभु० ॥ ३ ॥

गुण कीर्तन नित तेरे गावें, पाठक राखे सहारा ॥ कि प्रभु० ॥ ४ ॥

भजन ॥ १४ ॥

टेक–है अपरम्पार प्रभु तुम्हारी महिमा। अद्भुत है तुम्हारी माया, नहीं पार किसी ने पाया। ऋषी मुनि गये सब हार ॥ प्रभु० १ ॥

भूमण्डल अरु यह तारे, चर अचर जीव जड़ सारे। तुम्हीं को रहे पुकार ॥ प्रभु० २ ॥

तुम्हीं हिरण्यगर्भ कहलाये, सारे ब्रह्माण्ड रचाये। कौन कर सके शुमार ॥ प्रभु० ३ ॥

हो जगत् के आदि कारण, तुम्हीं कियेहो धारण। तुम्हीं करते संहार ॥ प्रभु० ४ ॥

सब बलों में तुमहीं बल हो, सब चल हैं तुम्हीं अचल हो। तुमहीं सुख के भण्डार ॥ प्रभु० ५ ॥

यों वासुदेव गाता है, जो शरण तेरी आता है। मिले मुक्ति का द्वार ॥ प्रभु० ६ ॥

दादरा ॥ १५ ॥

दीनानाथ तुम्हारा सहारा हमें, यहां सूझे न कोई हमारा हमें ॥ १ ॥

अपने स्वारथ के सब साथी । नहीं दीखे कोई दिलदारा हमें ॥ २ ॥

पड़ी भँवर बिच नैया पु ानी । कीजे प्रभु अब पारा हमें ॥ ३ ॥

पतित उद्धार कहाय जगत् में । फिर क्यों स्वामी बिसारा हमें ॥ ४ ॥

काम क्रोध अरु लोभ मोह ने । सब विधि नाथ विगारा हमें ॥ ५ ॥

बलदेवहु और न चाहे कछू । बस काफ़ी तुम्हारा नज़ारा हमें ॥ ६ ॥

भजन ॥ १६ ॥

तू परिपूरण नाथ जगत का, महिमा तेरी

अपरम्पार । जगत पिता तुम सब से महा हो कहते चारों वेद पुकार ॥ पृथ्वी सूरज चन्द्र तारे, तेरा ही सब है विस्तार । निश दिन करता दान पदारथ, तू सब को नाना प्रकार । इस मनको ज्ञानदे, तेरे चरणों में लगे, पापों से ये छुटे, तेरे नाम को रटे, असत् को छोड़ दे, सत् को धारण करे । खन्ना तुझ पै रहे जां निसार ॥ तू० ॥

भजन ॥ १७ ॥

प्रभु बिन और नहीं सुखदाई ।

सकल सृष्टि का करता धरता पालन करत सदाई । यथा योग्य रच सकल जगत को वस्तु दीं मन भाई ॥ १ ॥ ऐसे प्रभु की ऐ मन मूरख शठ क्यों सुधि बिसराई । बिन हरि के सुमिरन सपने में सुख पाओगे नाहीं ॥ २ ॥

कारण रहित कृपालु हरी हैं दुःख कलेश नशाई । दीन बन्धु दीनन हितकारी सब पर होत सहाई ॥ ३ ॥ प्रियम्बदा दोऊ कर जोड़े शरण आप की आई । निज चेरी जानो जगदीश्वर राखो लाज जगराई ॥ ४ ॥

भजन ॥ १८ ॥

प्रभु कर दूर हमारी, अब बुरी बासना मनकी ।

यह चंचल पापी नहिं रुकता, ज्ञान ध्यान की ओर न झुकता । ईश्वर से फिरता है लुकता, बड़ा दुष्ट है भारी, कुछ भय नहीं वेद वचन की ॥ अब० ॥ सन्ध्या करने में नहिं लगता, कर्म धर्म से कोसों भगता । विषय भोग में दूना चलता, खोई आयू सारी, इच्छा नहिं करी भजन की ॥ अब० ॥ अनित्य वस्तू से हित कीन्हा, योग आदि का नाम न लीन्हा । जहर

पिया अमृत तज दीन्हा, माना नहीं अनारी, रही सदा लालसा धनकी ॥ अब० ॥ कभी नहीं प्रभु गुण गाया, रागद्वेष में समय गँवाया उच्च दशा से मुझे गिराया, अब है शरण मुरारी, काटो बेड़ी बन्धन की ॥ अब० ॥

दादरा ॥ १६ ॥

प्रभु जी मुझे तुम्हारी आस ।

श्रीस्वामी सच्चिदानन्द जी, हिरदे करिये बास ॥ प्रभु० १ ॥

काम क्रोध मद लोभ हमारा, आप करोगे नास ॥ प्रभु० २ ॥

निज जन की सुध लेने वाला, पूरण कर अभिलाष ॥ प्रभु० ३ ॥

करो अनुग्रह हरो कुटिलता, बने तुम्हारी दास ॥ प्रभु० ४ ॥

प्रियम्बदा दोऊ कर जोरे करो न आप निरास ॥ प्रभु० ५ ॥

भजन ॥ २० ॥

दोहा–ऐ ईश्वर कीजो कृपा, अजर अमर अखिलेश । दीन बन्धु हम दीनों के काटो सकल कलेश ॥

हम आये तुम्हारी शरण, तुमहो सर्वाधार ।
नैया डूबे बीचमें, सो दीजे पार उतार ॥

ईश्वर तुम सर्वाधार हो मेरी लीजो खबर जल्दी से । टेक ॥ सब के पिता तुम्हीं माता हो, सारे सुखों के दाता हो ; शरण आप की जो आता हो, उसके पालनहार हो ॥ मेरी० १॥ तुमनेही रचे पदारथ सारे, पृथ्वी सूर्य चन्द्र नभ तारे । और सब की रक्षा करने हारे, करते दुष्ट संहार हो ॥ मेरी० २ ॥ यद्यपि रहा धर्म

से न्यारा, विषय भोग में समय गुजारा। अब तो आपका लिया सहारा, गिरतों के उठाने हार हो मेरी० ३ ॥ भवसागर से मुझे बचाओ, नैया मेरी पार लगाओ। वासुदेव पर अब द्रुर जाओ, क्यों नहिं सुनते पुकार हो ॥ मेरी० ४ ॥

भजन ॥ २१ ॥

बिनती है मेरी आप से जी ओंकार।

भारत में सब नर और नारी मुद्दत से हो रहे दुखारी। आर्य्य से होगये हैं अनारी, तज वेदों का प्रचार ॥ वि० १ ॥ घर २ में भाई और भाई, आपस में कररहे हैं लड़ाई। अब दीजे प्रभु सुमति दवाई, मिटजाय सब तकरार ॥ ॥ वि० २ ॥ ये भारत फिर लासानी हो, परउपकारी और दानी हो। कोई न इस में अज्ञानी हो, हों विद्या के भण्डार ॥ वि० ३ ॥ अब प्रभु

कुमति निवारण कीजे, विद्या फिर भारत में दीजे। तेजसिंह को शरण में लीजे, हे प्रभु जगदाधार ॥ वि० ४ ॥

भजन ॥ २२ ॥

डगमग डोले दीनानाथ नैया भवसागर में मेरी। टेक॥ मैंने भर २ जीवन भार, छोड़े तन बोहित बहुबार। पहुँचा एक नहीं उसपार, यह भी कालचक्र ने घेरी। १॥ टूटा मेरु दण्ड पतवार, कर पग पाते चलें न चार। मानी मन मांझी ने हार, दरसे दुरगति रात अँधेरी ॥२॥ अटके अघ झख नक्र भुजंग, झटके पटके ताप तरंग। पड़कर पवन कर्म के संग तरती भरती है चकफेरी ॥ ३ ॥ ठोकर मरणाचल की खाय फटकर डूब जायगी हाय। शंकर अब तो पार लगाय, तेरी मार सही बहुतेरी ॥ ४ ॥

भजन ॥ २३ ॥

कर कृपा ईश निहारियो, मेरी नाव भँवरमें अटकी । टेक ॥ चढ़ा अविद्या का है दरिया, अधर्म रात अँधेरी का खटका । मदमोह घिरी घनघोर घटा, पापों की आंधी टारियो। अज्ञान की बिजली चमकी ॥ मेरी०१ ॥ है नहीं ज्ञानी कोई जो पार लगावे, इस जग में दुःख आय बटावे। ज्ञान की बल्ली हाथ गहावे, बल बुद्धि हमें दे डारियो । नहीं अधबर रही है लटकी ॥मेरी०२॥ काम क्रोध ने आन दबाया, तृष्णा ने अति जोर दिखाया। अहंकार ने खूब सताया, तुमही नाथ उबारियो। सरभारी बोझकी मटकी ॥ मेरी०३ ॥ पातक वृद्धि है जो हमारी, बिना कृपा नहीं होवे न्यारी । है बाबू को आश अब

भारी, अर्ज़ मेरी उर धारियो, कर दूर व्यथा इस जन की ॥ मेरी० ४ ॥

भजन ॥ २४ ॥

धन २ दयानन्द महाराज, हमें ग़फ़लत से जगाने वाले ॥ टेक ॥ करके निद्रा से हुशियार, कीन्हा वेदों का प्रचार । दीनी बिगड़ी दशा सुधार, ऐ सत्यार्थ बनाने वाले ॥ धन० १ ॥ करके सत्य असत्य की छान, मारा पाखण्डियों का मान । किये वेदों से अलग पुरान, ऐ अज्ञान मिटाने वाले ॥धन० २॥ होकर वेदों पर आरूढ़ खोले शब्द अर्थ सब गूढ़ । खाली फिरन लगे अब मूढ़, मुफ्ती माल उड़ाने वाले ॥ धन०३ ॥ भारत नैया थी मँझधार, तुमने आन लगाई पार। ऐसी कीन्हीं दया अपार, खेवा पार लगाने वाले ॥ धन० ४ ॥

भजन ॥ २५ ॥

पौधा उसी ऋषी का यार देखो लहर २ लहराया ॥ टेक ॥ इसको तनक न जानो यार, है यह कल्प वृक्ष का सार। शाखें फैलेंगी अपरम्पार, करेंगी भूमंडल पर छाया ॥ पौ० १ ॥ कल्ला फूट चले हैं भाई, अब तुम देखो आंख उठाई। करियो इसकी ओर लखाई, बढ़े दिन दूना रात सवाया ॥ पौ० २ ॥ पूरण यह बढ़कर होवेगा, देश का सकल दुःख खोवेगा। भारत सुख से जब सोवेगा, हमारे दिल में यही समाया ॥ पौ० ३ ॥ मेरी अर्ज़ करो मन्जूर, करके पक्षपात को दूर। सींचो इसको मित्र जरूर, छन्द यह तेजसिंह ने गाया ॥ पौ० ४ ॥

भजन ॥ २६ ॥

[वज़न] जैसा करना वैसा भरना ॥ अग्नि

होत्र तुम नित उठ करना, ओ३म का करना मनमें ध्यान ॥ नितउठ सबेरे सन्ध्या करना, तब ही तुम को होवे ज्ञान ॥ आपस में तुम प्रीति करना। जब होवे सुख का सामान ॥ दीनन की नित रक्षा करना, विधवा और अनाथ निदान ॥ वेदों को नित पढ़ो, धरमात्मा बनो, दुष्टों से दूर भागो, सुख में सदा रहो, औषधि के दान से होता है कल्याण ॥ विद्या का दो दान। तो प्राप्त होवे ज्ञान। नित कर ध्यान ॥

भजन ॥ २७ ॥

लिखा वेदों में विधान, अद्भुत है महिमा हवन की। जो वस्तु अग्नि में जलाई, कर हलकी ऊपर को उड़ाई। वायु से होकर मिलान, जाती है रास्ता गगन की। लिखा० ॥ १ ॥ फिर आकाश मण्डल में भाई, पानी की होती

सफाई ॥ वृष्टि होवे अमृत समान, वृष्टि होवे अन्न और धनकी । लिखा० ॥ २ ॥ जब धन की वृद्धि होती है, सब प्रजा सुखी होती है । न रहता दुख का निशान, आजावे लहर अमन की ॥ लिखा० ३ ॥ जब से यह कर्म छुटा है, भारत का सुख मिटा है । सो कहता दीन कल्यान, सहते हो मार दुखन की ॥ लिखा० ४ ॥

भजन ॥ २८ ॥

पतिव्रता नारि सेवा है धर्म तुम्हारा ॥ टेक ॥

पति की आज्ञा शिर पर धारो, शर्म जनित दुख सब टारो, सुधासम वचन उचार ॥ सेवा० १ ॥ गृह काज में हो शुचिताई, और त्यागि सकल कुटिलाई, तजो मिथ्या व्यवहार ॥ सेवा० २ ॥ सीता थी पतिव्रता नारी, रही संग

वर्ष दशचारी, सहे वन कष्ट अपार ॥ सेवा०३ ॥ पर पति भ्राता सम जानो, हो बड़ा पिता सम मानो, पुत्र सम लघु संसार ॥ सेवा० ४ ॥ कहै मुरलीधर समझाई, तुम सुनो बहिनो और भाई, धर्म की बनो कटार ॥ सेवा० ५ ॥

गज़ल ॥ २६ ॥

(पतिव्रता स्त्री का कथन)

पति प्यारे की सेवा क्यों भुलाऊं ।
बढ़ाकर प्रीति प्रीतम को रिझाऊं ॥
सखी उन से मैं सुन्दर गुन को पाऊं ।
सुहागिन भाग्यवन्ती मैं कहाऊं ॥
करूं सेवा कि जिससे उनको सुखहो ।
कि सुख उन के से मुझको भी न दुख हो ॥
हितू परिवार और संसार सारा ।
खुशी हो मुझ से ईश्वर दे सहारा ॥

सभी सुख से हों फिर खुश जिन्दगानी ।
जो सांची प्रीति प्रीतम मन समानी ॥
पती पद प्रेम से शोभा दे जानी ।
यह सुंदर रूप बाबू मीठी वानी ॥

श्रीरामचन्द्रजी के बन गमन के समय सीताजी का वार्तालाप ।

शेरें ॥ ३० ॥

श्रीराम बन के चलने को तय्यार जब हुए ।
रानीने सिरको क़दमो में रख ये वचन कहे ॥
आज्ञासे अपने बापकी अब आप बन चले ।
माता पिताका हुक्म सो मा बाप का मुझे ॥
माता पिता के हुक्म से मुँह कैसे मोड़लूँ ।
पतिव्रत धर्म अपना भला कैसे छोड़ दूँ ॥
बनबास राह बाट में साथी रहूँगी मैं ।
चलने के वक्त राह में कांटे चुनूँगी मैं ॥
पहिले खिलाके आपको पीछे मैं खाऊँगी ।

जिस दम थकोगे पैर तुम्हारे दबाऊंगी ॥

दो०-जब सीता जीवनचलन, होगईं तुरततयार।
रामचन्द्र समझाय के, कहते बारम्बार ॥

भजन ॥ ३१ ॥

दुलारी जनक की जाई, हठ छोड़ चलो मत बन को ॥ टेक ॥

तुम हो जनक की राजदुलारी, रंगमहल की रहनेहारी। इस अंग कोमल पर दुखभारी, कैसे सहाजाई, दुःख लखा नहीं यक छिनको ॥ हठ० १ ॥

बन का जंगल खारदार है, जिसकी तीक्ष्ण तेज धार है। लगते होजाय वारपार है, है अति दुःख दाई, करे चुभते ही बेकल तनको ॥ हठ० २ ॥

शेर आदि पशुओं का घर है, इसीसे वहां

रहना दुस्तर है । सुख नहीं सर्व दुखों का घर है, हो व्याकुलताई । करो कैसे स्थिर मन को ॥ हठ० ३ ॥

जो प्यारी बनको जाओगी, वहां जाकर पछताओगी । तेजसिंह कहे दुख पाओगी, जिसकी यह कविताई, तज इस आनन्द अमन को ॥ हठ० ४ ॥

दादरा ॥ ३२ ॥

सिया दुख बन में उठाना होगा,
प्यारी मत जाओ पछताना होगा ॥टेक॥
राज पाट भूषण और वस्तर,
सब कुछ तुम्हें गमाना होगा ॥१॥
कठिन भूमि में कोमल पैरों,
बिना सवारी जाना होगा ॥ २ ॥
वृक्ष तले धरणी पर सोना,

बन तृण पत्र बिछाना होगा ॥ ३ ॥
वल्कल वस्त्र अंग रक्षा हित,
कन्द मूल फल खाना होगा ॥ ४ ॥
हाथ कमण्डल बगल मृगछाला,
तन में राख लगाना होगा ॥ ५ ॥
हरदत्त कहै बोली यों सीता,
'जो कुछ होगा बिताना होगा' ॥ ६ ॥

भजन ॥ ३३ ॥

ख्याल–सुने पती के वचन सोच सीता के हुआ मन में भारी। कल से बिकल हुई बेहोश नीर नैनों से हुआ जारी ॥ फिर लिया धरके धीर कलेजा पीर पकड़ के उच्चारी। प्रियवियोग सम दुःख नहीं दूजा ऐसे कहैं प्राण प्यारी ॥

मोहि सुरपुर नर्क समान हैं, बिन पति की ताबेदारी ॥ टेक ॥

लावनी–मात पिता सुत भगिनी भ्राता पुखदाई । गुरु सासु सुसर बिन पती के सब दुखदाई ॥ हैं जहां तलक जग मांहि रिश्ते और नाते । मुझे बिना पती के दर्शन तरणि ते ताते ॥

छन्द–सब राज पाट परिवारा, बिन पती लगे नहीं प्यारा । हैं भोग रोग संसारा, बिन पिय दुःख देने हारा ॥

तोड़–बिन पती जीव नहीं रहे, सिया यों कहे, अंग सब दहे । अंग में रहना मुश्किल प्राण है, यों कह रही जनकदुलारी ॥ १ ॥

ला०–है बिना जीव ज्यों देह नदी बिन वारी । बस ऐसे ही समझो बिना पती के नारी ॥

है यही हमारा धर्म्म धर्म नहिं दूजा । है इस में ही कल्याण करूँ पति पूजा ॥

छन्द--नहीं पतिव्रत धर्म विसारूं, लाखों विपता सिर धारूँ । यही पतिव्रत धर्म हमारा हम मानें हुक्म तुम्हारा ।

तोड़--दे पतिव्रत धर्म बिसार, दुखी वह नार, सुखों का सार । मिलेगा उनको आज जहान में, जो हैं पतिव्रत नारी ॥

ला०-ऐ पती ! मुझे वह जंगल रंग महल है । जहां प्राणनाथ प्यारे की मुझे टहल है॥ भोजन हैं उत्तम मुझे कन्दमूलों के । वो कांटे मुझको समान हैं फूलों के ॥

छन्द-मैं तुम्हारे दर्श की प्यासी, हूँ चरण कमल की दासी । सब खिदमत बजा लाऊँगी, हरदम सुख पहुँचाऊंगी ।

तोड़—कह रही रो रो के सिया, सुनो मोरे पिया, लरजता जिया। आपके बेइन्तहा अहसान हैं, करो न अर्धअंग को न्यारी ॥३॥

ला०—जो प्राण जांय तो शरीर रहता नाहीं।
जो शरीर जाता रहे कहां परछाहीं॥
हम हैं शरीर और आप हैं प्राण हमारे।
तुम शरीर मैं परछाहीं साथ तुम्हारे॥

छन्द--तुम कैसे अलग करोगे, करा अलग तो दुःख भरोगे। जो मैं न्यारी होजाऊँगी, बच सकूँ न मरजाऊंगी॥

तोड़--रो रो सीता कह रही, चरण गह रही, दृगन बह रही, तेज सिंह जलधार बे परमान है। कर करके गिरियां ज़ारी॥ ४ ॥

भजन ॥ १४ ॥

टेक—कन्याओं प्यारी, सुनलो बात हमारी।

पढ़ना लिखना विद्या सीखो, करो काम हितकारी। कतर ब्योंत कपड़ों का जानो, काम कसीदेकारी ॥ क० १ ॥ चटनी और अचार मुरब्बा, खाने की सब तैयारी । ऐसे स्वाद बनाओ व्यञ्जन, शोभा होय तुम्हारी ॥ क०२॥ लाज शरम तन में राखो तुम, होओ सब की प्यारी । प्रभु की भक्ति करो सब मिलकर, होवे बात सुखारी ॥ क० ३ ॥ धर्मवान गुण-वान की लज्जा राखैं श्री ओंकारी । बेढंगी और अति फूहर की, होगी थूथू ख्वारी ॥क०४॥

भजन ॥ ३५ ॥

टेक–नर पैदा हों ऋषि मुनि नारियों से ।

गौतम ऋषि जिसने न्याय बनाया, पातञ्ज-लि जिसने योग दिखाया। दुग्ध पिये महतारियों से ॥ नरपैदा० १ ॥ कपिलदेव जो सांख्य के

कर्त्ता, जैमिनी मीमांसा रचयिता। पाये शिक्षा महतारियों से ॥ नर० २ ॥ हुए कणाद वैशेषिक वारे, व्यास वेदान्त के रचने हारे। पाले माताओं ने झाड़ियों से ॥ नर पैदा० ३ ॥ मित्रो तुम इनका आदर सत्कार करो, जो चाहे सो लाके सामने धरो। कडुआ न बोलो विचारियों से ॥ नरपैदा० ४ ॥ सुन्दर उपदेश दे कुसँग छुड़ाओ, विद्या में जप तप लगाओ। रक्खो सम्बन्ध सत्कारियों से ॥ नरपैदा० ५ ॥ पाठक जो चाहो अपना भला तुम, मातायें शिक्षक अपनी बनाओ तुम। बच जाय भ्रम की बीमारियों से ॥ नर पैदा० ६ ॥

भजन ॥ ३६ ॥

चेतो भारत की नारी, ठग बहुत नजर आते हैं ॥ टेक ॥ कोई सैयद की खार बतावे,

कोई मीरा जाहर पुजुवावे। कोई ठग फूंकमार बहकावे, तुम को समझ अनारी। धन छलकर लेजाते हैं ॥ ठग० १ ॥ जहां तेजी से बुखार पावें, कण्ठी माता उसे बतावें। मक्खी जोड़ा भेट चढ़ावें, पाप करें है भारी ॥ धोखे से माल खाते हैं ॥ ठग०२ ॥ मन में समझ सोच कर प्यारी, इन की ठगी देखलो सारी। करते हैं वह फूंका भारी, तुमको समझ गँवारी ॥ हरदम यह बहकाते हैं ॥ ठग० ३ ॥ जब हो बिस्फोटक बीमारी, उस को माता कहैं पुजारी। गंगासहाय कहां अकल तुम्हारी, कुछ औषध कारी ॥ दुख दूर भाग जाते हैं ॥ ठग० ४ ॥

भजन ॥ ३७ ॥

तुम सुनियों भारत नारी, क्या होगई दशा तुम्हारी॥ टेक ॥ विद्या का पढ़ना छोड़ा,

पतिब्रत धर्म को तोड़ा। स्यानों से नाता जोड़ा, क्या अक्ल गई है मारी ॥ तुम०१ ॥ ईश्वरको तुमने भुलाया, पत्थरों को रोज न्हलाया। जूता तक भी पुजवाया, हुई मूर्खा स्त्री सारी ॥तुम० २॥ निज पति को गाली दीनी, सण्डों की सेवा कीनी। हाय कैसी भंग पी लीनी, जो उतरे नहीं उतारी ॥ तुम०३ ॥ नहीं किया पती का आदर, क़बरों पर चढ़ाई चादर। क्यों फिरो भटकती दरदर, तुम समझो नहीं गँवारी ॥ तुम० ४ ॥ कहै बासुदेव सुनो बहिना, तुम करो पती का कहना। बस यही है उत्तम गहना, तुम पहनो इसे सम्हारी ॥ तुम० ५ ॥

दादरा ॥ ३८ ॥

देखो अबला धरम गईं भूल ! हा०। उत्तम विचारों को उर में न लावें, सुख के करम गईं

भूल । हा० १ ॥ पतियों से लड़तीं न करतीं सुकरनी, कुल की शरम गईं भूल । हा० २ ॥ स्यानों दिवानों पै विश्वास राखैं, सच्चा मरम गईं भूल । हा० ३ ॥ माने नहीं करण हितकी कही को, हरि के जुरम गईं भूल । हा० ४ ॥

ग़ज़ल ॥ ३९ ॥

नसीहत पर सुनों बेटी मुनासिब दिल लगाना है । पढ़ो विद्या व गुन सीखो तुम्हें ससुरे को जाना है ॥ मुहब्बत सब से रक्खो तुम लड़ो मत बहिन और भाई । करो गुस्सा न ज़िद अपनी कि परबस ही में जाना है ॥ कड़ी बोली व चुग़ली और झूठ तज धीरे मधुर बोलो । रखो धीरज दया सब पर जो दुख खुद न उठाना है ॥ हमेशा शील और लज्जा रहे आँखों में और मन में । शराबो गोश्त भी

हरगिज तुम्हें बेहतर न खाना है॥ मगर चोरी दग़ा छोड़ो कुसंगत डाह की आदत । कहा मानो पिता मा का कि गुन ऐसे ही आना है ॥ न गाओ गीत बेशर्मी के सीखो तुम भजन शिक्षा । पढ़ो मत धर्म बिन पुस्तक जो बुद्धि धन बढ़ाना है ॥ पकाना खाना और सोना सफ़ाई ढंग गृहस्थी के । सभी सीखो यह जल्दी अब यह सर पर उठाना है ॥ चुराओ दिल न कामों से रहो खुश ताकि मेहनत में । सीखो खिदमत बड़ों की तुम कि इज़्ज़त यूंही पाना है ॥ समझ सोचो न भूलो तुम ग़ज़ल बाबू की यह दिल से । करो नित ध्यान ईश्वर का कि सुख ऐसे ही पाना है ॥

---:*:---

शिवाजीकी सिंहगढ़परचढ़ाई।

कबित्त ॥ ४० ॥

माता के सिखाये पुत्र पूरण विद्वान होत,
माता के सिखाये पुत्र कायर और क्रूर हैं।
माता के सिखाये पुत्र ब्रह्मचारी बलवान होत,
माता के सिखाये पुत्र रूपूत और शूर हैं॥
माता के सिखाये फँसे अष्टादश व्यसनों में,
माता के सिखाये पुत्र सारे अवगुणों से दूर हैं।
कहैं तेजसिंह माता ही है मुख्य कारण,
इस लिये पुत्रियों का पढ़ाना ज़रूर है॥ १॥

दो०-क्यातुमको मालूम नहीं,शिवाजीकाहाल।
सारे माता के भरे, थे मज़बूत ख्याल॥

कबित्त-एक रोज माता उनकी चढ़ी अपने
महलों पर, बुर्ज किले सिंहगढ़ का चमका

कँगूरा है । देखतेही जोश आया तभी पुत्र को बुलाया कहने लगी पुत्र तेरा राज सब अधूरा है ॥ हो तुम अजीत कोई जीत नहीं सके तुम्हें, उसी रोज जानूंगी पुत्र राज तेरा पूरा है । किले सिंहगढ़ का शमशेर गहो शेर मेरे, फतह करो जाके करो दुश्मन का चूरा है ॥२॥

भजन ॥ ४१ ॥

टेक–सिंहगढ़ फतेह करो बेटा, तभी पूरा हो राज तुम्हारा । अपनी शमशेर उठाओ, मत पल भर की देर लगाओ, खुश खबरी फतेह की लाओ, यतन एसे से लड़ो बेटा ॥१॥ बीरों के साथ लड़ने का, ये खुद काम तेरा करने का, नहीं इसमें काम डरने का, फिर मन में क्यों करो बेटा ॥ २ ॥ किला कब्जे में जबलाओगे, तभी अटल राज्य पाओगे दुश्मनों

से बच जाओगे, फेर नहीं दुखड़ा भरो बेटा ॥ ३ ॥ जो तू मेरी कोख का जाया, फिर क्यों देर इतनी लाया, पद तेजसिंह ने गाया, क़दम रण में को करो बेटा ॥ ४ ॥

कवित्त–क़िले सिंहगढ़ का नाम ज्योंही सुना सेवा जी के यह बोली इस पार से उस पार हुई । जैसे तलवार पार होती है बीरों के हाथ से, बीरों हां के ग्रीवा में तेज धार हुई ॥ इसी भांति देखो महा शूरबीर सेवा जी के, उस समय माता की बानी ही तलवार हुई । कह तेजसिंह उस तलवार रूपी वाणी से बोलने में, सेवा जी की बाणी बेकार हुई ॥

दोहा–कुछ थोड़ी सी देर में, बोला वचन

सँभाल। अरी मात यह वर मुझे, देना बहुत मुहाल ॥

भजन ॥ ४२ ॥

टेक-कठिन वर मांगो री माई।

जितनी चीज़ राज्य में मेरी, वह माता हैं सब कुछ तेरी। मांगो तुरत करो मत देरी, देऊँ अभी मँगवाई ॥ कठिन० १ ॥ उदय भानु है बीर बलधारी, बड़ी २ सेना लड़ने हारी। वहां नहीं जावे पेश हमारी कैसे जाई ॥ कठिन० २ ॥ सुन करके बेटा का कहना मा के हुवे गुलाबी नैना। महा क्रोध कर बोली बैना, होके दुःखदाई ॥ कठिन० ३॥ लगे आर वचन मेरे का, होगा नाश राज तेरे का। फल भोगेगा वचन फेरे का, जो तू फिर जाई ॥ कठिन० ४

शेर–इतना कह करके माता को न शान्ति सब्र आया कहां । अति क्रोध होकरके तू नहीं इस कोख का जाया कहा ॥ मां कहै कर नहीं सका तू अपने देश की रक्षा । जरासी बात के ऊपर क्यों इतनी दीनता लाया ॥ जिया चाहै तो ऐ बेटा ! मर इस धर्म के ऊपर। मरा न चाहते तो तुमने इस क़ौम का बीड़ा क्यों उठाया ?

कवित्त–इतनी कहते २ मां की भौंहें कमान हुईं, पलक तारे से जलें और मशाल से नयना हैं। मानो बुझी आग से जो एक साथ शोला उठे, ज्योंही एक साथ बोली क्रोध भरे बैना हैं ॥ मैंने गोद में खिलाया और पिलाया दूध सीने से, साढ़े नौ महीने पड़ा मुझको दुःख सहना है । अरे मेरी गोद में बढ़े मेरी छातीसे

पीकर दूध, कौन बड़ी बात देश हित में प्राण देना है ॥

भजन ॥४३॥

शिवा मेरे ऐ शिवजी के औतार आज मत मेरा दूध लजावे । लगी कहने कर करके प्यार, शिवा मेरे ऐ शिवजी के औतार । जगत में जीना है दिन चार, क्यों मेरी कोख को दागलगावे ॥१॥ कहनाकर मेरा स्वीकार, कर में ले तीक्ष्ण तलवार, जल्दी करले सैना तैयार, पुत्र काहे को देर लगावै ॥२॥ ज्यों २ करते हो अधिक अबार, अधर्मी कर रहे अत्याचार, दुखी हैं भारत के नर नार, क्यों ना भारत का भार उठावे ॥३॥ सुनो शिवा सपूत मेरे लाल, करो मत पलक मात्र की टाल, सिंह

गढ़ कर देवो पनियाढार, पुत्र तब मेरा पुत्र कहावे ॥४॥

कवित्त-माता के कठोर बैन सहन कैसे होसके यह हाल, लाल नैन ज्वाला झरन लगी अंग से। जैसे आफ़ताब ग्रीष्म का प्रकाश होत ज्योति, प्रकाश हुई चेहरे की उमंग से ॥ लेकर शमशेर गर्ज सिंह के समान उठा, जामा कसा अंग सिंहगढ़ की उमंग से। कहे तेजसिंह जग में कौन शूरबीर जायो, लेकर प्राण जाय तो शिवाजी की जंग से ॥

दो-सुनकर माता के वचन, कीन्ही नहीं अबार।
आकर के उसही घड़ी, जोड़ा सभी दर्बार॥

भजन ॥ ४४ ॥

सरजा ने सोर दर्बार में सब वीरों को बुलवाया ॥ टेक ॥ सुडौल तन बल के मतवारे,

कर तलवार नैन रतनारे । सिंहासन के बैठ सहारे, बड़ी प्रीति और प्यार में, सरजाने है समझाया ॥१॥ ऊदय भानु से लड़ना होगा, फ़तह सिंहगढ़ करना होगा । माता का बचन भरना होगा, मेरे नहीं अख्त्यार में, माता ने ही फ़रमाया ॥ २ ॥ जाना हो उसे बीड़ा उठाओ, मत पलभर की देर लगाओ । उदय भानु का मान घटाओ, इस सिंहगढ़ की मार में, करो माता का मन भ या । सब वीरों को बुलवाया ३॥ कायरपन मत मन में लावो, पुरुषार्थ करके दिखलावो । तेजसिंह मत देर लगावो, पढ़ो भजन का सार में, है सच्चा सखु र सुनाया ॥४॥

कवित्त ॥ ४५ ॥

कवित्त–क़िला सिंहगढ़ का नाम, ज्योंहीं सुना एक साथ, सारे दरबार में सन्नाटा सा

छागया । उदयभानु की वीरता से बलवान शिवाजी के वीरों को मानो काल सा खागया ॥ शूरों में कायरपन देख नृप शिवाजी मन में अति दुखी होय अति क्रोध तन छागया । कहे तेजसिंह ज्योंही सब वीरों को देख असमर्थ अति क्रोध शिवा को क्रोध तन आगया ॥ १ ॥

कवित्त—छोड़कर सिंहासन गर्जे सिंह के समान उठा कहने लगा करूं तुमको धिक्कार है । क्षत्री कहाओ प्राण मरने से बचाओ तो बस ऐसे जीने से मरना ही सार है । जाओ अभी लाओ तन्नासिंह जाय के जो महाशूर वीर रियासत का सुबेदार है । सिंहगढ़ को तोड़ उदयभानु के निकाले प्राण जिसकी ऐसी तीक्ष्ण और लांबी तलवार है ॥ २ ॥

तन्नासिंह सरदार वह, रियासत का सूबेदार।
उसे बुलाने के लिये, कासिद कीजै त्यार॥
सेवा जी कहने लगे, कासिद पास बुलाय।
अति आतुर कीजै गमन, तोय कहूं समझाय॥

भजन ॥ ४६ ॥

कही कासिद से अब राजा ने जल्द जाना जाना जाना ॥ टेक ॥ अब कासिद को पास बुलाया, एक लिख करके खत पकड़ाया, बस इतना ही लिख कर पठाया, जल्द आना आना आना ॥ १ ॥ लिखा यह मजमून बना कर, पानी भी पियो यहां आकर। जो लिया वहां पर खाकर, मित्र खाना खाना खाना ॥ २ ॥ चला जल्दी से जल्दी अइयो, मत पलभर की देर लगइयो। मत कासिद चला तू अइयो, साथ लाना लाना लाना ॥ ३ ॥ तन्नासिंह की

रियासत में भाई, वहां कासिद पहुंचा जाई। करी तेजसिंह कविताई, छन्द गाना गाना गाना ॥ ४ ॥

दोहा—कासिद पहुंचा शहर में, डाले जिधर निगाह। दिया दिखाई जा बजा, शादी का उत्साह ॥

कवित्त—प्रजा से ज्ञात भयो तन्नासिंह का पुत्र एक, आज उसी खुशी में घर घर में गान है। लाल बल्कि लाल नहीं भानु हैं भानु नहीं, बल्कि हमारे प्राणो का प्रान है॥ रूप में उजागर गुणों में आगर शूरवीरता में, गुणियों में गुणी और बुद्धि की यह खान है। कहे तेजसिंह शादी आचुकी नजदीक उसकी, आज आई लगन जिसमें सात दिन की बान है॥

दो–इतनीसुन कासिद चला, पहुंचाजा दर्बार।
न्याय करे जहां बैठ के, तन्नासिंह सर्दार ॥
हाथ जोड़ विनती करी, सब को शीश नवाय।
बड़े अदब से देदिया, परवाना पकड़ाय ॥

भजन ॥ ४७ ॥

कान सब आलंग जी, उस परवाने के चहुँओर। टेक ॥ सिंह शिव जी का परवाना, प्रतापगढ़ से आया। किला सिंह गढ़के जीतन को, तन्नासिंह बुलवाया ॥ १ ॥ नाम सिंहगढ़ का पढ़ते ही तन्नासिंह हरषाया। जामा अंग उमंग मचगया फूला नहीं समाया ॥ २ ॥ उदय भानु जब नाम है आया, जिसकी सख्तलड़ाई तन्नासिंह बलवान वीर ने गर्ज के तेग उठाई ॥ ३ ॥ अरे वीर पुरषो उठ बैठो मत ना देरल- गाओ। चलो सिंहगढ़ पर चढ़ २ के गढ़ को गर्द मिलाओ ॥ ४ ॥

दूसरा भाग ।

चौधरी तेजसिंह जी कृत चित्तौड़ के भजन ।

दो–देखो जब चित्तौड़ पर, चढ़ा अलाउद्दीन ।
यों कह करके लाऊंगा पदमावत को छीन ॥

कवित्त–पहिली लड़ाई में य हारा था, इन सें और दूसरा हमला किया ये आकर । पहिली लड़ाई में गोरा व बादल ने दिया था इस को यहां से हटाकर ॥ फिर पदमावत की विरह में दुबारा लाया फौजें बहुत सी चढ़ाकर । कहै तेजसिंह फिर भी छै महीना तक लड़े क्षत्री तुर्कों को वीरता दिखाकर ॥

दो–हा ! क्षत्री चित्तौड़ में, जो थे कई हजार ।
फिरभी उनसे कई गुनी, तुर्कोंकी तलवार ॥

ज्यों पानीमें बुलबुला, पा नहीं सकता पार।
लढ़ें कहांतक क्या करें, आखिर पाई हार॥
फिर सब ने ऐसे कहा, क्यूं करते हो देर।
कपड़े पहिनो केसरी, हाथ लेउ शमसेर॥

भजन ॥ ४८ ॥

पहनलो केसरी बाना, मरने में करो मत देरी।

टेक–केसरिया वस्त्र मँगावो मत पल भर की देरी लगावो। अपनी शमशेर उठावो, है लाजिम तुमको मर जाना॥ १॥ मँगा केसरिया बाने को, सजे मृत्यु के घर जाने को। फल शमशेर का खाने को, सजे सब चितौड़ के राना॥ २॥ क्षत्रियों की लखि मरदानी, सब जमा हुईं क्षत्राणी। आई पदमावत रानी, सुनो तुम उनका फरमाना॥ ३॥ पति

हम जीके कहा करेंगी, तुम लड़ो तो हम भी लड़ेंगी। तुम मरो तो हमभी मरेंगी, तेजसिंह हो संग स्वर्ग पाना ॥ ४ ॥

भजन ॥ ४६ ॥

दो—जब सब छत्राणियोंने, ऐसे कहा सुनाय ।
हमको भी अब केसरी, कपड़े देउ मँगाय ॥

लादो शमशेर दुधारा, लड़ने को चलेंगी संग में ॥ टेक ॥ संग में पति आपके चलेंगी, लड़ें शत्रुओं से बल करके । हरगिज नहीं आवें टल करके, मान करेंगी भंग हम, जो दुशमन होय तुम्हारा ॥ लादो० १ ॥

हरगिज नहीं धर्म हारेंगी, मान शत्रुवों के मारेंगी। बाना वीरता का धारेंगी, चलकर उस रणरंग में, देखो पुरुषार्थ हमारा ॥ लादो० २ ॥

आखिर तो हम क्षत्राणी हैं, हिम्मत हम में लासानी है। ऐसी ताकत जिस्मानी है, चाहे सारे अंग में, चले अंगुल २ आरा ॥ लादो० ३ ॥ शत्रू हिम्मत देख हमारी, वो भी प्रशंसा करें हैं भारी, अहो धन्य हैं ऐसी नारी, जो आई इस जंग में, पद तेजसिंह उच्चारा ॥ लादो० ४ ॥

भजन ॥ ५० ॥

टेक—दुशमन को तलवार हमारी का स्वाद जरा चखने दो ॥ टेक ॥ हम सुख दुख में देवें सहारा, यही पतिब्रत धर्म हमारा, वो धर्म हमें रखने दो ॥ दुशमन० १ ॥ हम तुम्हरे सङ्ग मरेंगी, दुशमन को हम खाक करेंगी। आगू हमें बढ़ने दो ॥ दुशमन० २ ॥

दो—जब सब क्षत्राणियों ने, ऐसे किया बयान ।
सब क्षत्री कहने लगे, इस में होगी हानि ॥

कवित्त–इतना सुनकर क्षत्रियों ने ऐसे कहा सुनो प्यारी यह तो सब कुछ ठीक जो तुमने उच्चारी है। परन्तु वो बादशाह नहीं कोई बड़ा बे इन्साफ़ बड़ा अत्याचारी है। जो कहीं पकड़ पावेगा क्षत्राणी एक को भी तो फिर बात सारी बिगड़ जायगी हमारी है। कहें तेजसिंह जो कहीं पदमावति पकड़ी जाय उस की मंशा पूरी हो जो कुछ उसने विचारी है॥

भजन ॥५१॥

दोहा–समझ सोचकर बात ये, ठहरी आखिर कार। सब चिन कर के चिता में जल कर होंजायँ छार॥

टेक–लगी ना देरी देरी देरी, चिता चुन के करी तय्यार॥ क्षत्राणियों के बच्चे बाले, जो

करके प्रीति से पाले। मुख से यूं शब्द निकाले, मारत मेरी मेरी मेरी ॥ चिता० १ ॥ लिये लपटाय गले से, कहे सब अपने अपने से। होगी पुत्र जुदा जल से, शकल तेरी तेरी तेरी ॥ चिता० २ ॥ आओ हम तुम संग जल जावें, अपना क्षत्री धर्म बचावें। हम सब के सब एक जा बनावें, खाक ढेरी ढेरी ढेरी ॥ चिता० ३ ॥ पद तेजसिंह ने गाया, सब लड़कों ने ये फ़रमाया। आज ईश्वर ने हमें बिसराया, नज़र फेरी फेरी फेरी ॥ चिता० ४ ॥

दो०-बच्चे थे रजपूत के, छोटा मुँह बड़ी बात।
मात वचन सुन लड़के, सब बोले इक साथ ॥

कवित्त--अग्नि में जल पुत्र क्षत्रियों के ये कहां धर्म मात हमको समझाइये। और जहां

कहीं अग्नि में जले पुत्र क्षत्रियों के ऐसे दे प्रमाण बेशक हमको जलाइये । इतना सुन क्षत्राणियों ने कहा उच्चस्वर से मेरे पुत्रों का कच्चा अंग कोमल कलाइये । धर्म तो है लड़ने का परन्तु लड़ेंगे कैसे बेटा अबतक तुमने शमशेर न उठाइये ॥

भजन ॥ ५२ ॥

क्या हम क्षत्री हैं नहीं, क्या कायर लिये जान ।
क्या क्षत्राणियों का नहीं, दूध किया है पान ॥
धर्म गया फिर मिलै नहीं, शरीर चाहै मिलजाय ।
इसलिये धर्म न छोड़हीं, चहै शरीर छुट जाय ॥

टेक–ये अंग अधम दिन चार का, नहीं कभी धर्म हारेंगे ॥ वस्त्र केसरी हमें मँगादो, कटि में तेज तलवार गहादो, तेज अश्व पर हमें चढ़ादो, उस दुशमन खूंख़्वार का जा

रण में सीस उतारेंगे ॥ नहीं कभी० ॥ १ ॥ क्षत्राणी माता है हमारी, जिस की कोख में यह देह धारी । कैसे रण से हटे बिचारी, ले शमशेर तीक्षण धार का, खुद मरेंगे या मारेंगे॥ नहीं कभी० ॥ २ ॥ क़बूल है हमें धर्म पै मरना, क़बूल नहीं पग पीछे को धरना । लाजिम है हमको यह करना, जौहर दिखा तलवार का, दुशमनों को संहारेंगे ॥ नहीं कभी० ॥३॥ एक दिन तो जरूर मरना है, फिर मरने से क्या डरना है। तेजसिंह आखिर लड़ना है, जलकर मरजाना धिक्कार का, जो धर्म है वही करेंगे ॥ नहीं कभी० ॥ ४ ॥

भजन ॥ ५३ ॥

धर्म पर मरजाना कुछ बढ़ करके बात नहीं है ॥ एक दिन सबको मरना होगा, फिर भी

जन्म धरना होगा। है फिर क्या उबड़ाना ॥ कुछ बढ़० ॥१॥ हम क्षत्री के बच्चे कहावें, क्यों मरने से पीठ दिखावें । जगत मारे ताना ॥ कुछ बढ़० ॥२॥ यह शरीर फिर मिलजावे, और धर्म न फिर फिर आवे। तो होवेगा पछताना ॥ कुछ बढ़० ॥ ३ ॥ पद तेजसिंह कथ गावे, बदले धर्म तन जावे। तो होगा स्वर्ग पाना ॥ कुछ बढ़० ॥४॥

भजन ॥ ५४ ॥

दो०—जब सब लड़के होगए, लड़न हेत तैयार ।
उत में सब क्षत्राणियां, बैठीं चिता मँझार ॥
इतनासुन क्षत्राणियों ने, सबको शीश नवाय ।
दौड़ चिता में कह दिया दीजे अग्नि लगाय ॥

टेक—चिता में अग्नि लगाई है, तन छोड़ा न छोड़ा धर्म को ॥ जीते जी चिता में जलतीं,

ज्यों लकड़ी बलें यूं बलतीं। नहीं बैठी जरा भी हिलतीं, धर्म पर ये दृढ़ताई है॥ ॥चिता०१॥

सब जन धर्म का ले सहारा, सब जोठा न धर्म विसारा। जीतेजी जले जिस्म सारा ख़ाक की ढेरी बनाई है॥ चिता० २॥

अब शोला उठे अग्नि का, सब निशान मिटगया तनका। चला झोका मन्दी पवन का, धुयें की अन्धेरी छाई है॥ चिता० ३॥

अब जल भुन के होगई ढेरी, बस फेर करो मत देरी। कहै तेजसिंह एक बेरी, सबने शमशेर उठाई है॥ चिता०४॥

दो०—अब बीरोंने किले के दिये खोल किवार।
ऐसे गरजे सिंह सम, लेकर के तलवार॥

कवित्त—कटि में तलवार शूर वीर ऐसे

टूट पड़े मानों कई दिन का शेर टूटे हिरन पर कहूँ क्या विशेष उन्होंने भी तलवार करी कटकट के शीश जिन के गिर पड़े धरन पर ॥ लेकिन थोड़ी ही देर में ऐसे बिलाय गये जैसे दीपक के साथ पतंग गिर धरन पर । कहै तेजसिंह पुत्र सहित प्राण दिये आने न दिया दाग़ अपने क्षात्रित्व बरन पर ॥

ख्याल—ले कर में तलवार दुधारा, रणको क़दम उठाया है । स्वर्गवास को खुशी का जामा अंग समाया है ॥ भीमसिंह रजपूतों से इस प्रकार फिर फरमाया है । मेरे शहज़ादो लो स्वर्ग का मुश्किल से ये दिन आया है ॥ इतना सुन कर एक संग जयजय का शब्द सुनाया है । मार मार करते हुये रण में जा मुकाबिला पाया है ।

भजन ॥ ५९ ॥

टेक–हुई जब मार मार मार, रजपूतों ने तेग़ लई नंगी। मिले ऐसे ज्यों जल मिले जल में, था एकएक से बढ़कर बलमें। होरहे दुतर्फ़ी दल में, दुधारा के वार वार वार ॥ हुई०१ ॥

चले तेग़ा सरासर ऐसे, कटे खेती किसानों की जैसे। फिर दोनों तरफ ऐसे, रहे सिर तार तार तार ॥ हुई जब०२॥

होता है जो होने हारा, नहीं इसमें किसी का चारा। वीर एक२ ने सौ २को मारा, हुई फिर भी हार हार हार ॥ हुई०३ ॥

चली तलवार अत्यन्त भारी, हुई भूमि सुरख रंग सारी। हो रही जिस्म से जारी, रक्तकी धार धार धार ॥ हुई० ४ ॥

कहे तेजसिंह सुनों प्यारो, तजो प्राण न धर्म विसारो । रजपूतों तुम धर्म सम्हारो, जभी होगे पार पार पार ॥ हुई० ५ ॥

वार्त्ता—

चित्तौड़ के महाराणा संग्रामसिंह ने मृत्यु समय अपने मन्त्री बनवीर और पन्ना धाय को बुलाया और कहा कि जब तक कुँवर उदयसिंह राजकार्य करने योग्य न हो राज का काम बनबीर मन्त्री करे और कुँवर का सेवा कार्य पन्ना धाय करे । महाराणा की मृत्यु के बाद मन्त्री बनबीर के मन में आया कि कुँवर उदयसिंह को मारकर स्वयं राज करें। उसने पन्ना धाय के महलों में जाकर कुँवर को रात्रि समय मारूँगा ऐसा विचार किया । एक नाई ने पन्ना धायको बनबीर का

समस्त समाचार सुनादिया तब पन्ना बोली।

भजन ॥ ५६ ॥

पन्ना ने धरि धीर कलेजा पकड़के ऐसा फ़रमाया । अभी करूंगी यत्न बचाने का तू क्यों ऐसा घबराया ॥ कितनी गुजरी पुश्त हमारी आज तलक दुख नहीं पाया । कैसे छोडूं धर्म नमक मैंने संग्रामसिंह जी का खाया ॥ इतना ही कुँवर एक था पन्ना का सोते ही से उसको उठाया । उतार शाही लिबास उदयसिंह का सारा उसको पहनाया ॥ उदयसिंह लेलिया गोद में लेकर के छाती से लगाया । अपना कुँवर दिया सुला वहां जहां था काल का चक्कर आया ॥ उदयसिंह को रख टोकरे में ऊपर से कूड़ा भरवाया । किसी सेठ के वहां उसी हाथ हज्जाम के हाथों पहुँचाया ॥

अबपन्नानेउदयसिंह, इस विधि दिये निकाल ।
रही मौतकी आस कर, बैठ पुत्री की नाल ॥

बारामासा ॥ ५७ ॥

टेक--अखीरी देख रही तस्वीर, खड़ी पन्ना कुँवर अपने की ॥ कह रही पन्ना कुँवर तुझ पर हूं मैं बलहारियां । धर्महित परलोक की तू कर चला तैयारियां ॥ करचला मुझको सपूती आज इस संसार में । करके न्यवछावर चला तू प्राण परउपकार में ॥ धन्य बेटा भाग तेरे धन्य है वह शुभ घड़ी । जिसमें तैंने जन्म लीना कह रही माता खड़ी ॥ मन समझा रही थी महतारी, आई इतने में मृत्यु दुखारी, कर लेकरके तीक्ष्ण कटारी, महल में आगया बनबीर । ॥ अ० १ ॥

बारामासा ॥ ५८ ॥

यों कहा बनबीर से पन्ना ने महाराज आइये।
किस लिये इसवक्त में तकलीफ़ इतनी पाइये॥
फिर कहा बनबीर ने पन्ना से यों करके बयां।
खैर सल्ला कुँवर की लेने को आया मैं यहां॥
सुनकर वचन पन्ना को यकदम बेकरारीआगई।
उधर बच्चे के कलेजे पर कटारी आगई॥
कर लेकर के कर्द दबाई, नहीं पल भर की
देरी लगाई, दया जालिम को तनक न आई,
बीच से दिया कलेजा चीर ॥ अ० २ ॥

बारामासा।

ज्योंही बच्चे के लगा सीने में खंजर कारी है।
एकदम बच्चे ने मारी जोर से किलकारी है॥
वो तो उसको मार पहुँचा अपने महलों जाय
के। इधर पन्ना गिर पड़ी गश पुत्र अपने का

खाय के ॥ होश आते ही रोपड़ी पुरग़म बुलन्द आवाजसे। सुनकर आये और बहुतएक बुलंद आवाजसे ॥ आये सुनकर सब चित्तौड़ वाले, नर नारी वृद्ध और बाले, गया कर कौन अब ऐसे चाले, करें सब पन्ना से तक़रीर ॥अ०३॥

बारामासा।

कुछ न देकर भेद पन्ना सुबह को वहां आगई। मगर मातम की घटा सारे शहर में छा गई ॥ फिर एक दिन ऐसा हुआ लिया राज्य उदय-सिंह पाय के। जिसको पन्ना ने किया था परवरिश दबकाय के ॥ धर्म हित में पुत्र तक धरो कर्द पन्ना की तरह। अपने राजा के बनों हमदर्द पन्ना की तरह ॥ अब मेरे सब आर्य भाई, करो सब के साथ भलाई। करी तेजसिंह कविताई, कटै तभी दुख रूपी जंजीर ॥

भजन ॥ ५९ ॥

दोहा—बिन विद्या के जगत में, हुई बहुत सी हानि। इस लिये कहने में मेरी, है कमजोर जबान ॥

टेक-बिन विद्या के संसार में होगई बहुत सी हानी॥ रीति प्रीति की बुद्धि बिसारी, आपस में चल गई कटारी। इज्जत बिगड़ी सभी हमारी, आपस की तक्करार में। सब होगये दुश्मन ज्ञानी ॥ हो० १ ॥ निशदिन आपस में लड़ते हैं, बिना बात अकड़े मरते हैं। अति कठोर भाषण करते हैं, नहीं रही नर नारि में। मनोहर मनोरंजनी बानी ॥ हो० २ ॥ जब पढ़ना वेदों का छूटा, ब्रह्मचर्य आश्रम भी टूटा। आर्यवर्त का नसीब फूटा, फँसे दुष्ट व्यभिचार में। हुई हरएक तरह हैरानी ॥ हो०३ ॥

जो तुम भला आपना चाहो, लड़के लड़की सभी पढ़ाओ। शक्ति के अनुसार लगाओ, रुपया वेद प्रचार में । तज तेजसिंह नादानी ॥ हो० ४ ॥

भजन ॥ ५६ ॥

टेक—माता मेरी मुझको पढ़ना सिखादे ।

खाने को नहीं मांगती मैं पीने को नहीं मांगती मैं मुझे सन्ध्या की पोथी मँगादे ॥ माता मेरी० १ ॥ गहना नहीं मांगती मैं, कपड़ा नहीं मांगती मैं मुझे वेदों की शिक्षा दिलादे ॥ माता मेरी० २ ॥ हाथी नहीं मांगती मैं घोड़ा नहीं मांगती मैं । मुझे सच्चा तू मारग बतादे ॥ माता मेरी० ३ ॥ राज नहीं मांगती मैं, पाट नहीं मागती मैं । पांचों शत्रु से पीछा छुड़ादे ॥ माता मेरी० ४ ॥ कहती पुत्री

सुन मेरी माता, कलको पढ़ाती मुझे आजही पढ़ादे ॥ माता मेरी मुझको० ५ ॥

भजन ॥ ६० ॥

हमें जल्दी बनादो बाला शाला--जिसमें पढ़ें, विदुषी बनें।

विद्या का दान करो, पुत्री का सन्मान करो, पशुबनी हैं अब तो इन्सान करो, पैरों पड़े, बिनती करें, खोलो बन्धन के कमरे का ताला० १ ॥ क़ैदी की हालत से कम नहीं है, भुतनी चुड़ैल हम बनी हुई हैं। जूती समान हमें किया, हमें शूद्रों की पदबी में डाला० २ ॥ कोई देश कोई कौम दिखाओ, स्त्री पढ़े बिन उन्नति पाओ। किसने किया विद्या बिना, अपने देशों के अन्दर उजाला० ३ ॥ स्त्री पढ़ाने का निकाला ये फल है, देखो

जापान जाओ पूरा अमल है । कुछ दिन हुआ कुछ भी न था, आज उसी का है बोल बाला० ४ ॥ वासुदेव यदि उन्नति चाहो, तो तुम अपनी पुत्री पढ़ावो । देवी बनें सब दुख टरें, यही सारांश हमने निकाला० ५ ॥

भजन ॥ ६१ ॥

यदि चाहो कल्याण, करो पुत्री सन्मान, दो विद्या का दान, तुम हे बन्धु हे बन्धु हे बन्धु ॥१॥ सम है अधिकार, यह नियम विश्वाधार, पढ़ें विद्या नरनार, सब हे बन्धु हे बन्धु हे बन्धु ॥ २ ॥ तुमने कीन्हा अन्याय, इन्हें शूद्र बताय, दिया पढ़ना छुड़ाय हा हे बन्धु हे बन्धु हे बन्धु ॥ ३ ॥ बिन विद्या के भाई, नर पशु कहाई, सब सुनियो चित लाई । अब हे बन्धु हे बन्धु हे बन्धु ॥ ४ ॥ द्रौपदी सीता महान,

भई कैसी विद्वान, थीं गुनों की खान, सब हे बन्धु हे बन्धु हे बन्धु ॥५॥ देखो सभा मंझार, मण्डन मिश्र की नार, शंकराचार्य पछार दिया हे बन्धु हे बन्धु हे बन्धु ॥६॥ कहै तुलसी हरबार, सुनिये विनय हमार, पुत्री शाला करो तैयार, अब हे बन्धु हे बन्धु हे बन्धु ॥ ७ ॥

भजन ॥ ६२ ॥

क्यों बनी हो गँवारी,
पढ़ी नहीं विद्या भारी ॥ टेक ॥

बिन के पावें न आदर पुरुषहो या नारी विद्या से जो नहीं शोभित हो, समझे हैं उसे अनारी। सुनों तुम भारत नारी ॥ क्यों०१॥ सुख सम्पति जो चाहो जगतमें रहो पति आज्ञाकारी। सास ससुर और नन्द जिठानी, उनकी करो सेवा भारी। मानों यह सीख हमारी क्यों० २॥

पति आज्ञा जो करेहैं उलंघन, जानो उन्हें व्य भिचारी। ऐसों की संगति जो बैठें हैं, वह भी हों हत्यारी ॥ हो कितनी ही रूह गँवारी ॥ क्यों० ३ ॥ पहिली नारी देखो दुलारी, कैसी थी सीता नारी। पतिव्रता कहलाई जगत में, तज कर महल अटारी ॥ चली बन जनक दुलारी क्यों० ४ ॥ श्यामसुन्दर कहै तुम्हारो हितैषी, कीजो सोच विचारी। प्राण जाय पर धर्म न छोड़ो, दुःख हो कितना ही भारी ॥ मरो चाहे खाय कटारी ॥ क्यों० ५ ॥

भजन ॥ ६३ ॥

दो-हायभारत की नारियो, फंसी अविद्या बीच।
खोलो २ हिय की आंखैं, कैसे लीनी मीच ॥
टेक—जो धर्म कर्म ना जाने,
सो कैसी मूरख नार है ॥

सासु ससुर पति को विसरावै, प्रयाग काशी मथुरा जावे। उड़ीसा बद्री किदार धावे, गंगा यमुना हरद्वार है। कभी नगर कोट की ठाने ॥ जो० १ ॥ सांचे तीरथ धाम पती हैं, जिनको पूजे होय सती हैं। फिरे विदेश मूढ़ मति है, गई सत्य की हार है ॥ बिलकुल ना बुद्धि ठिकाने ॥ जो० २ ॥ घरकों से तुम मुख दब-काती, ग़ैरों से क्यों नैन लड़ाती। उरस हुजूम मठों में जाती, ज़रा न सोच विचार है ॥ सुकर्म तज कुकर्म माने ॥ जो० ३ ॥ पर पुरुषों की बनती चेली, पति से विमुख मस्त अलबेली। घर के ख़र्च से बचे न धेली, ज़ेवर पर तक-रार है। ना हानि लाभ पहचाने ॥ जो० ४ ॥ पति की सेवा चहिये करना, गेह काज में चित को धरना। घर ही में जगदीश सुमरना

घर घर में ततकार है । जन घीसा सत्य बखाने ॥ जो० ५ ॥

भजन ॥ ६४ ॥

टेक–फैलादो ब्रह्म ज्ञान जगत में ॥

सत्य धर्म और वेद पठन में अर्पण कर दो प्राण ॥ धीरज धारो प्रिय बोलो तजदेओ अभिमान । नित्य प्रति पाचों यज्ञों को करना दे दीनों को दान ॥ जगत० १ ॥ जगत गुरू था देश हमारा, सबने किया पयान । वेदों के प्यारो आज्ञा पालो होगा फिर वही मान ॥ जगत० २ ॥ देश देश में धूम मचादो हो जाओ सिंह समान । चीन अरब आदिक देशों में रूरप और जापान ॥ जगत० ३ ॥ गुरुकुल में सन्तान पढ़ाओ छोड़ो मोह की बान । सच्चे माता पिता कहलाओ दो गुरुकुल

को दान ॥ जगत्०४ ॥ तुम्हरे हित ऋषि अर्पण कर गये तन मन धन अरु प्राण । छज्जू कहे चेतोरे भाइयो उठो ऋषि सन्तान ॥ जगत्०५ ॥

दादरा ॥ ६५ ॥

मेरा वैदिक फुलवरिया को मन तरसै ।

अंगों की सड़कें उपअंगों की रविशें । उपनिषदों की क्यारी में गुल बरसै ॥ मेरा० १ ॥ कर्म उपासना ज्ञान ध्यान जहां, वहां जाने को विनती करूं हर से ॥ मेरा० २ ॥ यज्ञ हवन से हो पवन सुगन्धित, सींचे जइयो भक्ति जल से मेरा० ३ ॥ पुराणों ने काटों की बाढ़ लगाई, मैं जाने न पाया इन्हीं के डर से ॥ मेरा० ४ ॥

भजन ॥ ६६ ॥

मत छोड़ो वैदिक धर्म,

प्राण तक देदेना मंजूर ।

ये अपना प्यारा धर्म और को त्याग करो झट दूर ॥ एक हुआ हक़ीकत लड़का, नहीं रखा कोई जिन धड़का । नहीं अपने धर्म से सरका, सीस कटवाना किया मंजूर ॥ १ ॥ कहा उसने अन्त है मरना, फिर क्यों मरने से डरना । कहना वेदों का करना, लिखा जो श्रुतियों में दस्तूर ॥ २ ॥ सर तेग बहादुर दीना, नहीं हुये धर्म से हीना । सुन फट जाता है सीना, कहां गए विक्रम जैसे शूर ॥ ३ ॥ कहै दौलत वर्मा भाई, तजो काम क्रोध कुटिलाई । ये क्या तेरे दिल में समाई, धन से क्यों होते मग़रूर ॥ ४ ॥

ग़ज़ल ॥ ६७ ॥

सोचियो अबतो कि आगे कैसी नारी तुम में थीं । सीता दमयन्ती गार्गी लीलावती सी

तुम में थीं ॥ विद्योत्तमा मन्दालसा मन्दोदरी और मैत्रेई । ज्ञान धन से पूर्ण थीं वह धर्मधारी तुम में थीं ॥ दुःख है अब तो कि बिल्कुल विद्या तुम नहीं सीखतीं । भोज की नारी गणित में कैसी भारी तुम में थीं ॥ होके मूरख तुमने छोड़ा है जो पति क व्रत को । पूजती फिरती हो कबरें हाय कैसी तुम में थीं ॥ अब भी चेतो प्यारी बहनों नींद कैसी सोरहीं । वेदमारग पर चलो तुम पहले जैसी तुम में थीं ॥ पाठशाला लड़कियों की जारी करदो हर जगह । पढ़के विद्या फिर बनो तुम विदुषी जैसी तुम में थीं ॥ है सदा ईश्वर से बाबू अबतो येही आर्ज़ू । फिर से हो जैसी यहां पर नामधारी तुम में थीं ॥

भजन ॥ ६८ ॥

टेक–बहनोरी करलो सच्चा श्रृंगार ।

जिस श्रृंगार से प्रभु मिल जावे, सबके प्राण अधार । जिस भूषण में होवे न दूषण करलो उसी से प्यार ॥ बहनो० १ ॥ सच्चा भूषण वो है विद्या, लूटै न चोर चकार । ना वह टूटै ना वह घिसती, जिसका लगै नहीं भार ॥ बहनो० २ ॥ पति के प्रेम की माला पहनो सेवा समझलो हार । धर्म की चार्चा चूड़ी समझलो आरसी तत्व विचार ॥ बहनो० ३ ॥ पति आज्ञा को नथ यक समझो, भक्ति को कंकण जान । व्याह से प्रथम हंसली सो हसली, शीलको हसली मान ॥ बहनो० ४ ॥ दया धर्म दो झुमके बनालो, टीका पर उपकार । लौंग बुलाक है घर की सेवा, गहना यह क़ीमतदार बह० ५ ॥

होय विछोवा ना सन्ध्या का यह विछवा दर्कार । विद्या धर्ममें कीर्ति होवे, झांझन की झनकार ॥ बहनो० ६ ॥ बन्दी बन्दना कर स्वामी की, ज्ञान का सुरमा डार । मुकुन्द कहै सब सुख से रहोगी, मान करै संसार ॥ बहनो० ७ ॥

दादरा ॥ ६६ ॥

भय खैहौ तो कैसे धर्म रहै ।

काहु के भय से धर्म जो तजिहौ, ईश्वर के सन्मुख कहा कैहौ ॥ १ ॥ ईश्वर की आज्ञा धर्म है माई, ईश्वर से लड़के कहां रैहौ ॥ २ ॥ एक हाथ लेना एक हाथ देना, जो करोगे सोई पैहौ ॥ ३ ॥ पाप विपत की जड़ है माई, करिहौ पाप तो दुख सैहौ ॥ ४ शीतलप्रसाद का कहना अनोखो, मानोगे नाहीं तो पछितैहौ ॥५॥

भजन ॥ ७० ॥

ब्रह्मचारी जगत में आवैं तो बेड़ा पार हो।

पाप और ताप और पन्थों के जाल को तोड़ डालें। तो बेड़ा० ॥ देखो हाहा ! अविद्या पापों का यहां पर जोर है। पापों का जोर है दुखों का शोर है ॥ आवैं तो० १ ॥ झूठे चले जो पन्थ हजारों इसी जगत में। पन्थों ने डाले रोले कोई न सच्ची बोले ॥ आ० २ ॥ कैसे अर्जुन और भीषम योधा हुये यहां भारी। अर्जुन से योधा भारी, भीषम से तपधारी ३ कैसे गौतम कणाद और व्यास हुये यहां दाना ऐसे दिमाग होवे, भारत के दाग धोवे ४ छोड़ो झूठी मुहब्बत भेजो तुम बच्चे गुरुकुल। जीत काम और क्रोध को लोभ और मोह को ५ मारा लक्ष्मण से ही ब्रह्मचारी ने योधा मेघनाद।

जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी विद्वान परोपकारी॥ आवैं तो० ६॥ समय आया है अब तो दान करो सब भाइयो। हिम्मत से दान करो मुश्किल आसान करो॥ आवैं तो० ७॥

गज़ल॥ ७१॥

अजब हिकमत से मालिक ने करी यह रेल जारी है। लगाकर पांव के पहिये चलाई तन की गाड़ी है॥ बनाकर बल के अंजन को भरा फिर अग्नि व पानी। यही गर्मी व सर्दी है जो अन्दर तनके सारी है॥ ड्राइवर दिल बना करके बनाया गार्ड आंखों को। खबर देने को हरदम ही रगों का तार जारी है॥ बनी यह पुरुष बानी है बजाये कूक इञ्जन के। लगी बुद्धी की घण्टी है यह विद्या सीटी प्यारी है॥

सफ़र चलता ज़माना है स्टेशन खास दुनियां है। मुसाफिर तन में जो बोले वही करता सवारी है॥ बुरे अच्छे हैं दर्म्यानी यह दर्जे तीन कर्मों के। टिकट दे कर्म के मुआफ़िक वही जो जातबारी है॥ अगर इच्छा किस्म अव्वल में है आराम पाने की। तो बाबू भक्ति हरि कीजे दया जिसकी कि सारी है॥

भजन ॥ ७२ ॥

भारत वर्ष से रे अबतो बाल बिवाह उठाओ।

बाल बिवाह ने आर्यवर्त का कर दिया सत्यानाश। बल वीर्य पुरुषार्थहीन कर, मेटी सुख की आश॥ भारत० १॥ पांच साल की करोड़ों कन्या रुदन करें बिलखाय। पति का अर्थ न जानें बेसुध किया ग़जब क्या हाय॥

भारत० ॥ लाखों कन्या होकर विधवा गर्भ को रहीं गिराय। लाखों कन्या बनगईं वैश्या कुल को दाग लगाय ॥ भारत० ३ ॥ अष्टवर्षा भवेद् गौरी किया ये जग प्रचार। लीन किया सब धर्म सनातन फैलाया व्यभिचार। भारत० ४ ॥ युवा आयु में वर कन्या का भाइयो रचो बिवाह। तुलसीराम वह गृहस्थाश्रम में अपना करें निबाह ॥ भारत० ५ ॥

दादरा ॥ ७३ ॥

वे नर पशू समान, जिनमें धर्म ना।

भोजन करते हैं सब जन्तु, धारन किये जो प्रान। जि०१॥ नींद पशू जगमें सब सोवें, देखो तो धरके ध्यान ॥ जिन० २ ॥ प्राण बचावन को सब प्राणी, धरते हैं समय पर ध्यान ॥ जिन० ३ ॥ मैथुन भी सब जीव जगत के,

करते समय पर आनि ॥ जिन० ४ ॥ परदेशी कहे मनुष्य वही है, करें धर्म हरआन ॥ जि०५॥

भजन ॥ ७४ ॥

पीते जइयो जी महाशय प्याला प्रेम प्रेम का । नहीं है स्वांग तमाशा मित्रो ये थेटर। वहां तो बजता है नक्कारा सच्चे वेद धर्म का ॥ पीते०१ ॥ नहीं यहां कुछ धोका नहीं यहां लालच । सब को रोशन करके यह तो एक नियम प्रेम का ॥पीते०२॥ सीधा रास्ता बताया दयानन्द ने आकर । यश क्यों कर न गावें उस के सच्चे प्रेम का ॥ पीते०३ ॥ सब सज्जनों से कहता प्रेमी हाथ जोड़ कर । तुम भी पालन करलो आकर ऐसे सच्चे नियम का ॥ पीते० ४ ॥

भजन ॥ ७५ ॥

बहनो है फ़रियाद सुनियो ज़रा हमारी। जब तुम से पढ़ना आवे । जैसे यह नीति सिखावे । तभी सुधरे औलाद ॥ सु० १ ॥ तुम नहीं व्यवहार को जानों । बरताव नहीं पहिचानों । तभी होता है विवाद ॥ सु० २ ॥ तुम सदा दुखी रहती हो। मालूम है क्यों सहती हो। अविद्या को फिसाद ॥ सु० ३ ॥ विद्या ही दुःख मिटावे । मन माना नर सुख पावे । करो तन मन से याद ॥ सु० ४ ॥

ग़ज़ल ॥ ७६ ॥

प्रभु की भक्ति करने में अरे मन क्यों अटकता है। हितू तेरा जो है प्यारे उसी से तू फड़कता है ॥ सफ़ा रस्ते को जब तज के फिरे जंगल में है मारा । तभी तो दुख का नित

कांटा तेरे मन में खटकता है ॥ सिवा उस की शरण पकड़े नहीं आराम मिलने का। दया दृष्टी से उस के ही नहीं कोई भटकता है ॥ मना दुष्कर्म को स्वामी करे घट बीच है सब के। कोई माने न माने मगर दिल तो धड़कता है ॥ करो मत देर कारज में धरम के छोड़ आलस को। यह बाबू धीरे २ ही समय जाता सटकता है ॥

भजन ॥ ७७ ॥

टेक—जीना दिन चार का रे, मन मूरख फिरे मस्ताना ॥ मंदर महल अटारी मांड़ी नकदी माल खजाना। जिस दिन कूच करेगा मूरख सब कुछ हो बेगाना ॥ जीना० १ ॥ कौड़ी कौड़ी लाखों जोड़ी बन बैठा धनवान। साथ न जावे फूटी कौड़ी निकल जावे जब प्राण ॥

जीना० २ ॥ अपने आपको बड़ा जानकर क्यों करता अभिमान । तेरे ऐसे लाखों चले गये तू किसका महिमान ॥ जीना० ३ ॥ राम गये और रावण चले गये बाली और हनुमान । राजा दुर्योधन और युधिष्टिर भीमसेन बलवान ॥ जीना० ४ ॥ मान ले शिक्षा खन्ना दास की जो चाहे कल्याण । पर स्वारथ और नित्यकर्म करदे अनाथों का दान ॥ जीना० ५ ॥

ठुमरी ॥ ७८ ॥

बड़ा पापी कुटिल है मेरा मना ।

इस मनमें कुछ ज्ञान न आवे, पाप एक से एक घना ॥बड़ा०१॥ लोभ मोह में फंसी हुई हूं, भूल गई प्रभु का जपना ॥ बड़ा०२ ॥ धन कुटुम्ब ये हैं मतवारी, साथ न देवे एक जना ॥

बड़ा० ३ ॥ प्रियम्बदा की निशदिन बिनती, शुद्ध करो प्रभु मेरो मना ॥ बड़ा० ४ ॥

भजन ॥ ७६ ॥

है चन्दरोज़ मिनट का ख्वाब रे इस टूटी सी खटिया पै ॥ पार हुआ चाहै तो प्यारे जल्द शरण ईश्वर की आरे । सत्य रूप बल्ली के सहारे लेचल अपनी नाव रे । शुभ कर्म्मों को बटिया पै ॥ इस० १ ॥ ऐ मूरख मतिमन्द मुसाफिर मृग तृष्णा में धोखा खाकर । इस सुषुप्त हालत में आकर क्यों देता है पांवरे । इस पाप रूप गठिया पै ॥ इस० २ ॥ ऐ मूरख उठ धर्म कमाले परम कृपाल के गुण तू गाले । वृथा समय जाता मतवाले लोहे कासा तावरे । इस धोखे की टटिया पै ॥ इस० ३ ॥ क्यों नींद गहरी में

सोवे तू वृथा उमर अपनी खोवे तू । तेजसिंह क्यों नहिं धोवे तू अपने खोटे घावरे । इस ज्ञान रूप पटिया पै ॥ इस० ४ ॥

भजन ॥ ८० ॥

इसकाल बली से बाज़ी,
बली तो सब हारगये ३ ॥

जितना परिवार तुम्हारा, कोई संग न चलने हारा । गये सब अन्त में कर किनारा, न संग में सुत यारगये ३ ॥ इस० १ ॥ जिन मारा न पापी मन को, नहीं दिया धर्म में धन को । तो फ़िज़ूल इस नर तन को, जगत में योंही धारगये ३ ॥ इस० २ ॥ यहां लाखों ही ज़ालिम आके, गये लाखों वह दुख पहुँचाके । गये वह भी अन्त दुख पाके, जो लाखों को मारगये ३ ॥ इस० ३ ॥ जो धर्म से प्रीति

लगावे, पग अधर्म में न बढ़ावे। पद तेजासिंह कथगावे, वही तो जन पारगये ३॥ इस०४॥

ग़ज़ल ॥ ८१ ॥

किसे देख दिल तू हुआ है दिवाना। नहीं तेरी इस जिन्दगी का ठिकाना ॥१॥ हजारों शहंशाह हुये इस जमीं पर। गये कूच कर जिनको जाते न जाना ॥ २ ॥ जो पैदा है नापैद होगा वह एक दिन। फरा सो झरा और बरा सो बुताना ॥ ३ ॥ धरम एक हमराह केवल चलेगा। रहेगा यहीं पर पड़ा सब खज़ाना ॥ ४ ॥ है धोखे की टट्टी जहां में पुरन्दर। समझ के चलो मुल्क है यह बिगाना॥ ५ ॥ करो याद उसकी जो मालिक जहां का। उसी की दया से मिटे आना जाना ॥ ६ ॥

भजन ॥ ८२ ॥

टेक--एक दिन सबको खाया है, इस काल ने दुनिया में ॥ ज़रा आंखें तो खोल अभिमानी, क्यों पड़ा बुद्धि पर पानी। मत काम करे शैतानी, समझ मन क्यों गर्वाया है। एक० १ ॥ चाहे राजा हो चाहे बलधारी, चाहे निर्बल हो चाहे भिखारी। चले अपनी अपनी बारी, बार जिस किसी का आया है ॥ एक० २ ॥ देख डाक्टर व वैद्य बिचारे लुकमान आदि हुकमाये सारे। पढ़त तिब्ब अकबर से हारे, मौत का नुसख़ा न पाया है ॥ एक० ३ ॥ चले काल चक्र की आरी कटती जाय आयु सारी। कुछ मन में समझ अनारी, तेजसिंह ने छन्द गाया है ॥ एक० ४ ॥

दादरा ॥ ८३ ॥

कोई दम का यहां है बसेरारे ।

जिस घर को तू अपना जाने, यह नहीं है तेरारे ॥ को० १ ॥ बड़े २ राजा बीर और योधा, कर गये यहां पर डेरारे ॥ को० २ ॥ काल बली ने एक दिन सब को आकर यहां से खदेरारे ॥ को० ३ ॥ विषय भोग में फंस मन मूरख, ईश्वर से मुँह मोड़ारे ॥ को० ४ ॥ ना जाने कब आवे बुलावा, करले काम सबेरारे ॥ को०५ ॥ करले जीवरे धर्म कमाई, क्यों आलस ने घेरारे ॥ को० ६ ॥ सालिगराम ईश को जपले, पार होय तेरा बेड़ारे । को० ७ ॥

दादरा ॥ ८४ ॥

दम आवे न आवे अजब क्या है ।

झूठे झमेला का मेला लगा है। सांचा ना सूझे सबब क्या है ॥ दम० १ ॥ आना बदा तो जाना पड़ेगा, ईश्वर का इस में ग़ज़ब क्या है ॥ दम० २ ॥ विषयों को भोगे भलाई को भूले, हरामी को हर का अदब क्या है ॥ दम० ३ ॥ रोटी से राजी नहीं तु शंकर, बता तेरी, पाजी तलब क्या है ॥ दम०४ ॥

दादरा ॥ ८९ ॥

भारत में छायरही काली घटा।

बादल अविद्या के चढ़ि आये, वेदों के सूरज को दीना हटा ॥ १ ॥ दान पुण्य में देते न कौड़ी, रण्डी नचाने में सब धन लुटा ॥ २ ॥ अच्छी कथाओं से दूर २ भागे, रंडी के चकले में निश दिन डटा ॥ ३ ॥ अन्तिम

विनय यह तुम से है प्यारो, वेदों का पकड़ो प्यारो पटा ॥ ४ ॥

भजन ॥ ८६ ॥

बहे नयनों से नीर सुनकर ये दुखड़ा तुम्हारा ॥ तुम क्यों अधीर होती हो, क्यों बार बार रोती हो। क्यों अंसुवन मुख धोती हो, क्यों तर करती हो चीर ॥ सुनकर० ॥ ये हैं शब्द जितने तुम्हारे, नहीं जाते हैं हम से सहारे बन बाणी तुम्हारी का म्हारे, हिये में खटके तीर ॥ सुन० ॥ बेशक हमने अन्याय किया, नाश है मुल्क अपने का लिया, दशा देखें तो कांपे है हिया कलेजे उठती पीर ॥ सुन० ॥ अब यही है कोशिश हमारी, कन्या पाठशाला हों जारी, कुछ खुल गई कुछ खुलने की त्यारी, बंधालो अबतो धीर ॥ सुन० ॥ जिसने आज

यह दिन दिखाया, कन्या दुःख पर है ध्यान दिलाया, पद तेजसिंहने गाया धन्य स्वामी को अखीर ॥ सुन० ॥

गज़ल ॥ ८७ ॥

अरे रावण तू धमकी दिखावे किसे, मुझे मरने का खौफ वो खतर ही नहीं। मुझे मारेगा क्या अपनी खैर मना, तुझे होनी की अपनी खबर ही नहीं। क्या तू सोने की लंका का मान करे, मेरे आगे वो मिट्टी का घर ही नहीं। मेरे मनका सुमेरु डिगैगा नहीं, मेरे दिल में किसी का तो डर ही नहीं। आवें इन्द्र नरेन्द्र जो मिलके सभी, क्या मजाल जो शील को मेरे हरें। तेरी हस्ती है क्या सिवा राम पिया, मेरी नजरों में कोई बशर ही नहीं। तूने सहस्र अठारह जो रानी बरीं, हाय इस पर भी तुझ

को खबरही नहीं ॥ परत्रिया पै जो तूने ध्यान दिया, क्या नरक का तुझे कुछ खतर ही नहीं। मेरी चाह जो थी तेरे दिल में बसी क्यों न जीत स्वयम्बर तू लाया मुझे। तू था कौन शहर मुझे दे तू बता, जहां स्वयम्बर की पहुंची खबरही नहीं॥ जो हुआ सो हुआ अबभी मान कहा मुझे राम पै जल्दी से दे तू पठा। कह सीता वगर्ने तू देखेगा क्या, चंद रोज में अब तेरा सिर ही नहीं।

भजन ॥ ८८ ॥

सुनो री ! बहना, बहना २ ! धरो धीरज न हमें रुलाओ। यह सुनकर के दुखड़ा तुम्हारा कांपे है शरीर यह सारा। दुखी हुआ है हृदय हमारा, भरे नैना ३ ॥ सुनोरी०१ ॥ हमने जब से यह नियम तोड़ा, पुत्रियों का पढ़ाना

छोड़ा । हमने अपने हाथों फोड़ा, अपना लहना ३ ॥ सुनोरी० २ ॥ हम पुत्री पाठशाला बनायेंगे, उस में पुत्रियों को पढ़ायेंगे । जब थोड़ी सी फुर्सत पायँगे, फुर्सत देना ३ ॥ सुनो० ३ ॥ पद तेजसिंह ने गाया, तुमने अति दुःख पाया बस वही जमाना आया, सुख से रहना ३ ॥ सुनो०४ ॥

भजन ॥ ८९ ॥

देखो अनाथ यहां आये, हमें तो निराश न करो।

निराश न करो, निराश न करो । तुम्हरी शरण में आये ॥ हमें० १ ॥ हा ! हमारी माता ने, माता ने । भूख में गोदी से गिराये ॥ हमें० २ ॥ हा ! वे कैसी रोती थीं, रोती थीं । अन्न के रूख न पाये ॥ हमें० ३ ॥ हा ! कि उस

समय पेड़ों के, पेड़ों के । छाल और पत्ते चबाये ॥ हमें० ४ ॥ हा ! कि बिपता पापिनी ने, पापिनी ने । पानी बिना तड़पाये ॥ हमें० ५॥ हा ! कि संवत छप्पनने, छप्पनने । दर २ भी हमें मंगाये ॥ हमें० ६ ॥ हा ! कि हम हैं सब बच्चे, सब बच्चे । उच्च कुलों के जाये ॥ हमें० ७ ॥ हो, कि दाता धर्म करो, धर्म करो । पाठक रो रो सुनाये ॥ हमें० ८ ॥

दादरा ॥ ९० ॥

कैसा बिगड़ा है भारत हमारा जी ।

कभी तो भारत बड़ा हुआ था सबका था सरताज । आज पड़ा मुर्दा हालत में हो रही हा हा कार ॥ हाय २ करके ये भारत पुकारा जी ॥ कैसा० १ ॥ कभी तो ऐसा हुक्म

चले था सब थे ताबेदार। आपस में लड़ लड़के मित्रो खो दिया सब घरबार ॥ खोया लड़ने में घरबार तुम्हारा जी ॥ कैसा० २ ॥ कभी तो यज्ञहवन होते थे वायु का सुधार आज देखलो गली २ में सुलफे की धुंदकार। सुलफा तुम को है प्राणों से प्यारा जी ॥ कैसा० ३ ॥ अफीम चर्स गांजा और ताड़ी ये सब नशा खराब। कहे सुखलाल मानलो कहना मतना पियो शराब ॥ बुरे कर्मों से करलो किनारा जी ॥ कैसा० ४ ॥

भजन ॥ ६१ ॥

जन्म सफल कर लीजिये औसर न बिसारो।

कर सतसंग कुसंगति त्यागो, सुमति सुधा-रस पीजिये ॥ औ० १ ॥ दीन अनाथन को अपनाओ, सूरन को सुख दीजिये ॥ औ० २ ॥

परम रंक भिक्षुक भारत यह, प्रेम पसार पसीजिये ॥ ओं० ३ ॥ हिलमिल शंकर के गुन गावो, बाद विवाद न कीजिये ॥ ओं० ४ ॥

दादरा ॥ ६२ ॥

टेक—भूला डोले जगत में प्राणी ।

मेरी २ करत फिरत मुखबाये । सुत कुटुम्ब सम्पति रजधानी ॥ भू० १ ॥ तृष्णा नदी में बहता फिरता । निज कर्तव्य की बात भुलानी ॥ भू० २॥ न्याय अन्याय कछु नहिं जानै । करत फिरत पापी मन मानी ॥ भू० ३ ॥ अपना धर्म नहीं पहचानत । निशदिन काम करै शैतानी ॥ भू० ४ ॥ समझाये भी समझत नाहीं । होगी पीछे बहुत हैरानी ॥ भू० ५ ॥ हटत नहीं बलदेव बदी से । जग में तेरी तनिक ज़िन्दगानी ॥ भू० ६ ॥

भजन ॥ ६३ ॥

टेक—मेरी बहनों खोलो आंख नींद क्यों नैनन में छाई ॥ सीता रुक्मिणी कुन्ती प्यारी, मन्दोदरी अहिल्या नारी । विद्योत्तमा द्रौपदी सारी, भई अमित ख्यांई ॥ मेरी० १ ॥ लीला-वती भोज की रानी, जिसकी महिमा जाय न जानी । कैसी बड़ी गणितज्ञ बखानी, चकित कविराई ॥ मेरी० २ ॥ विद्याधरी गार्गी तारा, ऋषिपत्नी बहु जगत मँझारा । जिन का गावे यश संसारा, सुन सुन पण्डिताई ॥ मेरी० ३ ॥ पढ़ देखो इतिहास पुरानी, राज-काज में निपुण बखानी । रामकान्त की प्यारी रानी, अहिल्याबाई ॥ मेरी० ४ ॥ ऐसी बहुत हुई हैं नारी, चौदह विद्या पढ़तीं सारी । पाठक कहे कहँ बुद्धि तुम्हारी, पढ़लो चित लाई ॥ मेरी० ५ ॥

ठुमरी ॥ ६४ ॥

ओंकार भजो, अहंकार तजो अबही समझो जो भई सो भई ॥ अभिमान गुमान तजो मनसे, मग़रूर रहो मत यौवन से। उपकार करो तन मन धन से जो गई सो गई जो रही सो रही ॥ १ ॥ दुख देख दुखिन पर छोह करो, और दीनन से मत द्रोह करो। पर धन त्रिय देख न मोह करो, अजहूं सुधरो जो भई सो भई ॥ २ ॥ श्रद्धा सत्कार के फूल चुनो, पाखण्ड घमण्ड के फूल खनो। उपदेश सुनो तुम आर्य बनो, अब लो विष बेल बई सो बई ॥ ३ ॥ धन धाम को पाय न मान करो, अज्ञान तजो और ज्ञान करो। यह विनती हजारी की कान करो, जो वैसे व्यर्थ गई सो गई ॥ ४ ॥

भजन ॥ ९५ ॥

प्रभु से प्रीति लगाओ जी, ऐसा समय न पाओ। जिसने रचा है ये भूमण्डल, उसको घट में बसाओ जी ॥ ऐसा० १ ॥ चकित हो लखि जिसकी रचना, उसही के गुण गाओ जी ॥ ऐसा० २ ॥ देश हितैषी समाज हितैषी सबही मिलकर आओ जी ॥ ऐसा० ३ ॥ निश्चल हो आडम्बर छोड़ो, सत्य में प्रीति बढ़ाओ जी ॥ ऐ० ४ ॥ ता ता धिन २ ता थेइया में, मत ना समय गँवाओ जी ॥ ऐसा० ५ ॥ सब जग को सम दृष्टि से देखो, धर्म का लाभ उठाओ जी ॥ ऐ० ६ ॥ देश की भक्ति व वेदों की, इनकी ध्वजा फहराओ जी ॥ ऐ० ७ ॥ अमली जीवन अपना सँवारो, पाठक जो लखा पाओजी ॥ ऐ० ८ ॥

भजन ॥ ६६ ॥

दो०-दीनबन्धु दायानिधि सुनिये विन्ती मोर।
कोई सहाय न दीखता, आया शरण मैं तोर ॥

प्रभु हूजे दयाल, दया कीजे कृपाल, दीजे दुःखों को टाल, अब हे स्वामी २ ॥ टेक ॥ कीजे भक्ति का दान, होवे जिससे कल्यान, चले सन्तों में मान ॥ अब० १ ॥ होवे विद्या प्रचार, जिसमें जगका सुधार, वही सुक्खों का सार ॥ अब हे स्वामी २ ॥ बुरे कर्मों की छूट, शुभ कर्मों की लूट, करें प्रीति अटूट ॥अब०३॥ पड़ा बुद्धि में फेर, किया पापों ने ढेर । करी तुझ से ही टेर ॥ अब० ४ ॥ तारे गौतम कनादि तैंने ऋषि कपिल आदि, किया तुझको ही याद ॥ अब० ५ ॥ तुझमें दाया अपार, दीजे पातक को टार, लीजे बाबू उबार ॥ अ० ६ ॥

गज़ल ॥ ९७ ॥

हमें धन्यबाद मिला गाना महासुख है महासुख है। प्रभुपद प्रीति का लाना, महासुख है महासुख है ॥ १ ॥ करें हम शुक्र अब उसका दिया है जिसने नर तनको । कि जिस से ब्रह्म भक्ति हो, महासुख है महासुख है ॥२॥ यह पृथ्वी सूर्य्य और वायु, किये प्रकट हमारे अर्थ। कि जीवन जिन से है माना, महासुख है महासुख है ॥ ३ ॥ किया आरोग्य है तन को, दिया है जन्म भारत में । सदा सुख शान्ति को पाना, महासुख है महासुख है ॥४॥ समय है राज न्याई का, करें हैं धर्म्म की चर्चा। हो जिससे धर्म बढ़ जाना, महासुख है महासुख है ॥ ५ ॥ है उन्नति विद्या की यारो, हमें देती दिखाई अब। अविद्या दुख से

छूट जाना, महासुख है० ॥ ६ ॥ कहां ताक़त जो शुक्र ईश्वर, करें मुख से अदा अपने। जो कुछ बाबू हो गुन गाना, महा सुख है महा सुख है ॥ ७ ॥

गज़ल ॥ ९८ ॥

पिता तेरा है वह ईश्वर उसी को याद कर प्राणी, हवन सुन्दर रच्यो घर २ उसी को जान अभिमानी ॥१॥ जो घी अग्नि में जलता है, जहर को दूर करता है। मर्ज़ ताऊन हरता है, वही है वेद की वाणी ॥ २ ॥ पड़ी कस्तूरी और केसर, महक छाई है घर घर में। चलो वेदों की आज्ञा पर, नहीं होगी बहुत हानी ॥ ३ ॥ कहै पाठक, जो सुख चाहो, यही है यज्ञ सुख खानी ॥४॥

भजन ॥ ९९ ॥

जपो मुख से ओंकार हो कल्याण तुम्हारा। बिषयों में उमर गमाई, लई माला बुढ़ापे में आई। जपै ग़ैरों को गँवार, ओ३म् का छोड़ा सहारा ॥ जपै राम कृष्ण सिय राधा, वेदों की छोड़ मर्य्यादा। न समझा सार असार, जीत के बाज़ी हारा ॥ मनुस्मृति पै ध्यान दीजे, लख दूसरी अध्याय लीजै। इक्यासी श्लोक बिचार, फिर क्यों किया किनारा ॥ ईश उप-निषद को खोलो, पन्द्रहवां मन्त्र टटोलो। तेजसिंह कहै पुकार, होगा तभी गुजारा ॥

भजन ॥ १०० ॥

जिसमें तेरा नहीं विकास, ऐसा कोई फूल नहीं है ॥ टेक ॥ मैंने देख लिया सब ठौर, तुझ सा मिला न कोई और। सब का तुही

एक शिरमौर, इसमें कुछ भी भूल नहीं है ॥१॥ तुझ से मिलकर करुणानन्द, मुनिवर पाते हैं आनन्द । तेरा प्रेम सच्चिदानन्द, किस को मंगल मूल नहीं है ॥ २ ॥ उर धर धर्म जीवनाधार, गुरु जन कहें पुकार पुकार । उसका बेड़ा होजाय पार, जिसके तू प्रतिकूल नहीं है ॥ ३ ॥ तेरे गाय २ गुण ग्राम, करनी करता है निष्काम । मन में है शंकर सुखधाम, मेरे एक संशय शूल नहीं है ॥४॥

आरती ॥ १०१ ॥

ओं जय ईश्वर स्वामी, पिता जय ईश्वर स्वामी, हो रक्षक जग के और अन्तरयामी ॥ ओं जय० ॥ अति आतुर हुए शरण गही तेरी, पिता शरण० । नहीं कोई देख पड़े, जो सहाय, करे मेरी ॥ ओं० ॥ हम सब नित उठि

पातक बहुत करें, पिता पातक०। बिना ज्ञान दिये तुमरे, कहो कैसे नाथ टरें ॥ ओं० ॥ हो राजा सबके, तुम न्याय के करता, पिता तुम० आरत देख उबारो, हे दुख के हरता। ।ओं०। नित २ प्रीति बढ़ै और भजन करैं तेरो, पिता भजन० ईर्षा द्वेष न होवे चित्त शान्त रहे मेरो॥ ओं० ॥ ईश्वर जपकर सब चाल चलें ऋषि पन की पिता० परधन पर दारा तज, चाह तजें विषयन की ॥ ओं० ॥ धन सम्पति सब होवे ज्ञान की राह गहें, पिता०। कर्म करें सब नीके, पाप न एको नाथ करें ॥ ओं० ॥ हे दुख भजन संकट मोचन, हे सुखदाता, पिता०। दान चहे भक्ती का बाबू, रहे निश दिन गुनगाता ॥ ओं० ॥

॥ इति ॥